॥ भूमिका ॥

मैं पाठकों को इस काशी के शास्त्रार्थ का (जो कि संवत् १९२६ मि० कार्त्तिक सुदि १२ मंगलवार के दिन "स्वामी दयानन्द सरस्वती" जी का काशीस्थ "स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती" तथा "बालशास्त्री" आदि पण्डितों के साथ हुआथा) तात्पर्य सहज में प्रकाशित होने के लिये विदित करता हूं इस संवाद में स्वामी जी का पक्ष पाषाण-मूर्त्तिपूजनादिखंडनविषय और काशीवासी पंडित जनों का मंडन विषय था उन को वेदप्रमाण से मंडन करना उचित था सो कुछ भी न कर सके क्योंकि जो कोई भी पाषाणादिमूर्त्तिपूजनादि में वैदिक प्रमाण होता तो क्यों न कहते और स्वपक्ष को वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किये बिना वेदों को छोड़ कर अन्य मनुस्मृति आदि ग्रन्थ वेदों के अनुकूल हैं वा नहीं इस प्रकरणान्तर में जा गिरते क्यों कि जो पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ के प्रकरणान्तर में जाना है वही पराजय का स्थान है ऐसे हुए पश्चात् भी जिस २ ग्रंथान्तर में से जो २ पुराण आदि शब्दों से ब्रह्मवैवर्त्तादि ग्रंथों को सिद्ध करने लगे थे सो भी सिद्ध न कर सके पश्चात् प्रतिमा शब्द से मूर्त्तिपूजा को सिद्ध करना चाहा था वह भी न हो सका पुनः पुराण शब्द विशेष्य वा विशेषण वाची है इस में स्वामीजी का पक्ष विशेषणवाची और काशीस्थ पंडितों का पक्ष विशेष्यवाची सिद्ध करना था। इस में बहुत इधर उधर के वचन बोले परन्तु सर्वत्र स्वामी जी ने विशेषणवाची पुराण शब्द को सिद्ध कर दिया और काशीस्थ पंडित लोग विशेष्यवाची सिद्ध नहीं कर सके। सो आप लोग देखिये कि शास्त्रार्थ को इन बातों से क्या ठीक २ विदित होता है

और भी देखने की बात है कि जब माधवाचार्य्य दो पत्रे निकाल के सब के सामने पटक के बोले थे कि यहां पुराण शब्द किस का विशेषण है उस पर स्वामी जी ने उस को विशेषण वाची सिद्ध कर दिया परन्तु काशीनिवासी पंडितों से कुछ भी न बन पड़ा। एक बड़ी शोचनीय यह बात उन्हों ने की जो किसी सभ्य मनुष्य के करने योग्य न थी कि ये लोग सभा में काशीराज महाराज और काशीस्थ विद्वानों के सन्मुख असभ्यता का वचन बोले। क्या स्वामी जी के कहने पर भी काशीराज आदि चुप होके बैठे रहें! और बुरे वचन बोलनेहारों को न रोकें क्या स्वामी जी का पांच मिनट दो पत्रों के देखने में लगा के प्रत्युत्तर देना विद्वानों की बात नहीं थी! और क्या सब से बुरी बात यह नहीं थी कि सब सभा के बीच ताली शब्द लड़कों के सदृश किया और ऐसे महा असभ्यता के व्यवहार करने में

कोई भी उस को रोकने वाला न हुआ ! और क्या एक दम हठ से चुप हो के बैठने से सत्य निश्चय जाना और क्या सभा में वा अन्यत्र झूठा हल्ला करना धार्मिक और विद्वानों के आचरण से विरुद्ध नहीं था ! यह तो हुआ सो हुआ परन्तु एक बड़ा खोटा काम उन्हीं ने और किया जो सभा के व्यवहार से अत्यन्त विरुद्ध है कि एक पुस्तक स्वामी जी की झूठी निन्दा के लिये काशीराज के छापे खाने में छपवा कर प्रसिद्ध किया और चाहा कि उन को बदनामी करें और करावें परन्तु इतनी झूठी चेष्टा किने पर भी स्वामी जी ने उन के कर्मों पर ध्यान न देकर उपेक्षा करके पुनरपि उन को वेदोक्त उपदेश प्रीति से आज तक बराबर करते ही जाते हैं और उक्त २६ के संवत् से लेके अब संवत् १९३० तक इसी प्रकार काशी जी में आके सदा विज्ञापन लगाते जाते हैं कि पुनरपि जो कुछ आप लोगों ने वैदिक प्रमाण या कोई युक्ति पाषाणादिमूर्त्तिपूजा आदि के सिद्ध करने के लिये पाई हो तो सभ्यतापूर्वक सभा करके फिर भी कुछ कहो वा सुनो इस पर भी कुछ नहीं करते । यह भी कितने निश्चय करने बात है परन्तु ठीक है कि जो कोई दृढ़ प्रमाण वा युक्ति काशीस्थ पंडित लोग पाते अथवा कहीं वेद-शास्त्र में प्रमाण होता तो क्या सन्मुख हो के अपने पक्ष को सिद्ध करने न लगते और स्वामी जी के सामने न होते ! इस से यही निश्चित सिद्धान्त जानना चाहिये कि जो इस विषय में स्वामी जी की बात है वही ठीक है और देखो स्वामी जी की यह बात संवत् १९२६ के विज्ञापन से भी कि जिस में सभा के होने के अनुकूल नियम छपवा के प्रसिद्ध किये थे सत्य ठहरती है । उस पर पंडित ताराचरण भट्टाचार्य ने अनर्थयुक्त विज्ञापन छपवा के प्रसिद्ध किया था उस पर स्वामी जी के अभिप्राय से युक्त दूसरा विज्ञापन उस के उत्तर में पंडित भीमसेन ने छपवा कर कि जिस में स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी और बालशास्त्री जी से शास्त्रार्थ होने की सूचना थी प्रसिद्ध किया था उस पर दोनों में से कोई एक भी शास्त्रार्थ करने में प्रवृत्त न हुआ क्या अब भी किसी को शंका रह सकती है कि जो २ स्वामी जी कहते हैं वह २ सत्य है वा नहीं किन्तु निश्चय करके जानना चाहिये कि स्वामी जी की सब बातें वेद और युक्ति के अनुकूल होने से सर्वथा सत्य ही हैं । और जहां छान्दोग्य उपनिषद् आदि स्वामी जी ने वेद नाम से कहा है वहां २ उन पंडितों के मत के अनुसार कहा है किन्तु ऐसा स्वामी जी का मत नहीं स्वामी जी मंत्र संहिताओं ही को वेद मानते हैं क्यों कि जो मंत्र संहिता हैं वे ईश्वरोक्त होने से निर्भ्रान्त सत्यार्थयुक्त हैं और ब्राह्मण ग्रन्थ जीवोक्त अर्थात् ऋषि मुनि आदि विद्वानों के कहे हैं वे भी प्रमाण तो हैं परन्तु वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और विरुद्धार्थ होने से अप्रमाण भी हो सकते हैं और मंत्र संहिता तो किसी के विरुद्धार्थ होने से अप्रमाण कभी नहीं हो सकती क्यों कि वे तो स्वतः प्रमाण हैं ॥

ओ३म्।

॥ अथ काशीस्थशास्त्रार्थः ॥

धर्माधर्मयोर्मध्ये शास्त्रार्थविचारो विदितो भवतु। एको दिग्.......

शास्त्रार्थविद्दयानन्दसरस्वती स्वामी गंगातटे विहरति स ऋग्वेदादिसत्य-शास्त्रेभ्यो निश्चयं कृत्वैवं वदति वेदेषु पाषाणादिमूर्तिपूजनविधानं शैवशाक्तगाणपतवैष्णवादिसंप्रदाया रुद्राक्षत्रिपुंड्रादिधारणं च नास्त्येव तस्मादेतत् सर्वं मिथ्यैवास्ति नाचरणीयं कदाचित् कुत एतत् वेदविरुद्धाप्रसिद्धाचरणे महत्पापं भवतीतीयं वेदादिषु मर्यादा लिखितास्त्येवं हरद्वारमारभ्य गंगातटे अन्यत्रापि यत्र कुत्र दयानन्दसरस्वती स्वामी खंडनं कुर्वन्सन् काशीमागत्य दुर्गाकुंडसमीप आनन्दारामे यदा स्थितिं कृतवान् तदा काशीनगरे महान् कोलाहलो जातः बहुभिः पंडितैः वेदादिपुस्तकानां मध्ये विचारः कृतः। परंतु क्वापि पाषाणादिमूर्त्तिपूजनादिविधानं न लब्धं प्रायेण बहूनां पाषाणपूजनादिष्वाग्रहो महानस्ति ततः काशीराजमहाराजेन बहून् पंडितानाहूय पृष्टं किं कर्तव्यमिति तदा सर्वैर्जनैर्निश्चयः कृतो येन केन प्रकारेण दयानन्दस्वामिना सह शास्त्रार्थं कृत्वा बहुकालात् प्रवृत्तस्याचारस्य स्थापनं यथा भवेत् तथा कर्त्तव्यमेवेति पुनः कार्तिकशुक्लद्वादश्यामेकोनविंशतिशतषड्विंशतितमे संवत्सरे १९२६ मंगलवासरे महाराजः काशीनरेशो बहुभिः पंडितैः सह शास्त्रार्थकरणार्थमानन्दारामं यत्र दयानन्दस्वामिना निवासः कृतः तत्रागतः। तदा दयानन्दस्वामिना महाराजं प्रत्युक्तम्। वेदानां पुस्तकान्यानीतानि नवा तदा महाराजेनोक्तम्। वेदाः पंडितानां कंठस्थाः संति किं प्रयोजनं पुस्तकानामिति तदा दयानन्दस्वामिनोक्तम् पुस्तकैर्विना पूर्वापरप्रकरणस्य यथावद्विचारस्तु न भवत्यस्तु तावत् पुस्तकानि नानीतानि तदा पंडितरघुनाथप्रसाद

कोलाहलेन नियमः कृतो दयानन्दस्वामिना सहैकैकः पंडितो वदतु न तु युगपदिति तदादौ ताराचरणनैयायिको विचाराय मुद्यतः तं प्रति स्वामिदयानन्देनोक्तं युष्माकं वेदानां प्रामाण्यं स्वीकृतमस्ति न वेति। तदा ताराचरणेनोक्तम् सर्वेषां वर्णाश्रमस्थानां वेदेषु प्रामाण्यस्वीकारोस्तीति तदा दयानंदस्वामिनोक्तम्। वेदे पाषाणादिमूर्ति पूजनस्य यत्र प्रमाणं भवे-त्तद्दर्शनीयं। नास्ति चेदिदं नास्तीति। तदा ताराचरणभट्टाचार्येणोक्तम्। वेदेषु प्रमाणमस्ति वा नास्ति परंतु वेदानामेव प्रामाण्यं नान्येषामिति यो ब्रूयात्तं प्रति किं वदेत्तदा स्वामिनोक्तम्। अन्यो विचारस्तु पश्चाद् भविष्यति वेदविचार एव मुख्योस्ति तस्मात्स एवादौ कर्त्तव्यः कुतो वेदोक्तकर्मैव मु-ख्यमस्त्यतः मनुस्मृत्यादीन्यपि वेदमूलानि संति तस्मात्तेषामपि प्रामाण्यम-स्ति न तु वेदविरुद्धानां वेदाप्रसिद्धानां चेति। तदा ताराचरणभट्टाचार्ये-णोक्तम्। मनुस्मृतेः क्वास्ति वेदमूलमिति। स्वामिनोक्तं। यद्वै किंचनमनु-रवदत्तद् भेषजं भेषजताया इति सामवेदे * तदा विशुद्धानंदस्वामिनोक्तम्। रचना-नुपपत्तेश्च नानुमानमित्यस्य व्याससूत्रस्य किं मूलमस्तीति। तदा स्वामि-नोक्तं एतस्य प्रकरणांतरस्योपरि विचारो न कर्त्तव्य इति पुनर्विशुद्धानंद-स्वामिनोक्तं वदैव त्वं यदि जानासीति। तदा दयानंदस्वामिना प्रकरणांतरे गमनं भविष्यतीति मत्वा नेदमुक्तम्। कदाचित् कण्ठस्थं यस्य न भवेत् स पुस्तकं दृष्ट्वा वदेदिति। तदा विशुद्धानंदस्वामिनोक्तम्। कंठस्थं नास्ति चेत शास्त्रार्थं कर्त्तुं कथमुद्यतः काशीनगरे चेति। तदा स्वामिनोक्तम्। भवतः सर्वं कंठस्थं वर्त्तत इति। तदा विशुद्धानंदस्वामिनोक्तं ममसर्वं कंठस्थं वर्त्तत इति तदा स्वामिनोक्तम्। धर्मस्य किं स्वरूपमिति। तदा विशुद्धानंदस्वामिनोक्तम् वेद-प्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति। स्वामिनोक्तम्। इदन्तु तव संस्कृतं नास्त्यस्य

* इदं पण्डितानामिव मतं गोकुलोत्तमनोनिदं स्वामिनः सन्निविशम्।

प्रामाण्यं कंठस्थां श्रुतिं स्मृतिं वा वदेति। तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम्। चोदनालक्षणोऽर्थोधर्म इति जैमिनिसूत्रमिति *तदा स्वामिनोक्तम् चोदना का चोदना नाम प्रेरणा तत्रापि श्रुतिर्वा स्मृतिर्वक्तव्या यत्र प्रेरणा भवेत्। तदा विशुद्धानन्दस्वामिना किमपि नोक्तम्। तदा स्वामिनोक्तमस्तु तावद्धर्मस्वरूपप्रतिपादिका श्रुतिर्वास्मृतिस्तु नोक्ता किंच धर्मस्य कति लक्षणानि भवंति वदतु भवानिति। तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तमेकमेव लक्षणं धर्मस्येति। तदा स्वामिनोक्तम् किंच तदिति। तदा विशुद्धानन्दस्वामिना किमपि नोक्तम्। तदा दयानन्दस्वामिनोक्तम्। धर्मस्य तु दश लक्षणानि सन्ति भवता कथमुक्तमेकमेवेति। तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् कानि तानि लक्षणानीति। तदा स्वामिनोक्तम्। धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिंद्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणमिति। मनुस्मृतेः श्लोकोऽस्ति †तदा बालशास्त्रिणोक्तम्। अहं सर्वं धर्म्मशास्त्रंपठितवानिति। तदा दयानन्दस्वामिनोक्तं त्वमधर्म्मस्यलक्षणानि वदेति। तदा बालशास्त्रिणा किमपिनोक्तं तदा बहुभिर्युगपत् पृष्टं प्रतिमा शब्दो वेदे नास्ति किमिति। तदा स्वामिनोक्तम् प्रतिमाशब्दस्त्वस्तीति तदा तैरुक्तं क्वास्तीति। तदा स्वमिनोक्तम् सामवेदस्य ब्राह्मणे चेति तदा तैरुक्तं किंच तद्वचनमिति तदास्वामिनोक्तम्। देवतायतनानि कंपंते दैवतप्रतिमा हसन्तीत्यादीति। तदा तैरुक्तम्। प्रतिमाशब्दस्तु वेदे ‡ वर्तते भवान् कथं खण्डनं करोति तदा स्वामिनोक्तम् प्रतिमाशब्देनैव पाषाणपूजनादेः प्रामाण्यं न भवति प्रतिमाशब्दस्यार्थः कर्त्तव्य इति ॥

* इदन्तु सूत्रमस्तिनेयं श्रुतिर्वा स्मृतिस्सर्वं मम कण्ठस्थमस्तीति प्रतिज्ञायेदानीं कण्ठस्थं नोच्यत इति प्रतिज्ञाहानिस्तस्य कुतो न पराजय इति वेद्यम्।

† अत्रापि तस्य प्रतिज्ञाहानेर्निग्रहस्थानं जातमिति बोध्यम्।

‡ अत्रापि तेषामवेदे ब्राह्मणग्रंथे वेदबुद्धित्वाद् भ्रान्तिरेवास्तीति वेद्यम्।

तदानीं रुक्तं यस्मिन्प्रकरणेऽयं मन्त्रोऽस्ति तस्य कोऽर्थ इति तदा स्वामिनोक्तम्
अद्भुतशान्तिं व्याख्यास्याम इत्युपक्रम्य तातारमिद्रमित्यादयस्तत्रैव
मन्त्रा उक्तास्ता लिखिता एतेषां मध्यात्प्रतिमंत्रेण त्रित्रिसहस्राण्याहुतयः का-
र्यास्ततो व्याहृतिभिः पंचपंचाहुतयश्चेति लिखित्वा सामगानं च लिखितम्।
एतेनैव कस्मादद्भुतशान्तिर्विहिता यस्मिन्मंत्रे प्रतिमा शब्दोऽस्ति स मंत्रो
न मर्त्यलोकविषयोऽपितु ब्रह्मलोकविषय एव तद्यथा स प्राचीं दिशमन्वावर्त-
तेऽर्थात् प्राच्या दिशोऽद्भुतदर्शनशान्तिमुक्त्वा ततो दक्षिणस्याः पश्चिमाया
दिशः शान्तिं कथयित्वा उत्तरस्या दिशः शांतिरुक्ता ततो भूमेश्चेतिमर्त्य
लोकस्य प्रकरणं समाप्यांतरिक्षस्य शांतिरुक्ता ततो दिवश्च शांतिविधानमु
क्तम्। ततः परस्य स्वर्गस्य च नाम ब्रह्मलोकस्यैवेति। तदा बालशास्त्रिणो-
क्तम्। यस्यां यस्यां दिशि या या देवता तस्यास्तस्या देवतायाः शांतिकरणेन
दृष्टविघ्नोपशांतिर्भवतीति तदा स्वामिनोक्तमिदं तु सत्यं परंतु विघ्नदर्श-
यिता कोऽस्तीति। तदा बालशास्त्रिणोक्तमिंद्रियाणि दर्शयितॄणीति। तदा
स्वामिनोक्तमिंद्रियाणि तु द्रष्टॄणि भवंति न तु दर्शयितॄणि परंतु स प्राचीं
दिशमन्वावर्ततेऽथेत्यत्र सशब्दवाच्यः कोऽस्तीति। तदा बालशास्त्रिणा किमपि
नोक्तम्। तदा शिवसहायेन प्रयागस्थेनोक्तमन्तरिक्षादिगमनं शान्तिकरणस्य
फलमनेनोच्यते चेति। तदा स्वामिनोक्तम्भवता तत्प्रकरणं दृष्टं किं दृष्टं
चेन्नहि कस्यापि मंत्रस्यार्थं वदेति तदा शिवसहायेन मौनं कृतम्।
तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् वेदाः कस्माज्जाता इति। तदा स्वामिनोक्तम्
वेदा ईश्वराज्जाता इति। तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम्। कस्मादीश्व-
राज्जाताः किं न्यायशास्त्रोक्ताद्वा योगशास्त्रोक्ताद्वा वेदांतशास्त्रोक्ताद्वेति।
तदा स्वामिनोक्तम्। ईश्वरा बहवो भवंति किमिति तदा विशुद्धानन्द-
स्वामिनोक्तमीश्वरस्त्वेक एव परंतु वेदाः कीदृग्लक्षणादीश्वराज्जाता

इति तदा स्वामिनोक्तम् । सच्चिदानन्दलक्षणादीश्वराद्वेदाजाता इति । तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् कोऽस्ति सम्बन्धः किं प्रतिपाद्यप्रतिपादकभावो वा जन्यजनकभावो वा समवायसम्बन्धो वा स्वस्वामिभाव इति तादात्म्यभावो वेति । तदा स्वामिनोक्तं कार्यकारणभावः सम्बन्धश्चेति तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तं मनोब्रह्मेत्युपासीत । आदित्यं ब्रह्मेत्युपासीतेति यथा प्रतीकोपासनमुक्तं तथा शालिग्रामपूजनमपि ग्राह्यमिति । तदा स्वामिनोक्तं यथामनोब्रह्मेत्युपासीत आदित्यं ब्रह्मेत्युपासीतेत्यादिवचनं वेदेषु*दृश्यते तथा पाषाणादिब्रह्मेत्युपासीतेतिवचनं क्वापि वेदेषु न दृश्यते पुनः कथं ग्राह्यंभवेदिति । तदा माधवाचार्येणोक्तम् । उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसᳫं सृजेथामयञ्चेति । मंत्रस्थेन पूर्तशब्देन कस्य ग्रहणमिति तदा स्वामिनोक्तं वापीकूपतडागारामाणामेव नान्यस्येति तदा माधवाचार्येणोक्तम् । पाषाणादिमूर्त्तिपूजनमत्र कथं न गृह्यते चेति । तदा स्वामिनोक्तम् पूर्तशब्दस्तु पूर्त्तिं वाचीवर्त्तते तस्मान्न कदाचित्पाषाणादिमूर्त्तिपूजनग्रहणं सम्भवति यदि शङ्कास्ति तर्हि नैरुक्तमस्यमंत्रस्य पश्य ब्राह्मणं चेति ततोमाधवाचार्येणोक्तं पुराणशब्दो वेदेष्वस्ति न वेति । तदा स्वामिनोक्तं पुराणशब्दस्तु बहुषु स्थलेषु वेदेषु दृश्यते परंतु पुराणशब्देन कदाचिद् ब्रह्मवैवर्त्तादिग्रंथानांग्रहणं न भवति कुतः पुराणशब्दस्तु भूतकालवाच्यस्ति सर्वत्र द्रव्यविशेषणं चेति । तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तं एतस्यमहतो भूतस्य निःश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं श्लोका व्याख्यानान्यनुव्याख्यानानीत्यत्रबृहदारण्यकोपनिषदि पठितस्यसर्वस्यप्रामाण्यं वर्त्तते नवेति तदास्वामिनोक्तं अस्त्येव प्रामाण्यमिति तदाविशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् श्लोकस्यापि प्रामाण्यं चेत्तदा सर्वेषां प्रामाण्यमागतमिति ।

---

* इदमपि पण्डितमतानुसारेणोक्तं नेदं स्वामिनो मतमिति बोध्यम् ।

तदा स्वामिनोक्तं मन्वादीनामेव श्लोकानां प्रामाण्यं नान्येषामिति । तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तं अत्रपुराणशब्दः कस्यविशेषणमिति तदा स्वामिनोक्तम् पुस्तकमानय पश्चाद्विचारः कर्त्तव्य इति तदामाधवाचार्य्येण वेदस्य द्वे पत्रे *निस्सारितेऽत्र पुराणशब्दः कस्य विशेषणमित्युक्त्वेति । तदा स्वामिनोक्तम् कीदृशमस्ति वचनं पठ्यतामिति तदा माधवाचार्य्येण पाठः कृतस्तत्रेदं वचनमस्ति । ब्राह्मणानीतिहासः पुराणानीति । तदा स्वामिनोक्तम् पुराणानि ब्राह्मणानि नाम सनातनानीति विशेषणमिति । तदा बालशास्त्र्यादिभिरुक्तम् ब्राह्मणानि नवीनानि भवंति किमिति । तदा स्वामिनोक्तम् नवीनानि ब्राह्मणानीति कस्यचिच्छङ्कापि माभूदिति विशेषणार्थः तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् । इतिहासशब्दव्यवधानेन कथं विशेषणम्भवेदिति । तदा स्वामिनोक्तम् अयं नियमोऽस्ति किं व्यवधानाद्विशेषणयोगो न भवेत्सन्निधानादेव भवेदिति । अजो नित्यश्शाश्वतोऽयम्पुराणोनेति दूरस्थस्य देहिनोविशेषणानि गीतायां कथम्भवंति व्याकरणेपि नियमो नास्ति समीपस्थमेव विशेषणम्भवेन्न दूरस्थमिति । तदा विशुद्धानन्दस्वामिनोक्तम् इतिहासस्यात्र पुराणशब्दो विशेषणं नास्ति तस्मादितिहासो नवीनो ग्राह्यः किमिति । तदा स्वामिनोक्तमन्यत्रास्तीतिहासस्य पुराणशब्दो विशेषणं तद्यथा इतिहास पुराणः पंचमो वेदानांवेद इत्युक्तम् तदा वामनाचार्य्यादिभिरयं पाठ एव वेदे नास्तीत्युक्तम् तदा दयानन्दस्वामिनोक्तम् † यदि वेदेष्वयं पाठो न भवेच्चेन्मम पराजयो यद्ययं पाठो वेदे यथावद् भवेत्तदा भवतां पराजयश्चेयं प्रतिज्ञा लेख्येत्युक्तं तदा सर्वैर्मौनं कृतमिति तदा स्वामिनोक्तम्

* इदमपि पण्डितानामसत् [illegible] इति वेद्यम् ॥

† इदमपि [illegible] नेदं स्वामिनो मतमिति वेदितव्यमेते पत्रे [illegible] ॥

इदानीं व्याकरणे कल्मसंज्ञा क्वापि लिखिता नवेति । तदा बालशास्त्रिणो-क्तमेकस्मिन् सूत्रे संज्ञा तु न कृता परन्तु महाभाष्यकारेणोपहासः कृत इति। तदा स्वामिनोक्तम् । कस्य सूत्रस्य महाभाष्ये संज्ञा तु न कृतोपहासश्चेत्यु-दाहरणप्रत्युदाहरणपूर्वकं समाधानं वदेति बालशास्त्रिणा किमपि नोक्तम् मन्यैर्नापिचेति। तदा माधवाचार्येण द्वे पत्रे वेदस्य* निस्सार्य्य सर्वेषां पंडि-तानाम्मध्ये प्रक्षिप्ते अत्र यज्ञसमाप्तौ सत्यां दशमे दिवसे पुराणानां पाठं शृणुयादि-ति लिखितमत्र पुराणशब्दः कस्य विशेषणमित्युक्त तदा विशुद्धानन्दस्वामिना दयानन्दस्वामिनो हस्ते पत्रे द्वे दत्ते तदा स्वामी पत्रे द्वे गृहीत्वा पञ्च-क्षणमात्रं विचारं कृतवान् तत्रेदं वचनं वर्त्तते । दशमे दिवसे यज्ञान्ते पुराणविद्यावेदः । इत्यस्य श्रवणं यजमानः कुर्य्यादिति । अस्यायमर्थः पुराणी चासौ विद्या च पुराणविद्या पुराणविद्यैव वेदः पुराणविद्यावेद इति नाम ब्रह्मविद्यैव ग्राह्या कुत एतदन्यचर्ग्वेदादीनां श्रवणमुक्तं नचो-पनिषदाम् । तस्मादुपनिषदामेव ग्रहणं नान्येषाम् पुराणविद्यावेदोपि ब्रह्मविद्यैव भवितुमर्हति नान्ये नवीना ब्रह्मवैवर्त्तादयो ग्रन्थाश्चेति यदि ह्येवं पाठो भवेद् ब्रह्मवैवर्त्तादयोऽष्टादश ग्रन्थाः पुराणानि चेति क्वाप्येवं वेदेषु † पाठो नास्त्येव तस्मात्कदाचित्तेषां ग्रहणं न भवेदेवेत्यर्थकथन-स्येच्छा कृता तदा विशुद्धानन्दस्वामी मम विलम्बो भवतीदानीं गच्छा-मीत्युक्त्वा गमनायोत्थितोभूत् । ततः सर्वे पण्डिता उत्थाय कोलाहलं कृत्वा गताः । एवं च तेषामयमाशयः कोलाहलमात्रेण सर्वेषां निश्चयो भविष्यति दयानन्दस्वामिनः पराजयो जात इति । अथात्र बुद्धि-मद्भिर्विचारः कर्त्तव्यः कस्य जयो जातः कस्य पराजयश्चेति। दयानन्द स्वामिनश्चत्वारः पूर्वोक्ताः पूर्वपक्षास्सन्ति तेषां चतुर्णां प्रामाण्यं नैव वेदेषु निस्सृतं पुनस्तस्य पराजयः कथं भवेत् । पाषाणादिमूर्त्तिपूजनरचना-दिविधायकं वेदवाक्यं सभायामेतैः सर्वैर्नोक्तं येषां वेदविरुद्धेषु वेदाप्रसिद्धेषु च पाषाणादिमूर्त्तिपूजनादिषु शैवशाक्तवैष्णवादिसंप्रदायादिषु रुद्राक्षतु-लसीकाष्ठमालाधारणादिषु त्रिपुंड्रोर्ध्वपुंड्रादिरचनादिषु नवीनेषु ब्रह्मवैवर्त्ता-दिग्रन्थेषु च महानाग्रहोस्ति तेषामेव पराजयो जात इति तथ्यमेवेति॥

---

* इदमपि तन्मतमेव नैव स्वामिन इति † इदमपि तन्मतमेवास्ति न स्वामिन इति

॥ भाषार्थ ॥

एक दयानन्द सरस्वती नामक संन्यासी दिगम्बर गङ्गा के तीर विचरते रहते हैं जो सत्पुरुष और सब शास्त्रों के वेत्ता हैं उन्हों ने संपूर्ण ऋग्वेदादि का विचार किया है सो ऐसा सत्य शास्त्रों को देख निश्चय करके कहते हैं कि पाषाणादि मूर्त्ति पूजन शैव शाक्त गाणपत और वैष्णव आदि सम्प्रदायों और रुद्राक्ष तुलसी माला त्रिपुण्ड्रादिधारण का विधान कहीं भी वेदों में नहीं है इस से ये सब मिथ्या ही हैं। कदापि इन का आचरण न करना चाहिये क्योंकि वेदविरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध के आचरण से बड़ा पाप होता है ऐसी मर्यादा वेदों में लिखी है।

इस हेतु से उक्त स्वामी जी हरद्वार से लेकर सर्वत्र इस का खंडन करते हुए काशी में आके दुर्गाकुंड के समीप आनन्द बाग में स्थित हुए उन के आने की धूम मची बहुत से पंडितों ने वेदों के पुस्तकों में विचार करना आरंभ किया परन्तु पाषाणादिमूर्त्तिपूजा का विधान कहीं भी किसी को न मिला बहुधा करके इस के पूजन में आग्रह बहुतों को है॥

इस से काशीराज महाराज ने बहुत से पंडितों को बुलाकर पूछा कि इस विषय में क्या करना चाहिये तब सब ने ऐसा निश्चय करके कहा कि किसी प्रकार से दयानन्द सरस्वतीस्वामी के साथ शास्त्रार्थ करके बहुकाल से प्रवृत्त आचार को अस्थापन पुनः शीघ्र करना चाहिये।

निदान कार्त्तिक सुदि १२ सं० १९२६ मंगलवार को महाराजा काशीनरेश बहुत से पंडितों को साथ लेकर जब स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने के हेतु आए तब दयानन्दस्वामी जी ने महाराज से पूछा कि आप वेदों की पुस्तक ले आए हैं वा नहीं।

महाराजने कहा कि वेद संपूर्ण पंडितों को कंठस्थ हैं पुस्तकों का क्या प्रयोजन है तब दयानन्द सरस्वती जी ने कहा कि पुस्तकों के बिना पूर्वापरप्रकरण का विचार ठीक २ नहीं हो सकता भला पुस्तक तो नहीं लाए तो नहीं सही परन्तु किस विषय पर विचार होगा॥

पण्डितों ने कहा कि तुम मूर्त्तिपूजा का खण्डन करते हो हम लोग उस का मण्डन करेंगे॥

पुनः स्वामीजीने कहा कि जो कोई आपलोगों में मुख्य हो वही एक पण्डित मुझ से संवाद करें।

पंडित रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ने भी यह नियम किया कि स्वामी जी से एक २ पण्डित विचार करें।

पुनः सब से पहिले ताराचरण नैयायिक स्वामी जी से विचार के हेतु सन्मुख प्रवृत्त हुए स्वामी जी ने उन से पूछा कि आप वेदों का प्रमाण मानते है वा नहीं उन्हों ने उत्तर दिया कि जो वर्णाश्रम में स्थित हैं उन सब को वेदों का प्रमाण ही है* इस पर स्वामी जीने कहा कि कहीं वेदों में पाषाणादिमूर्त्तियों के पूजन का प्रमाण है वा नहीं यदि हो तो दिखाइये और जो नहीं हो तो कहिये किनहींहै॥

पण्डित ताराचरण ने कहा कि वेदों में प्रमाण है वा नहीं परन्तु जो एक वेदों ही का प्रमाण मानता है औरों का नहीं उस के प्रति क्या कहना चाहिये इस पर स्वामी जीने कहा कि औरों का विचार पीछे होगा वेदों का विचार मुख्य है इस निमित्त से इस का विचार पहिले ही करना चाहिये क्योंकि वेदोक्त ही कर्म मुख्य है और मनुस्मृति आदि भी वेद मूलक हैं इस से इन का भी प्रमाण है क्योंकि जो २ वेदविरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध हैं उन का प्रमाण नहीं होता॥

पण्डित ताराचरण ने कहा कि मनुस्मृति का वेदों मे कहां मूल हैं॥ † इस पर स्वामी जी ने कहा कि जो२ मनु जी ने कहा है सो २ औषधों का भी औषध है ऐसा साम वेद के ब्राह्मण में कहा है॥

विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि रचना की अनुपपत्ति होने से अनुमान प्रतिपाद्य प्रधान जगत् का कारण नहीं व्यास जी के इस सूत्र का वेदों में क्या मूल है इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह प्रकरण से भिन्न बात है इस पर विचार करना न चाहिये। फिर विशुद्धानन्दस्वामी ने कहा कि यदि तुम जानते हो तो अवश्य कहो इस पर स्वामी जी ने यह समझकर कि प्रकरणान्तर में वार्त्ता जा रहेगी इस सेन कहा जो कदाचित् किसी को कण्ठ न हो तो पुस्तक देख कर कहा जा सकता है। तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि जो कण्ठस्थ नहीं है तोकाशीनगर में शास्त्रार्थ करने को क्यों उद्यत हुए। इस पर स्वामीजीने कहा कि क्या आप को सबकण्ठाग्रहै।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि हां हम को कण्ठस्थ है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि कहिये धर्म्म का क्या स्वरूप है।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि जो वेदप्रतिपाद्य फलसहित अर्थ है वही धर्म्म कहलाता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह आप का संस्कृत है इस का क्या प्रमाण श्रुति स्मृति कहिये।

---

* इस से यह समझना कि स्वामी जी भी वर्णाश्रमस्थ है वेदों को मानते हैं।

† यह कहना उन पण्डितों के मत के अनुसार ठीक है परन्तु स्वामी जी तो ब्राह्मण पुस्तकों को वेद नहीं मानते किन्तु मन्त्र भाग ही को वेद मानते हैं।

विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि जो चोदनालक्षणार्थ है सो धर्म कहला-ता है यह जैमिनि का सूत्र है।

स्वामी जी ने कहा कि यह तो सूत्र है यहां श्रुति वा स्मृति को कण्ठ से नहीं कहते और चोदना नाम प्रेरणा का है यहां भी श्रुति वा स्मृति कहना चा-हिये उससे प्रेरणा होती है।

तब इस में विशुद्धानन्द स्वामी ने कुछ भी न कहा तब स्वामी जी ने कहा कि अच्छा आप ने धर्म का स्वरूप तो न कहा परन्तु धर्म के कितने लक्षण हैं कहिये

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि धर्म का एक ही लक्षण है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि वह कैसा है तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कुछ भी न कहा। तब स्वामी जी ने कहा कि धर्म के तो दश लक्षण हैं आप एक ही क्यों कहते हैं तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि वे कौन लक्षण हैं।

इस पर स्वामी जी ने मनुस्मृति का यह वचन कहा कि। धैर्य १ क्षमा २ दम ३ चोरी का त्याग ४ शौच ५ इन्द्रियों का निग्रह ६ बुद्धि ७ और विद्या का बढ़ाना ८ सत्य ९ और अक्रोध अर्थात् क्रोध का त्याग १० ये दश धर्म के लक्षण हैं फिर आप कैसे एक ही लक्षण कहते हैं। तब बालशास्त्री ने कहा कि हां हमने सब धर्मशास्त्र देखा है इस पर स्वामी जी ने कहा कि आप अधर्म का लक्षण कहिये तब बालशास्त्री जी ने कुछ भी उत्तर न दिया। फिर बहुत से पण्डितों ने इकट्ठे हो के पूछा कि वेद में प्रतिमा शब्द है या नहीं इस पर स्वामी जी ने कहा कि प्रतिमा शब्द तो है फिर उन लोगों ने कहा कि कहां पर है इस पर स्वामी जी ने कहा कि सामवेद के ब्राह्मण में है फिर उन लोगों ने कहा कि वह कौन सा वचन है इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह है देवता के स्थान कंपायमान और प्रतिमा हंसती है* इत्यादि। फिर उन लोगों ने कहा प्रतिमा शब्द तो वेदों में भी है फिर आप कैसे खण्डन करते हैं इस पर स्वामी जी ने कहा कि प्रतिमा शब्द से पाषाणादिमूर्ति पूजनादि का प्रमाण नहीं हो सकता है इसलिये प्रतिमा शब्द का अर्थ करना चाहिये इस का क्या अर्थ है।
तब उन लोगों ने कहा कि जिस प्रकरण में यह मंत्र है उस प्रकरण का क्या अर्थ है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह अर्थ है अथ अद्भुत शान्ति की व्याख्या करेंगे ऐसा प्रारम्भ करके फिर रक्षा करने के लिये इन्द्र इत्यादि सब सूत्र मंत्र

* यह वेदवचन नहीं किन्तु सामवेद के षड्विंश ब्राह्मण का है परन्तु यहां भी यह कल्पित है क्यों कि वेदों से विरुद्ध है।

वहीं सामवेद के ब्राह्मण में लिखे हैं इन में से प्रति मन्त्र करके तीन ३ हजार आहुति करनी चाहियें इस के अनन्तर व्याहृति करके पांच २ आहुति करनी चाहिये ऐसा लिख के सामगान भी करना लिखा है इस क्रम करके अद्भुतशान्ति का विधान किया है जिस मंत्र में प्रतिमा शब्द है सो मंत्र मृत्युलोक विषयक नहीं किन्तु ब्रह्मलोक विषयक है सो ऐसा है कि जब विघ्न करता देवता पूर्व दिशा में वर्त्तमान होवे इत्यादि मंत्रों से अद्भुतदर्शन की शान्ति कह कर फिर दक्षिण दिशा पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा इस के अनन्तर भूमि की शान्ति कह कर मृत्यु लोक का प्रकरण समाप्त कर अन्तरिक्ष की शान्ति कह के इस के अनन्तर स्वर्ग लोक फिर परम स्वर्ग अर्थात् ब्रह्म लोक की शान्ति कही है इस पर सब चुप रहे फिर बालशास्त्री ने कहा कि जिस २ दिशा में जो २ देवता है उस २ की शान्ति करने से अद्भुत देखने वालों के विघ्न की शान्ति होती है इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह तो सत्य है परंतु इस प्रकार में विघ्न दिखाने वाला कौन है तब बालशास्त्री ने कहा कि इन्द्रियां दिखाने वाली हैं इस पर स्वामी जी ने कहा कि इन्द्रियां तो देखने वाली हैं दिखाने वाली नहीं परंतु स प्राचीं दिशमन्वावर्त्तऽथे त्यत्र इत्यादि मंत्रों में स शब्द का वाच्यार्थ क्या है तब बालशास्त्री जी ने कुछ न कहा फिर पण्डित शिवसहाय जी ने कहा कि अन्तरिक्ष आदि गमन शान्ति कर ने से फल इस मंत्र करके कहा जाता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि आपने वह प्रकरण देखा है तो किसी मंत्र का अर्थ तो कहिये तब शिवसहाय जी चुप हो रहे फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि वेद किस से उत्पन्न हुए हैं इस पर स्वामी जी ने कहा कि वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं फिर विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि किस ईश्वर से क्या न्यायशास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से वा योगशास्त्रप्रसिद्ध ईश्वर से अथवा वेदान्तशास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से इत्यादि। इस पर स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर बहुत से हैं। तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर तो एकही है परंतु वेद कौन से लक्षण वाले ईश्वर से प्रकाशित भये हैं। इस पर स्वामी जी ने कहा कि सच्चिदानन्द लक्षण वाले ईश्वर से प्रकाशित भये हैं। फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर और वेदों से क्या संबन्ध है क्या प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव वा जन्यजनकभाव अथवा समवायसंबन्ध वा स्वस्वामिभाव अथवा तादात्म्यसंबन्ध है इत्यादि। इस पर स्वामी जी ने कहा कि कार्य्यकारण भाव संबन्ध है। फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि जैसे मन में ब्रह्मबुद्धि और सूर्य्य में ब्रह्म बुद्धि कर के प्रतीक उपासना कही है वैसे ही शालिग्राम के पूजन का भी ग्रहण करना चाहिये।

इस पर स्वामी जी ने कहा जैसे मनो ब्रह्मेत्युपासीत। आदित्यं ब्रह्मेत्युपासीत इत्यादि वचन * वेदों में देखने में आते हैं वैसे पाषाणादि ब्रह्मेत्युपासीत इत्यादि वचन वेदादि में नहीं देख पड़ता फिर क्योंकर इस का ग्रहण हो सकता है।

तब माधवाचार्य्य ने कहा कि उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते संसृजेथामयञ्चेति इस मंत्र में पूर्त्त शब्द से किस का ग्रहण है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि वापी, कूप, तड़ाग, और आराम का ग्रहण है। माधवाचार्य्य ने कहा कि इस से पाषाणादि मूर्त्तिपूजन का ग्रहण क्यों नहीं होता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पूर्त्त शब्द पूर्त्ति का वाचक है इस से कदाचित् पाषाणादि मूर्त्तिपूजन का ग्रहण नहीं हो सकता यदि शङ्का हो तो इस मंत्र का निरुक्त और ब्राह्मण देखिये।

तब माधवाचार्य्य ने कहा कि पुराण शब्द वेदों में है वा नहीं।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुराण शब्द तो बहुत से जगह वेदों में है परंतु पुराण शब्द से ब्रह्मवैवर्त्तादिक ग्रन्थों का कदाचित् ग्रहण नहीं हो सकता क्योंकि पुराण शब्द भूतकालवाची है और सर्वत्र द्रव्य का विशेषण ही होता है।

फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि बृहदारण्यक उपनिषद् के इस मंत्र में कि (एतस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं श्लोका व्याख्यानान्यनुव्याख्यानानीति) यह सब जो पठित है इस का प्रमाण है वा नहीं।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि हां प्रमाण है।

फिर विशुद्धानन्द जी ने कहा कि यदि श्लोक का भी प्रमाण है तो सब का प्रमाण आया।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि सत्य श्लोकों ही का प्रमाण होता है औरों का नहीं।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहां पुराण शब्द किसका विशेषण है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुस्तक लाइये तब इस का विचार हो।

माधवाचार्य्य ने वेदों के दो पत्रे † निकाले और कहा कि यहां पुराण शब्द किसका विशेषण है।

स्वामी जी ने कहा कि कैसा वचन है पढ़िये।

तब माधवाचार्य्य ने यह पढ़ा। ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानीति।

---

* यह भी उन्हीं पण्डितों का मत है स्वामी जी का नहीं क्योंकि स्वामी जी तो ब्राह्मण पुस्तकों को ईश्वरकृत नहीं मानते।

† यह भी उन्हीं का मत है स्वामीजी का नहीं क्योंकि यह गृह्यसूत्र का पाठ है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यहां पुराण शब्द ब्राह्मण का विशेषण है अर्थात् पुराने नाम सनातन ब्राह्मण है।

तब बालशास्त्री जी आदि ने कहा कि ब्राह्मण कोई नवीन भी होते।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि नवीन ब्राह्मण नहीं है परन्तु ऐसी शंका भी किसी को न हो इसलिये यहां यह विशेषण कहा है।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहां इतिहास शब्द के व्यवधान होने से कैसे विशेषण होगा।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि क्या ऐसा नियम है कि व्यवधान से विशेषण नहीं होता और अव्यवधान ही में होता है क्योंकि। अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। इस श्लोक में दूरस्थ देही का भी विशेषण क्या नहीं है और कहीं व्याकरणादि में भी यह नियम नहीं किया है कि समीपस्थ ही विशेषण होते हैं दूरस्थ नहीं।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहां इतिहास का तो पुराण शब्द विशेषण नहीं है इस से क्या इतिहास नवीन ग्रहण करना चाहिये।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि और जगह पर इतिहास का विशेषण पुराण शब्द है सुनिये। इतिहास पुराणः पंचमो वेदानां वेद इत्यादि में कहा है।

तब वामनाचार्य आदिकों ने कहा कि वेदों में यह पाठही कहीं भी नहीं है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यदि वेद में यह पाठ न होवे तो हमारा पराजय हो और जो होतो तुम्हारा पराजय हो यह प्रतिज्ञा लिखो तब सब चुप हो रहे।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि व्याकरण जानने वाले इस पर कहें कि व्याकरण में कहीं कल्म संज्ञा करी है वा नहीं।

तब बालशास्त्री जी ने कहा कि संज्ञा तो नहीं की है परन्तु एक सूत्र में भाष्यकार ने उपहास किया है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि किस सूत्र के महाभाष्य में संज्ञा तो नहीं की और उपहास किया है यदि जानते हो तो इस के उदाहरण पूर्वक समाधान कहो।

बालशास्त्री और औरों ने कुछ भी न कहा माधवाचार्य ने दो पत्रे † वेदों के निकाल कर सब पंडितों के बीच में रख दिये और कहा कि यहां यज्ञ के

* यह उन्हीं पंडितों के मतानुसार कहा है किन्तु स्वामी जी तो छान्दोग्य उपनिषद् को वेद नहीं मानते।

† ये पत्रे गृह्यसूत्र के पाठ के थे वेदों के नहीं।

भ्रमोच्छेदन

—3○✻○ϵ—

जो

राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद के निवेदन के उत्तर में ।

श्रीमत्स्वामीदयानन्द सरस्वती ने

सज्जन आर्य्यों के हितार्थ ।

निर्माण किया है ॥

——○0○——

॥ वैदिक यंत्रालय काशी में लक्ष्मीकुण्ड पर ॥

। श्री युत महाराजे विजयनगराधिपति के स्थान में ।

मुंशी बख्तावर सिंह के प्रबन्ध से छप के प्रकाशित हुआ

संवत् १९३७

निवेदन ।

सब सज्जन पुरुषों पर विदित किया जाताहै कि श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी इस नगर काशी में महाराज महाराजे विजय नगराधिपति के आनन्दबाग में कई मास रहे । और आतेही एक विज्ञापन लगाया कि पुराणी जैनी कुरानी किरानी आदि में से जिस किसी को शास्त्रार्थ करने का सामर्थ्य हो वह सभा करके मेरा सामना करे । यहां लोगों ने बहुत सा गड़बड़ मचाया (कि जो भाई दर्पण में क्रम से छपे गा) परन्तु शास्त्रार्थ करने को कोई भी उद्यत न हुआ ।

जब स्वामी जी के यहां से यात्रा के चार पांच दिन रहगये तब यहां के बहुत से लोगों ने विचार किया होगा कि स्वामी जी के बार बार विज्ञापन देने पर भी यहां से पण्डित लोग शास्त्रार्थ न करसके और कुछ नहीं तो अब इन के चलते समय अवश्य गड़बड़ मिचाना उचित है । तब इस काम पर राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने कमर बांधी और स्वामी जी से कुछ पत्रद्वारा अनुचित व्यवहार करके और उस में अपनी ओर से बहुत सा लोन मिर्च भरके उसको मुद्रित कराया और सुना है कि वेदभाष्य के ग्राहकों के पास भी उसका एक २ पुस्तक भेजा है कि जिसके देखने से ही सब पर राजा जी की बुद्धि और विद्वत्ता प्रगट हो गयी होगी । उसमें जो स्वामी विशुद्धानन्द जी ने अपनी सम्मति दी है इस कारण स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने यह विचारकर कि

اگر بینم که نابینا و چاه است • اگر خاموش بنشینم گناه است

उसका उत्तर देना अवश्य जाना । जो यह केवल राजाशिवप्रसाद जी की ओर से होता तो कदाचित् स्वामी जी इसका उत्तर न देते क्योंकि राजाशिव प्रसादजी न तो संस्कृत ही जानते हैं और न उनको किसी ऐसे विद्वान् का ही सत्संग हुआहै कि जो प्राचीन ऋषि मुनि कृत पुस्तकों की बातों को जानता हो, जैसा कि उनके लेख से ज्ञात होता है ॥

अब मैं इस "भ्रमोच्छेदन" का एक २ पुस्तक सब सज्जन ग्राहकों के पास भेजता हूं । आशा है कि सब सज्जन लोग पक्षपात रहित होकर बुद्धिमत्ता से इसको देखकर सत्य और असत्य का निर्णय करें गे ।

सब लोग जानतेहैं कि इस वैदिक यंत्रालय का केवल वेदादि सत्य पुस्तकों के प्रचार के हेतु प्रबन्ध किया गया है, यहां इतना धन नहीं जो राजा जी की नाईं एक २ पुस्तक बिना दाम भेजा जाये, इस लिये इस पुस्तक का एक आना ⁄॥ दाम रक्खा है ।

सब ग्राहकों को उचित है कि वेदभाष्य के मूल्य के साथ इसका भी ⁄॥ अधिक भेज दिया करें ॥

बख़्तावर सिंह

ओ३म्

॥ भ्रमोच्छेदन * ॥

———:*:———

अविद्वानों का

मैंने राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द की बुद्धि और चतुराई की प्रशंसा सुन के चित्त में चाहा कि कभी उन से समागम होकर आनन्द होवे जैसे पूर्व समय में बहुत ऋषि मुनि विद्वानों के बीच प्रज्ञा सागर बृहस्पति महर्षि हुए थे क्या पुनरपि वेही महा अविद्यान्धकार के प्रचार से नाना प्रकार के अन्योन्य विरुद्ध मत मतांतर के इस वर्त्तमान समय में शरीर धारण करके प्रकट तो नहीं हुए हैं। देखना चाहिये कि जैसा उनको मैं सुनता हूं वैसेही वे हैं वा नहीं ऐसी इच्छा थी। यद्यपि मैंने सम्वत् १९२६ से लेके पांच वार काशीमे जाकर निवास भी किया परंतु कभी उन से ऐसा समागम न हुआ † कि कुछ वार्तालाप होता, मैंने प्रस्तुत सम्वत् १९३६ कार्तिक सुदी १४ गुरुवार को काशी में आकर महाराजे विजयनगराधिपति के आनन्दबाग मे निवास किया इतने में मार्गशीर्ष सुदी में अकस्मात् राजाशिवप्रसाद जी प्रसिद्ध एस् एच् करनेल ओलकाट साहब और एच् पी मेडमब्लेवस्तकी को मिलने के लिये आनन्द बाग में आ उनने मुझसे मिलकर कहा कि मैं उक्त साहब और मेडम से मिला चाहता हूं। सुनकर मैंने एक मनुष्य को भेज राजा साहब की सूचना कराई और जब तक उक्त साहब के साथ राजाजी न उठगये तब तक जितनी मैं अपने पत्र में लिख चुका हूं उनसे बातें हुईं परंतु शोक है कि जैसा मेरा प्रथम निश्चय राजा

---

* जो राजा शिवप्रसाद जो अपने लेखपर स्वामी विशुद्धानन्द जी का [illegible] अक्षर भी न लिखता क्योंकि उनको तो संस्कृत विद्या मे [illegible] लिये जो कुछ इसपर लिखता है सो सब स्वामी विशुद्धानन्द जी की [illegible]

† एक बार मध्यटभरनद रा सदरअद्र जी की कोठी पर दूर से देखा था [illegible]

[illegible] उनको न पाया * मन में विचारा कि जितनी दूसरे से मुझसे बात सुनी जाती है सो सब सच नहीं होती ॥

राजा जी लिखते हैं कि स्वामी जी की बात सुन कर मैं भ्रम मे पड़ गया यहां बुद्धिमानो को विचारना चाहिये कि क्या मेरी बातका सुनना ही राजा जी को बड़े सन्देह में पड़ने का निमित्त है और उनकी कम समझ और आलस्य कारण नहीं है † जब कि उनको सन्देह हो गया था तो मेरेपास आके उत्तर सुनके यथाशक्ति संदेह निवृत्तकर आनन्दित होना योग्य न था? जैसा कोमल लेख उनके पत्रमें है वैसा भीतर का अभिप्राय नहीं ‡ किंतु इसमें प्रत्यक्ष छल ही विदित होता है। देखो मार्गशीर्ष से लेके वैशाख कृष्ण एकादशी बुधवार पर्यन्त सवाचार मास उनके मिलने के पश्चात् मैं और वे काशी में निवास करते रहे क्यों न मिलके संदेह निवृत्त किये? । जब मेरी यात्रा सुनी तभी पत्र भेजके प्रत्युत्तर [illegible] ? मेरे चलते समय प्रश्न करना, मेरे बुलाये परभी उत्तर सुनने न आना, सवाचार महीने पर्यन्त चुप होके बैठे रहना, और मेरे काशी से चले आने पर अपनी व्यर्थ बड़ाई के लिये पुस्तक छपवा कर [illegible] और जहां तहां भेजना कि काशी में कोईभी विद्वान् स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने मे समर्थ न हुआ किंतु एक राजा शिवप्रसाद जी ने किया। ऐसी प्रसिद्धि होनेपर सब लोग मुझ को विद्वान् और बुद्धिमान् मानेंगे ऐसी इच्छा का विदित कराना आदि हेतुओंसे क्या उनकी अयोग्यता की [illegible] नहीं है? ; भला ऐसे मनुष्यों से किसी विद्वान् को उचित है कि [illegible] और शास्त्रार्थ करनेमें प्रवृत्त होवे, ऐसे कपट छलके व्यवहार न करने में मनु जी की भी साक्षी अनुकूल है "अधर्मेण तु यः प्राह यश्चाऽधर्मेण

* [illegible] और समझ आदि [illegible] ।

† [illegible] अधिकार [illegible] विद्या [illegible] कभी न समझा [illegible]

‡ [illegible] होते हैं।

[illegible]

पृच्छति । तयोरन्यतरः प्रैति विद्वेषं वाधिगच्छति,, ॥ अर्थ (यः) जो (अध-, र्मेण) अन्याय, पक्षपात, असत्य का ग्रहण, सत्य का परित्याग, हठ दुराग्रह से वा जिस भाषाका आप विद्वान् न हो उसी भाषाके विद्वान् के साथ शास्त्रार्थ किया चाहे और उस भाषा के सच्च झूठ की परीक्षा करनेमें प्रवृत्त होवे और कोई प्रतिवादी सत्य कहे उसका निरादर करे इत्यादि अधर्म कर्म से युक्त होकर छल कपट से * (पृच्छति) पूछता है (च) और (यः) जो (अधर्मेण) पूर्वोक्त प्रकार से (प्राह) उत्तर देता है ऐसे व्यवहार में विद्वान् मनुष्यको योग्य है कि न उससे पूछे और न उसको उत्तर देवे। जो ऐसा नहीं करता तो पूछने वा उत्तर देने वाले दोनों में से एक मरजाता है (वा) अथवा (विद्वेषम्) अत्यन्त विरोध को (अधिगच्छति) प्राप्त होकर दोनों दुःखित होते हैं ॥

जब इस वचनानुसार राजा जी को अयोग्य जानकर लिखके उत्तर नहीं दिये † तो फिर क्या मैं ऐसे मनुष्यों से शास्त्रार्थ करने को प्रवृत्त हो सकता हूं । हां मैं अपरिचित मनुष्यों के साथ चाहे कोई धर्म से पूछे अथवा अधर्मसे उन सबों के समाधान करने को एकबार तो प्रवृत्त होही जाता हूं, परंतु उस समय जिसको अयोग्य समझ लेता हूं जब तक वह अपनी अयोग्यता को छोड़कर नहीं पूछता और न कहता है तबतक उससे सत्यासत्य निर्णय के लिये कभी प्रवृत्त नहीं होता हूं। हां जो सब विद्वानों को योग्य है वह काम तो करताही हूं, अर्थात् जब २ अयोग्य पुरुष मुझसे मिलता वा मैं उस से मिलता हूं तब २ प्रथम उसकी अयोग्यता के छुड़ाने में प्रयत्न करता हूं, जब वह धर्मात्मता से योग्य होता है तब मैं उसको प्रेम से उपदेश करता हूं वह भी प्रेम से पूछ के निस्सन्देह होकर आनन्दित होजाता है ‡ अब जो राजा शिवप्रसाद

* जिसके भीतर में और, और जिसके बाहर और होवे वह छली कहाता है ।

† जो जिस बात के समझने और जिस काम के करने में सामर्थ्य रखता है वह उसका [illegible] नहीं होसकता ॥

‡ कोई भी वैद्य जबतक रोगी ने आंखों की पीड़ा भीतर और [illegible] दूर नहीं [illegible] को दिखला भी नहीं सकता परन्तु जिसके भीतरी फूटगये हैं उसको वह भी [illegible] नहीं है

को मैं स्वामी विशुद्धानन्द जी की सम्मति लिखा ज्येष्ठ महीने में निवेदन पत्र छपवाके प्रसिद्ध किया है उसीके उत्तर में यह पुस्तक है

इस में जहां २ (रा०) चिन्ह आवे वहां २ राजा शिवप्रसाद जी का लेख और जहां २ (स्वा०) आवे वहां २ मेरा लेख जानना चाहिये।

रा० जितना महाराज जीके मुखारविन्द से सुना था वड़े सन्देह का कारण हुआ निदानार्थ पत्र लिखा महाराज जी ने कृपा करके उत्तर दिया उसे देख मेरा सन्देह और भी वढ़ा महाराज जी के लिखे अनुसार ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मंगा के पृष्ठ६ से ८८ तक देखा विचित्र लीला दिखाई दी अर्थात् वचन जो अपने अनुकूल पाये ग्रहण किये हैं शेषार्द्ध को जो प्रतिकूल पाये परित्याग * उन आधे अनुकूल में भी जोकोई शब्द अपने भाव से विरुद्ध देखे उनके अर्थ पलट दिये मनमाने लगा लिये † परंतु आप ने याज्ञवल्क्य जी का यह वाक्य आधा ही अपना उपयोगी समझ क्यों लिखा क्या इसी लिये कि शेषार्द्ध वादी का उपयोगी है।

स्वा० क्या मेरी वातही सन्देह की बढ़ाने हारी है उनकी अल्प समझ और सामर्थ्य नहीं है और यह भी सच है कि जब २ अविद्वान् होकर विद्वान् के बनाये ग्रंथ को देखने लगता है तब २ कांच के मन्दिर में [illegible] श्वान के समान भ्रम २ सुख के बदले दुःखही पाया करता है॥

विदित हो कि जहां जितने वाक्य के भागके लिखने की योग्यता हो उतनाही लिखना उचित होता है न अधिक न न्यून, जिस लिये यह वेद-

---

* [illegible]

† [illegible]

भाष्य की भूमिका है इस लिये उस वाक्य समूह में से जितना वेदोंका उपयोगी लिखना उचित था उतनाही लिखा है जो इतिहासादि में से जिस किसी की व्याख्या करनी होता तो वहां उस २ भागका लिखना भी योग्य था। प्रकरण विरुद्ध लिखना विद्वानों का काम नहीं * सब विद्वान् इस बातको निश्चित जानते हैं कि पदों का पद, वाक्यों का वाक्य, प्रकरणों का प्रकरण और ग्रंथों का ग्रंथों ही के साथ सम्बन्ध होताही है॥ जब ऐसा है तब राजा जी को अपनी बात की पुष्टि के लिये सब पद, सब वाक्य, सब प्रकरण, और सब ग्रंथों का प्रमाणार्थ एकत्र लिखना उचित हुआ, क्योंकि यह उन्हीं की प्रतिज्ञा है † कि आधा छोड़ना और आधा लिखना किसी को योग्य नहीं— और जो राजा जी संपूर्ण का लिखना उचित समझते हैं, सो यह बात अत्यन्त तुच्छ और असम्भव है। ऐसी बात कोई बाल बुद्धि मनुष्य भी नहीं कह सकता। देखिये फिर यही उनकी अविद्या उलटा उनको उन्हीं मिथ्या दोषोंमें पकड़कर गिराती रहती है अर्थात् जो मिथ्या दोष वे मेरे लेख पर देते हैं उन्हीं में आप डूबे हैं॥

यहां जब कोई मनुष्य राजा जीसे पूछेगा कि आप जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की बनाई भूमिका में दोष देते हैं वही आपके (अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः) इस लेख में भी आते हैं। इसकी वाक्यावली ‡ तो ऐसी है (अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयंधीराःपंडितम्मन्यमानाः जंघन्यमाना अपियन्ति मूढ़ा अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः) फिर आपने इस वाक्यावली में से पूर्वके तीन भाग छोड़, चौथे भाग कोक्यों लिखा ? तब राजा साहब घबड़ाकर मौन हो साधजांयगे, क्योंकि वे वाक्यावली में से प्रकरणोपयोगी एकही भाग का लिखना उचित नहीं समझते

* चेत करना चाहिये यह उलटी समझ राजा जी की है जो अनेक वाक्यों की एक वाक्य समझना
† ऐसा असभव वचन किसी विद्वान् के मुखसे नहीं निकल सकता है और न आपने लिखा [illegible]।
‡ जैसे कोई प्रमत्त अर्थात् पागल पगड़ी पगपर और जूतेशिरपर धरता है ऐसा काम विद्वान् कभी नहीं कर सकता॥

चाहे प्रकरणोपयोगी हो वा नहो, किंतु पूरी वाक्यावली लिखना योग्य समझते हैं * जो ऐसा न समझते तो (एवम्वाअरेस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यहग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानीष्टंहुतमाशितं पायितमयंच लोकःपरश्चलोकः सर्वाणिच भूतान्यस्यैवैतानिसर्वाणिनिःश्वसितानि) इस वाक्य समुदाय को स्वामी जी ने नहीं लिखा, यह मिथ्या दोष क्यों लगाते पर विचारे क्या करें उन्होंने न कभी किसी से वाक्य का लक्षण सुना और न पढ़कर जाना है, जो सुना वा जाना होता तो (एवम्वा०) इससे लेके (निःश्वसितानि) इस अनेक वाक्य के समुदाय को एक वाक्य क्यों समझते † देखिये यह "महा भाष्य में वाक्य का लक्षण लिखा है (एकातिङ्वाक्यम्) जिसके साथ एक तिङन्तके प्रयोग का सम्बन्ध हो वह वाक्य कहाता है जैसे (एवम्वाअरेस्य महतो भूतस्य विभोः परमेश्वरस्य साक्षाद्वापरम्परासम्बन्धादेतत्सर्वं वक्ष्यमाणमनेक वाक्य वाच्यं निःश्वसितमस्तीति । एक और (पूर्वोक्तस्यसकाशादृग्वेदो निःश्वसितोऽस्तीति) दूसरा वाक्यहै इसी प्रकार इस कंडिका में २० वाक्य तो पठित हैं और आकांक्षित वाक्य (त्वंविद्धि) इत्यादि ऊपर से और चकार से इन्हीं के अविरुद्ध अपठित उपयोगी अनेक अन्यवाक्य भी अन्वित होते हैं । क्या जिनको वाक्य का बोध न हो उनको पदार्थ और वाक्यार्थ का बोध जिनको पदार्थ और वाक्यार्थ का बोध न हो उनको प्रकरणार्थ और ग्रंथके पूर्व पदार्थ का बोध होनेकी आशा कभी होसकती है ‡ इसी लिये जो राजा जी को दूसरे पत्र में मैं ने लिखा है सो बहुत ठीक है कि इस से मुझ को निश्चित हुआ कि राजा जीने

* [illegible] कि यहां [illegible] लिखना योग्य हो वहां उतनाही लिखना ।

† [illegible] इसके मूल में ऐसी [illegible] कभी न [illegible]

‡ [illegible] बड़ा बुद्धिमान् [illegible] ([illegible]) यहां इस [illegible]

वेदोंसे लेके पूर्व मीमांसा पर्यंत विद्या पुस्तकों में से किसी भी पुस्तक के शब्दार्थ सम्बन्धों का जाना नहीं है * इस लिये उनको मेरी बनाई भूमिका का अर्थ भी ठीक २ विदित न हुआ ॥

क्या अब जिसको थोड़ीसी भी बुद्धि होगी वह राजासाहब को शास्त्रों के तात्पर्यार्थ ज्ञानशून्य जानने में कुछ भी शंका रखसकता है यहां चोर कोटपाल को दंडे यह कहानी चरितार्थ होती है कि जो (अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः) के समान स्वयंराजा जी और उनके विचारानुकूल चलने वाले होकर भ्रमसे इसके अर्थको मेरी बनाई भूमिका और मेरे उपदेश को मानने हारेपर झोंकदेते हैं। क्या, यह उलट पलट नहीं है॥ इससे मैं सब आर्य सज्जनों को विदित करता हूं कि जो अपना कल्याण चाहें वे उनके व्यर्थ वाक्याडम्बर जाल में बद्ध हो अपने मनुष्य जन्म के धर्मार्थ काम मोक्ष फलों से रहित होकर दुःख दुर्गन्ध सागर रूप घोर नरक मे गिरकर चिरकाल दारुण दुःख भोग न करें और सर्वानन्दप्रद वेदके सत्यार्थ प्रकाश में स्थिर होकर सर्वानन्दों का भोग न छोड़ बैठें—अब जो स्वामी विशुद्धानन्द जी की पक्षपात रहित विद्वत्ता की परीक्षा बाकी है सो करनी चाहिये॥

रा॰ श्रीमत्पण्डितवर † बालशास्त्री जी तो बाहर गये हैं परम पूजनीय जगद्गुरु ‡ श्री स्वामी विशुद्धानंद जी के चरणों में पहुंच जा पत्र और उत्तरों को देखकर बहुत हंसे § और पिछले उत्तर पर जिस में इन दोनों महात्माओं का नाम है कुछ लिखवा भी दिया स्वामी वि-

* ईश्वरोक्त चारवेद स्वत प्रमाण और ब्रह्मा से लेके जैमिनि पर्यन्त ऋषि मुनि और ऐतरेय ब्राह्मण से लेके पूर्वमीमांसा पर्यंत ग्रंथों की गणना से कोई भी आर्ष पुस्तक पढ़ना बाकी नहीं रहता कि जिसका [illegible] ग्रहण न हो सके क्योंकि ग्रंथकारों में जैमिनि सब के पश्चात् हुए हैं और पुस्तकों में पूर्वमीमांसा सबसे पीछे बनाया है इस लिये जो राजाजीने नोट में स्वामीजीने पूर्वमीमांसा पर्यंत पढ़ा होगा लिखा है सो सच नहीं है।

† काशी के पंडितों में तो बालशास्त्री जी किसी प्रकार [illegible] हो सकते हैं [illegible] नहीं।

‡ जगत् में जो २ उनके शिष्य वर्ग में हैं उन २ के परम पूजनीय और गुरु होंगे [illegible]

§ जो कुछ भी पत्रों के अभिप्राय को समझते तो रात करके [illegible] पर [illegible]।

शुद्धानंद जी का लिखवाया राजा साहब के प्रश्नों का उत्तर दयानंद से नहीं बना इति।

स्वा॰ जिनका पक्षी पक्षपातान्धकार से विचार शून्य हो उनको साक्षी तत्काल क्यों न दें क्या यथाबुद्धि कुछ विद्वान् होकर स्वामीविशुद्धानंद जी को योग्य था कि ऐसे अशास्त्रवित् अव्युत्पन्न व्यर्थ वैतण्डिक मनुष्य के अत्यंत अयुक्त लेखपर बिना सोचे समझे सम्मति लिखदेवें और इस से सजातीय प्रवाह पतन न्याय करके यह भी विदित हुआ कि स्वामी विशुद्धानंद जी भी राजा जी के तुल्यत्व की उपमाके योग्य हैं। मैं स्वामीविशुद्धानंद जी को चिताता हूं कि आगे कभी ऐसा निर्बुद्धिता का काम न करें * भला मैं ने तो राजा जी को संस्कृत विद्या में अयोग्य जानकर लिख दिया है कि आपने जिस लिये वेदादि विद्या के पुस्तकों में से एक का भी अभ्यास नहीं किया है जो आपको उत्तर ग्रहण की इच्छा हो तो मेरे पास आके सुन समझ कर अपनी बुद्धि के योग्य ग्रहण करो — आप दूर से वेदादि विषयक प्रश्न करने और उत्तर समझने योग्य नहीं हो सकते। इसी लिये उनको लिखके यथोचित उत्तर न भेजा और न भेजूंगा। यह बात भी मेरे दूसरे पत्र से प्रसिद्ध है कि जो वे वेदादि शास्त्रों में कुछ भी विद्वान् होते तो मेरी बनाई भूमिका का कुछ तो अर्थ समझते † न ऐसी किसी की योग्यता है कि अंधे को दिखला सके — यह भी मैं ठीक जानता हूं कि स्वामीविशुद्धानंद जी भी वेदादि शास्त्रों में विद्वान् नहीं किन्तु नवीन टीकानुसार दश उपनिषद् शारीरक और पूर्वमीमांसा सूत्र और प्राचीन आर्य ग्रंथों से विरुद्ध कपोल कल्पित तर्क संग्रहादि ग्रंथोंका अभ्यास तो किया है परंतु वे भी नशा से ‡ विस्मृत

* [illegible]

† [illegible]

‡ [illegible]

हो गये होंगे तथापि उनका संस्कार मात्र तो ज्ञानरहाही होगा इस लिये वेसंस्कृतपदवाक्य प्रकरणार्थों को यथाशक्ति जानसकते हैं परंतु न जाने उन्होंने राजाजी केअयोग्य लेखपर क्योंकर साक्षी लिखी अस्तु। जो किया सो किया अब आगे को वे वा बालशास्त्री जी जिसके उत्तर वा प्रश्नों पर हस्ताक्षर करके मेरे पास अपनी ओर से भेज दिया करें और यह भी समझ रक्खेंकि जो प्रश्नोत्तर उनके हस्ताक्षरयुक्त आवेंगे वे उन्हीं की ओर से समझे जावेंगे जैसा कि यह निवेदन पत्र का लेख स्वामी विशुद्धानन्द जी की ओर से समझा गया है। इसी लिये वे तीनों स्वामी सेवक मिलकर प्रश्नों को विचार शुद्ध लिख कर मुंशी बख़्तावर सिंह जी के पास भेज दियाकरें मुंशी जी आपकी ओर से यह लेख है वा नहीं इस निश्चय के लिये पत्र द्वारा आप से संमति पत्र मंगवा के मेरे पास भेज दिया करेंगे और मेरा लेख भी मेरे हस्ताक्षर सहित अपने हस्ताक्षर करके पत्र सहित उनके पास भेजदिया करेंगे वे लोग राजा जी आदि को समझाया करें और वे आप से मेरे लेखाभिप्राय को समझ लिया करें जो इसपर भी आप लोग परस्पर विचार करने में प्रवृत्त न होंगे तो क्या सब सज्जन लोग आप लोगों को भी अयोग्य न समझेंगे क्योंकि जो स्वपक्ष के स्थापन और पर पक्ष के खंडन में प्रवृत्त न होकर केवल विरोधही मानते रहें वे अयोग्य कहाते हैं। इस लिये मैं सबको सूचना करता हूं कि जो मेरे पक्ष से विरुद्ध अपना पक्ष जानते हों तो प्रसिद्ध होकर शास्त्रार्थ क्यों नहीं करते और टट्टी की आड़में स्थित होकर ईंट पत्थर फेंकने वाले के तुल्य कर्म करना क्यों नहीं छोड़ते और जो विरुद्ध पक्ष नहीं जानते हों तो अपने पक्ष को छोड़ मेरे पक्ष में प्रवृत्त होकर प्रीति से इसी पक्ष का प्रचार करने मे उद्यत क्यों नहीं होते * जो ऐसा नहीं करके दूर ही दूर रहकर झूठे गप्प उड़ाने

* उनको अवश्य योग्य है कि सत्य के आचरण और असत्य के छोड़ने में अति दृढ़ोत्साह युक्त होवें निन्दा स्तुति हानि लाभ आदि की प्राप्ति में शोक और हर्ष कभी न करें।

और उन्हें मेरे काशी से चले आये पर राजा जी के पत्र पर व्यर्थ हस्ताक्षर करने में उनने अपनी अयोग्यता प्रसिद्ध कराई वैसे जो वे मुझसे शास्त्रार्थ करेंगे तो मर्दित भी होसक्ते हैं। ऐसे किये विना क्या ये लोग बुद्धिमान् धार्मिक विद्वानों के सामने अमाननीय और अप्रतिष्ठित न होंगे॥ जो इस में एक बात न्यून रही है कि बालशास्त्री जी भी इसपर अपनी सम्मति लिखते तो उनको भी राजा शिवप्रसाद और स्वामी विशुद्धानन्द जी के साथ दक्षिणा मिलजाती। कहिये राजाजी आप अपनी रक्षा के लिये स्वामी विशुद्धानन्द जी के चरणों में पहुंचकर पत्र दिखा सम्मति लिखा पुस्तक छपाकर इधर उधर भेजने से भी न बचसके तो आपके जाट, खाट, और कोल्हू; लौटकर आपही के शिरपर चढ़े वा नहीं, अब इस बोझ के उतारने के लिये आपको योग्य है कि बालशास्त्री जी के चरणों में भी गिरकर बचने का उपाय कीजिये और आप अपने विजय के लिये स्वामी विशुद्धानन्द जी और बालशास्त्री जी को (प्राड्विवाक्) अर्थात् बारिस्टर करना भी मत छोड़िये, अथवा उत्तम तो यह है कि वे दोनों आपकी ढाल बनाकर न लड़ें किंतु सन्मुख होकर शास्त्रार्थ करें, इसी में उन की शोभा है। अन्यथा नहीं, परंतु मैं आप और उनको निश्चित कहता हूं कि सब मिलकर कितनाही करो जब तक कोई मनुष्य झूठ छोड़, सत्यमत का ग्रहण नहीं करता, तबतक, अपना और दूसरे का विजय कभी नहीं करसकता और न करासकता है क्या दूसरेकी वृथा प्रशंसा से हर्षित होकर स्वामी विशुद्धानन्द जी का बहुत हंसना बालकों का सा नहीं है और जो कोई अपनी योग्यता के सदृश वर्त्तमान न करे वह शोक समुद्र में मग्न होकर विनष्ट क्योंकर न होवे॥

अब मैं सूचना करता हूं कि बुद्धिमान् आर्य लोग पक्षी राजा जी और स्वामी विशुद्धानन्द जी के हास्यास्पद लेख को देख उसपर विश्वा-

स कर इस (क्वास्ताःक्वनिपातिताः) महाभाष्योक्त वचनार्थ के सदृश हो-कर धर्मफल आनन्द से छूटकर दुर्गन्ध गढ़े और दुःखसागर में जा न गिरें।

रा० हम केवल वेद को संहिता मात्र मानते हैं एक ईशावास्य उपनिषद् संहिता है और सब उपनिषद् ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण हम कोई नहीं मानते सिवाय संसिता के हम और कुछ नहीं मानते हैं॥

स्वा० जैसा यह राजा जी का लेख है वैसा मैंने नहीं कहा था किंतु जैसा नीचे लिखा है वैसा कहा गया था। तद्यथा।

रा० आप का मत क्या है।

स्वा० वैदिक।

रा० आप वेद किस को मानते हैं।

स्वा० संहिताओं को।

रा० क्या उपनिषदों को वेद नहीं मानते।

स्वा० मैं वेदों में एक ईशावास्य को छोड़ के अन्य उपनिषदों को नहीं मानता किन्तु अन्यसबउप निषद् ब्राह्मणग्रंथोंमें हैं। वेईश्वरोक्त नहीं हैं।

रा० क्या आप ब्राह्मण पुस्तकों को वेद नहीं मानते।

स्वा० नहीं; क्योंकि जो ईश्वरोक्त है वही वेद होता है जीवोक्त को वेद नहीं कहते, जितने ब्राह्मण ग्रंथ हैं वे सब ऋषि मुनि प्रणीत, और संहिता ईश्वर प्रणीत हैं जैसा ईश्वर के सर्वज्ञ होनेसे तदुक्त निर्भ्रान्त सत्यऔर मत के साथ स्वीकार करने योग्य होताहै वैसा जीवोक्त नहीं होसकता क्योंकि वे सर्वज्ञ नहीं परंतु जो २ वेदानुकूल ब्राह्मण ग्रंथ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता हूं। वेद स्वतःप्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं इस से जैसे वेद विरुद्ध ब्राह्मण ग्रंथों का त्याग होता है वैसे ब्राह्मण ग्रंथों से विरुद्धार्थ होनेपर भी वेदों का परित्याग कभी नहीं हो सकता; क्योंकि वेद सर्वथा सबको माननीयही हैं। यह

[illegible] पर ना [illegible] उनके भ्रमजाल निवारण का हेतु विद्यमानही था परंतु [illegible] क्या कर सकता है जो राजा जी मेरे लेख को समझने को [illegible] नहीं रखते तो क्या इस में राजा जी का दोष नहीं है ॥

रा० वादी कहता है * जो संहिता ईश्वर प्रणीत है तो ब्राह्मण भी ईश्वर प्रणीत हैं ॥

स्वा० देखिये राजा जी की मिथ्या आडम्बर युक्त लड़कपन की बात को जैसे कोई कहे कि जो पृथिवी और सूर्य ईश्वर के बनाये हैं तो घड़ा और दीप भी ईश्वर ने रचे हैं ॥

रा० और जो ब्राह्मण ग्रंथ सब ऋषि मुनि प्रणीत हैं तो संहिता भी ऋषि मुनि प्रणीत हैं ॥

स्वा० यह भी ऐसी बात है कि जो कोई कहे कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका स्वामीदयानन्द सरस्वती प्रणीत है तो ऋग्यजुः साम और अथर्व चारों वेद भी उन्हीं के प्रणीत हैं ॥

रा० वादी का आप अपना प्रतिध्वनि समझिये †

स्वा० देखिये राजा जी की अविद्या के प्रकाश को क्या प्रतिवादी का प्रतिध्वनि वादी कभी होसकता है क्योंकि जैसा शब्द और उसमें जैसे पद अक्षर और मात्रा होती हैं वैसाही प्रतिध्वनी सुनने में आता है विपरीत नहीं कोई बाल बुद्धि भी नहीं कहसकता कि वादी अपने मुखसे प्रतिवादी भी के शब्दों को निकाले विरुद्ध नहीं जबतक प्रतिवादी के पक्ष से विरुद्ध पक्ष प्रतिपादन नहीं करता तबतक वह उसका वादी कभी नहीं होसकता जैसे कुआं में से प्रतिध्वनि सुना जाता है क्या वह वक्ता के शब्द से विरुद्ध होता है ।

* [illegible]

† [illegible]

रा० आप ने लिखा वेद संहिता स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं वादी कहता है कि जो ऐसा तो ब्राह्मणही स्वतः प्रमाण हैं आप का संहिता परतः प्रमाण होगा।

स्वा० क्या यह उपहास की बात नहीं है जैसे कोई कहे कि जो सूर्य्य और दीप स्वतः प्रकाशमान हैं तो घटपटादि भी स्वतः प्रकाशमान हैं

रा० आपने लिखा कि मेरी बनाई हुई ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के नव६ में पृष्ठ से लेके ८८ के पृष्ठ तक वेदोत्पत्ति वेदों का नित्यत्व और वेदसंज्ञा विचार बिषयों को देखलीजिये निश्चय होगा सो महाराज निश्चय के पलटे मैं तो और भी भ्रान्ति में पड़गया मुझे तो इतनाही प्रमाण चाहिये कि आपने संहिता को माननीय मानकर ब्राह्मण का क्यों परित्याग किया और बादी तो संहिता जैसा ब्राह्मण को वेदमान जो आपने वेद के अनुकूल लिखा अपने अनुकूल और जो ब्राह्मण के प्रतिकूल लिखा उसे संहिता के भी प्रतिकूल समझता है॥

स्वा० यह सच है कि जो अविद्वान् होकर विद्वता का अभिमान करे वह अपनी अयोग्यता से छोड़कर दुःखक्यों न पावे॥ मैंने वेदों को स्वतः प्रमाण मानने और ब्राह्मणों को परतःप्रमाण मानने में इस भ्रमोच्छेदन के पृष्ठ १४ चौदह में लिख दिये हैं। क्या बांचते समय अकस्मात् बुद्धि और आखें अन्धकारावृत होगये थे परन्तु जो२ वेदानुकूल ब्राह्मण ग्रन्थ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानताहूं वेद स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं इस से जैसे वेद विरुद्ध ब्राह्मण ग्रन्थों का त्याग होता है वैसे ब्राह्मण ग्रन्थों से विरुद्धार्थ होनेपर भी वेदोंका परित्याग नहीं होसकता क्योंकि वेद सर्वथा सबको माननीय है।

रा० तस्माद्यज्ञात् अजायत अर्थात् उस यज्ञ से वेद उत्पन्न हुये पृष्ठ १० पंक्ति २६ में आप शतपथ आदि ब्राह्मण का प्रमाण देकर यह सिद्ध

और ब्राह्मण ग्रंथों का नाम वेद है पृष्ठ ५२ में लिखते हैं प्रमाण ८ हैं और फिर पृष्ठ ५३ में लिखते हैं चौथा शब्द प्रमाण आप्तों के उपदेश पांचवां ऐतिह्य सत्यवादी विद्वानों के कहे वा लिखे उपदेश तो आप के निकट कात्यायन ऋषि आप्त और सत्यवादी विद्वान् नहीं थे) *

स्वा०। इसका प्रत्युत्तर मेरी बनाई ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पृष्ठ ८० पंक्ति २८ से लेके पृष्ठ ८८ अठासी तक में लिख रहा है जो चाहे सो देख लेवे और जो वहां (एवं तेनानुक्तत्वात्) इस वचन का यही अभिप्राय है कि (मंत्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्) यह वचन कात्यायन ऋषिका नहीं है किंतु किसी धूर्तराट् ने कात्यायन ऋषि के नाम से बनाकर प्रसिद्ध कर दिया है जो कात्यायन ऋषि का कहा होता तो सब ऋषियों की प्रतिज्ञा से विरुद्ध न होता † क्या आप जैसा कात्यायन को आप्त मानते हैं वैसा पाणिनि आदि ऋषियों को आप्त नहीं मानते जो न कभी आप्त मानते हो तो पाणिनि आदि आप्तों की प्रतिज्ञा से विरुद्ध कात्यायन ऋषि क्यों लिखते और जो कहो कि हम इस वचन को कात्यायन काही मानेंगे तो ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि आप पाणिनि आदि अनेक ऋषियों के लेख का तिरस्कार कर एकको आप्त कैसे मान सकते हो और जो उनको भी आप्त मानते हो तो मंत्र संहिताही वेद है उनके इस वचन को मानकर तद्विरुद्ध ब्राह्मण को वेद संज्ञा के प्रतिपादक वचन को क्यों नहीं छोड़ देते क्योंकि एक विषय में परस्पर विरोधी दो वचन सत्य कभी नहीं हो सकते और जो सैकड़ह आप्त ऋषियों को छोड़ कर एकही को आप्त मानकर संतुष्ट रहता है वह कभी विद्वान् नहीं कहा जासकता॥

रा० आप लिखते हैं कि ब्राह्मण में जमदग्नि कश्यप इत्यादि जो

* वे तो आप्त विद्वान् थे परन्तु जितने उनके नाम से वचन प्रसिद्ध किया है वह तो [illegible] अविद्वान् ही था।

† हजारह आप्तों का एक अविरुद्ध मत होता है दो मूर्खों का एक मत होना भी कठिन है।

लिखे हैं जो देह धारी हैं उन सब यह वेद नहीं और संहिता में सब मंत्र ब्राह्मण के अनुसार जमदग्नि का अर्थ चक्षु और कश्यप का अर्थ प्राण है अतः सब वेद है ॥

स्वा० ब्राह्मणों में जमदग्नि आदि देह धारियों का नाम यों है कि जहां २ ब्राह्मण ग्रंथों में उनकी कथा लिखी है वहां २ जैसे देहधारी मनुष्यों का परस्पर व्यवहार होता है वैसा उनका भी लिखा है इस लिये वहां देहधारी का ग्रहण करना योग्य है और जहां मनुष्यों के इतिहास लिखने की योग्यता नहीं होसकती वहां इतिहास लिखने का भी संभव नहीं होसकता जो वेदों में इतिहास होते तो वेदादि और सब से प्राचीन नहीं होसकते क्योंकि जिसका इतिहास जिस ग्रन्थ में लिखा होता है वह ग्रन्थ उस मनुष्य के पश्चात् होता है जब कि वेदों में (त्र्यायुषं जमदग्ने०) इत्यादि मंत्रों की व्याख्या पदार्थ विद्या युक्त होनीही उचित है इस से उन में इतिहास का होना सर्वथा असंभव है इस लिये जैसा मूलार्थ प्रतीत होने के कारण जमदग्नि आदि शब्दों से चक्षु आदि ही अर्थों का ग्रहण करना योग्य है वैसाही ब्राह्मण ग्रन्थों और निरुक्त आदि में लिखा है इस लिये यह मैंने अपने किये अर्थों के सत्य होने के लिये साक्ष्यर्थ मात्र लिखा है। राजा जी जो इस बात को जानते और इन ग्रन्थों को पढ़े होते तो भ्रमजाल में फसकर दुःखित न होते ॥

रा० उन में भी क्या उपनिषद् मंत्री और इतिहास पुराणादि संज्ञा है अथवा ऋग्वेदादि क्रमानुसार उनकी संज्ञा या संज्ञा है ॥

स्वा० इसका उत्तर यह है कि एक ईशावास्य उपनिषद् तो यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय होने से वेद है और केन से लेके बृहदारण्य पर्यन्त ६ सब उपनिषद् ब्राह्मणान्तर्गत होने से उनकी भी इतिहासादि

संज्ञा ब्राह्मणा नीतिहासानि० इस पूर्वोक्त वचन से है इससे (एवम्वा-अरे०) इस वचन में निमित्त कारण कार्य सम्बन्ध होने से संज्ञा संज्ञी सम्बन्ध नहीं घटसक्ता परंतु राजा साहेब के सदृश अविद्वान् तो (मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी) ऐसा लिखने वा कहने में कुछ भी भययुक्त वा लज्जावान् नहीं होते * ॥

रा० आप लिखते हैं कि ब्राह्मण वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण के योग्यतो हैं यदि आप इतना और मानलें कि संपूर्ण ब्राह्मणों का प्रमाण संहिता के प्रमाण के तुल्य है ॥

स्वा० अविद्वान् को कभी विद्या रहस्य के समझने की योग्यता नहीं होसकती क्या ऐसा कोई विद्वान् भी सिद्ध करसकता है कि व्याख्या के अनुकूल होने से मूल का प्रमाण और प्रतिकूल से अप्रमाण और व्याख्या के मूल से प्रतिकूल होने से प्रमाण और अनुकूल होने से अप्रमाण होवे इस लिये मंत्र भाग मूल होने से ब्राह्मण ग्रन्थों से अनुकूल वा प्रतिकूल हो तथापि सर्वथा माननीय होने के कारण स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण ग्रन्थ व्याख्या होने से मूलार्थ से विरुद्ध होतो अप्रमाण और अनुकूल होतो प्रमाण होकर माननीय होने के कारण परतः प्रमाण हैं। क्योंकि ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वत्र संहिताओं के मंत्रों की प्रतीक धर २ के पद वाक्य और प्रकरणानुसार व्याख्या की है इस लिये मंत्र भाग मूल व्याख्येय और ब्राह्मण ग्रन्थ व्याख्या है ॥

रा० आप लिखते हैं तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति । अथपरा यया तदक्षरमधिगम्यते । इसका अर्थ सीधा २ यह मानलेवें कि आपके चारों वेद और उनके छओं अंग अपरा हैं जो परा उससे अक्षर में अधिगमन होना

* विद्या हजीहों की अन्यथा कहने और लिखने में सर्वदा भ्रम होता है अविद्या [illegible]

ई ऐसा फिरदट का अर्थ वा अर्थाभास छोड़दे किमधिकमित्यलम् ।

स्वा० यहां तक आपका जो उटपटांग लेख है उसको कौन शुद्धकर सकता है क्योंकि इसी भूमिका के पृष्ठ ४२ पंक्ति ३ सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति। इस उपनिषद् के वचन ने आप के सीधे २ अर्थ को टेढ़ा २ करदिया देखो यमराज कहते हैं कि हे नचिकेता जिसका अभ्यास सब वेद करते हैं उस ब्रह्म का उपदेश मैं तुझ से करता हूं तूं सुनकर धारण कर जब ऐसा है तो वेदों अर्थात् मंत्र भाग में परा विद्या क्यों नहीं । देखो तमीशानं इत्यादि मंत्र ऋग्वेद । परीत्य भूतानि इत्यादि और ईशावास्य इत्यारभ्य ओं खं ब्रह्म पर्यन्त मंत्र शुक्ल ४० चालीसवां अध्यायस्थ मंत्र यजुर्वेद । दधन्वे वायदीमनुवोचद्ब्रह्मेति वेमतत् । इत्यादि मंत्र सामवेद महद्यक्षं इत्यादि मंत्र अथर्ववेद में हैं जब वेदों मे हजारह मंत्र ब्रह्म के प्रतिपादक हैं जिन में से थोड़े मंत्रों का अर्थ भी मैं ने भूमिका पृष्ठ ४३ पंक्ति २६ से लेके ३० पंक्ति की समाप्ति तक लिख रक्खा है जिसको देखना हो देख लेवे भला इतना भी राजा जी को बोध नहीं है कि जो वेदों में पराविद्या न होती तो केन आदि उपनिषदों में कहां से आती । मूलं नास्ति कुतः शाखाः । क्या जो परमेश्वर अपने कहे वेदों में अपनी स्वरूप विद्या का प्रकाश न करता तो किसी ऋषि मुनि का सामर्थ्य ब्रह्मविद्या के कहने में कभी होसकता था क्योंकि कारण के विना कार्य होना सर्वथा असंभव है जो केन आदि सब उपनिषदों को पराविद्या में मानोगे तो इन से भिन्न आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्ववेद अर्थवेद और मीमांसादि छः शास्त्र आदि पराविद्या में क्यों नहीं जब न इस वचन में उपनिषद और न किसी अन्य ग्रंथ का नाम लिखा है तो कोई उन का ग्रहण कैसे करसकता है भला कोई राजा जी से पूछेगा कि अपने यथानिर्दिष्ट (अधिकस्त्वनेन सा पराविद्यास्ति) इस वाक्य से कौनसे

ग्रन्थों का नाम निश्चित किया है क्या (यथा) इस पद से कोई विशेष ग्रन्थ भी आसकता है और जो मैंने वेदों में परा और अपरा विद्या लिखी है उसको कोई विपरीत भी करसकता है कभी नहीं इस लिये सब मनुष्यों को योग्य है कि जैसे राजा जी संस्कृत विद्या के वेदादि ग्रन्थों को न पढ़कर उन्हों में प्रश्नोत्तर किया चाहते और जैसे स्वामीविशुद्धानन्दजी ने विना सोचे समझे संम्मति कर दी है वैसे साहस न करना चाहिये किंतु उस २ विद्या में योग्य होके किसी से विचारार्थ प्रवृत्त होना चाहिये ॥

प्रश्न। आपने अपने दूसरे पत्र में राजा जी को लिखकर प्रश्न करने और उत्तर समझने में अयोग्य जानकर लिखके उत्तर देना चाहा न था फिर अब क्यों लिख के उत्तर देते हो ॥

उत्तर। जो राजा जी विशुद्धानंद की सम्मति न लिखाते तो मैं इस पत्र के उत्तर में एक अक्षर भी न लिखता क्योंकि उनको तो जैसा अपने पत्र में लिख चुका हूं वैसा ही निश्चित जानता हूं ॥

प्र० इस सम्वाद में आप प्रतिपक्षी राजा जी को समझते हो वा स्वामी विशुद्धानंद जी को ॥

उ० स्वामी विशुद्धानंद जी को क्योंकि राजा जी तो बिचारे संस्कृत विद्या पढ़े ही नहीं उनके सामने मेरा लेख ऐसा होवे कि जैसा वधिर के सामने अत्यन्त निपुणगाने वाले का वीणा आदि वजाना और षड्जादि स्वरों का यथायोग्य आलाप करना होता है ॥

प्र० जो तुम पक्षी राजा जी को छोड़कर स्वामीविशुद्धानन्द जी को आगे धरते हो सो यह न्याय की वात नहीं है ॥

उ० यह मुझ वा किसी की योग्यता नहींहै कि संस्कृत में कुछ योग्य विद्वान् को छोड़कर अयोग्य के साथ संवाद चलावे न राजा जी को

[illegible] कि उनके साक्षी को छोड़ि और स्वामीविशुद्धानन्द जी को भी [illegible] कि उनके शरणागत आये राजाजी की रक्षासे विमुख न हो बैठें*

प्र० स्वामीविशुद्धानन्द जी वा बालशास्त्री जी आदि काशी के सब विद्वान् और बुद्धिमान् मिलकर राजा जी का पक्ष लेकर आपसे शास्त्रार्थ वा विरोध करेंगे तो आपको बड़ा कठिन पड़ेगा॥

उ० मैं परमेश्वर की साक्षी से सत्य कहता हूं कि जो ऐसा वे करें तो मैं अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सब को विदित करता हूं कि यह बात कल होती हो तो आज ही होवे जो ऐसी इच्छा मेरी न होती तो मैं काशी में विज्ञापन पत्र क्यों लगवाता और स्वामी विशुद्धानंद जी तथा बालशास्त्री जी को प्रतिपक्षी स्वीकार क्यों करता॥

प्र० वे हैं बहुत और आप अकेले हो कैसे सम्वाद कर सकोगे॥

उ० इसके होने में कुछ असम्भव नहीं क्योंकि जब सब काशी और अन्यत्र के विद्वान् और बुद्धिमान् लोग अपना अभिप्राय पत्रस्थ कर वा सन्मुख जाके स्वामी विशुद्धानंद जी वा बालशास्त्री जी को विदित कराते जायेंगे और वे उन लेख वा वचनों को देख सुन उन में से इष्ट को ले मुझ से सन्मुख वा पत्र द्वारा इन दो बातों में से जिसमें उनकी प्रसन्नता हो ग्रहण करके शास्त्रार्थ करें इसी बात में मैं भी उन से शास्त्रार्थ करने में उद्यत हूं परन्तु जैसे मैं इस पुस्तक पर अपना हस्ताक्षर प्रसिद्ध करता हूं वैसे वे भी करें तो ठीक है अन्यथा नहीं॥

प्र० सन्मुख होकर शास्त्रार्थ करने में अच्छा होगा वा पत्रद्वारा॥

उ० सर्वोत्तम तो यह है जो मैं और वे सन्मुख होकर शास्त्रार्थ करें तो शीघ्र सत्य वा झूठ का सिद्धान्त होसकता है अर्थात् १ एक महीने में [illegible] छः महीने तक सब बातों का निर्णय होसकता है और

* [illegible]

दूर२ रह कर पत्रद्वारा शास्त्रार्थ करने में ३६ छत्तीस वर्षों में भी पूरा होना कठिन है परन्तु जिस पक्षमें वे प्रसन्न हों उसीमें मैंभी प्रसन्न हूं

प्र० इस शास्त्रार्थ के होने और न होने का क्या फल होगा।

उ० जो अविरोध होने से एक मत होकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष से सब को परमानन्द होना और न होने पर जो परस्पर विरुद्ध मिथ्या मत में वर्तमान मनुष्यों के अधर्म अनर्थ कुकाम और बन्ध के न छूटनेसे उनके दुःखों का न छूटना फल है॥

प्र० शास्त्रार्थ हुए पर भी हठ से आप वा वे विरुद्ध मत न छोड़ें तो छुड़ाने का क्या उपाय है।

उ० शास्त्रार्थ से पूर्व में और वे जिसका पक्ष झूठा हो उसके छोड़ने और जिसका सत्य हो उसके स्वीकार करने के लिये प्रतिज्ञा का पक्के कागज़ पर लेख होकर रजष्टरी कराकर एक दूसरे को अपने २ पत्र को देने से सम्भव है कि आप अपना २ हठ छोड़ देवें क्योंकि जो न छोड़ेगा तो राजा अपनी व्यवस्था से हठ को छुड़ासकता है।

प्र० जब आप काशी में सब दिन निवास नहीं करते और स्वामीवि-शुद्धानन्द जी तथा बालशास्त्री जी वहीं बसते हैं तो सन्मुख में शास्त्रार्थ कैसे होसकता है।

उ० मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि जब वे सन्मुख होकर शास्त्रार्थ करना स्वीकार करेंगे और इसको सत्य समझ लूंगा तब जहां हूंगा वहां से चलके काशी में उचित समय पर पहुंचूंगा कि जिस मे उनको परदेश यात्रा का क्लेश और धनव्यय भी न करना पड़ेगा पुनः वहां यथावत् शास्त्रार्थ होकर सत्यासत्य निर्णय के पश्चात् सबका उपकार भी सिद्ध होगा क्या यह छोटा लाभ है।

प्र० जब आप उन से शास्त्रार्थ करके अपना मत सिद्ध किया चाहते और वे नहीं किया चाहते हैं इसका क्या कारण है।

त० विदित होता है कि वे अपने मन मे जानते हैं कि शास्त्रार्थ करने से हम अपने मत को सिद्ध न कर सकेंगे वा सं० १९२६ के शास्त्रार्थ को देख घबराहट होगी कि दूर ही दूर से ढोल बजाना अच्छा है और उनको यह निश्चय होता कि हमारे वेदानुसार और स्वामी जी का मत वेद विरुद्ध है तो शास्त्रार्थ किये बिना कभी नहीं रहते अथवा जो और कुछ कारण हो तो शास्त्रार्थ करनेमें क्यों विलंब करते हैं आज से पीछे जो कोई पुराण वा तंत्र आदि मत वाले मुझसे विरुद्ध पक्ष को लेकर शास्त्रार्थ कियाचाहें वा लिख के प्रश्नोत्तर की इच्छा करें वे स्वामी विशुद्धानन्द जी और बालशास्त्री जी के द्वारा ही करें इस से अन्यथा जो करेंगे तो में उनका मान्य कभी न करूंगा, हां सन्मुख आके तो वे स्वयं भी पूंछ सकते हैं इस से स्वामी विशुद्धानन्द जी और बालशास्त्रीजी ऐसा न समझें कि हम वेदों में विद्वान् वा सर्वोत्तम पण्डित हैं और कोई अन्य मनुष्य भी ऐसा निश्चय न करलेवे कि इन से अधिक पण्डित आर्य्यावर्त्त में दूसरा कोई भी नहीं है हां ऐसा निश्चय करना ठीक है कि काशी मे इस समय आधुनिक ग्रन्थाभ्यास कर्त्ता संन्यासियों में स्वामी विशुद्धानन्द जी और गृहस्थों में बालशास्त्री जी कुछ विशिष्ट विद्वान् हैं मैंने तो संवाद में केवल अनवस्था दोष परिहारार्थ इन दोनो को सन्मुख आर्य्यावर्त्तीय पण्डितों में माने हैं अनुमान है कि इन को अन्य भी मनुष्य ऐसा मानते होंगे इस से अन्य प्रयोजन कुछ भी नहीं सर्व शक्तिमान् सर्वान्तर्यामी परमेश्वर कृपा करके स्वामी विशुद्धानन्द जी और बालशास्त्रीजीको निर्भय निःशंक करे कि जिससे वे मुझ से सन्मुख वा पत्र द्वारा पाषाणादि मूर्त्ति पूजादि मंडन विषयों में शास्त्रार्थ करनेमें दृढोत्साहित हों जैसे कि मैं उनके खंडनमें दृढोत्साहित हूं

भूमि रामाङ्क चन्द्रेऽब्दे शुक्रे मासे सितेदले ।
दिग्तिथ्यादृगवारे भ्रमोच्छेदोऽलमकृत: ॥

[illegible]

ओ३म् ।

नमोनिर्भ्रमायजगदीश्वराय ॥

अथ

॥ अनुभ्रमोच्छेदन ॥

—— ◆ ——

राजाशिवप्रसादजी के द्वितीय निवेदन के उत्तर में ।

प्रकाशित किया ॥

यह ग्रन्थ लाला सादीराम के प्रबन्ध से वैदिक यन्त्रालय में छपा ।

संवत् १९३७

बनारस ।

प्रति पुस्तक मूल्य /)

डाक महसूल ॥

ओ३म्

॥ अनुभ्रमोच्छेदन ॥

यस्यानराविभ्यति वेदबाह्यास्तयाहि युक्तं शुभसेनया यत्।
तन्नाम यस्यास्ति महोत्सवं स त्वनुभ्रमोच्छेदनमातनोति ॥ १ ॥

भूमिका।

मैं ने विचारा था कि राजा जी और स्वामी जी ने एक २ वार लिखा है आगे इस का प्रपंच न बढ़ेगा परन्तु वैसा न हुआ और उन के अनुगामी लोगों ने समाचार पत्रों को भी गर्जाया और वहुत योग्यायोग्य वाच्यावाच्य भी लिखना न छोड़ा और मैं ने यह जान भी लिया कि स्वामी जी अपने नाम से इस पर कुछ भी न लिखें और न छपवावेंगे क्योंकि इस पर श्रीयुत स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और बालशास्त्री जी की संमति नहीं लिखी तथा अन्य किसी आर्य्य ने भी इस के प्रत्युत्तर में न लिखा यह बात ठीक है कि स्वामी जी को तो इस पर लिखना योग्य ही नहीं क्योंकि वे अपनी पूर्व प्रतिज्ञा से विरुद्ध क्यों करें जब ऐसा हुआ तब मैं यथामति इस पर लिखने में प्रवृत्त हुआ यद्यपि इन महाशयों के सन्मुख मेरा लेख न्यूनास्पद है तथापि अन्तःकरण से पक्षपात छोड़ कर देखने से कुछ इस से भी तत्त्व निकलेगा और जो कुछ इस में भूल चूक रहेगी उस को सज्जन महात्मा लोग सुधार लेंगे अब जो राजा शिवप्रसाद जी की यह प्रतिज्ञा है कि अब आगे इस विषय में कुछ न लिखा जायगा तो मुझ को भी आगे लिखना अवश्य न होगा जो राजा जी ने भ्रमोच्छेदन पर दूसरा भाग छपवाया है उस में स्वामी जी के लेख पर निरर्थक आदि दोष दिये हैं उन और इन दोनों पुस्तकों

के ऐसा हो जब बुद्धिमान् लोग पक्षपात रहित होकर देखेंगे तब अव-श्य निश्चय करलेंगे कि कौन सत्य और कौन असत्य है ॥

इति भूमिका ॥

इसलिये राजा जी के प्रिय और सुन्दर लेख को निवेदन पहिला पृष्ठ १ पंक्ति ११ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संगा के पृष्ठ ६ से ८८ तक देखा लिखित लोगों दिखाई दी आधे आधे वचन जो अपने अनुकूल पाये ग्रह-ण किये हैं और छिपाई वा जो प्रतिकूल पाये परित्याग उन आधे अ-नुकूल में भी जो कोई शब्द अपने भाव से विरुद्ध देखे उन के अर्थ पलट दिये। पृष्ठ ४ पंक्ति ० ऐसा न हो कि (अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः) के सदृश केवल दयानन्द जी के भाष्य और भूमिका ही की लाठी थांभे किसी भयानक गढ़े वा घोर नरक कुण्ड में जागिरें। नि० २ पृष्ठ २ पंक्ति २४ खेद की बात है क्यों वृथा इतना कागज बिगाड़ा पृष्ठ ५ पंक्ति २१ नि-दान जब मैं ने गौतम और कणाद के तर्क और न्याय से न अपने प्र-श्नों का प्रामाणिक उत्तर पाया और न स्वामीजी महाराज की वाक्य रचना का उस से कुछ सम्बन्ध देखा डर कि कहीं स्वामी जी महाराज ने किसी मेम अथवा साहब से कोई नया तर्क और न्याय क्रम अमरीका अथवा और किसी दूसरी विलायत का न सीख लिया हो इत्यादि वचन जो ये राजा शिवप्रसाद जी ने अपने दोनों निवेदनों में लिखे हैं क्या इन को कुवचन गाली प्रदान कागज बिगाड़ना आदि कोई भी मनुष्य न समझेगा मैं ने राजा शिवप्रसाद जी के दोनों निवेदनों और स्वामी जी के भ्रमोच्छेदन को भी देखा प्रथम निवेदन में जो ७ प्रश्न राजा जी ने दिये उन ७ का उत्तर भ्रमोच्छेदन में यथायोग्य है ऐसा मैं अपनी छोटी विद्या और बुद्धि से निश्चित जानता हूं राजा जी और उन के सहायकों की विशाल बुद्धि है इसलिये उन के योग्य ठीक २ उत्तर न

हुए होंगे। इस में क्या अद्भुत है अब मैं अपनी अल्प विद्या और बुद्धि के अनुसार द्वितीय निवेदन के उत्तर में थोड़ासा लिखता हूं। निवेदन दूसरा पृष्ठ ४ पङ्क्ति १६ (भला सूर्य्य और घड़े की उपमा संहिता और ब्राह्मण में क्योंकर घट सकेगी उधर सूर्य्य के सामने कोई आध घंटा भी आंख खोल के देखता रहै अंधा नहीं तो चक्षु रोग से अवश्य पीड़ित होवे) इस दृष्टान्त से राजा जी का यह अभिप्राय झलकता है कि वेद को दिन भर भी आंख खोल के देखा करे तो न अन्धा और न नेत्र रोग से युक्त होता है) यहां उन का ऐसा अभिप्राय विदित होता है कि यह दृष्टान्त स्वामी जी का यहां घट नहीं सकता। जहांतक विचार के देखते हैं तो यही निश्चय होता है कि दृष्टान्त का साधर्म्य वा वैधर्म्य गुणही दार्ष्टान्त में घटता है सब गुण कर्म स्वभाव कभी नहीं (जैसे साध्य साधर्म्यात्तद्धर्मभावी दृष्टान्त उदाहरणम्) न्या० अ० १ अ० १ सू० ३६। (तद्विपर्य्ययाद्वाविपरीतम्) न्या० अ० १ सू० ३७ शब्दोऽनित्य इति प्रतिज्ञा उत्पत्ति धर्म कत्वादिति हेतुः। उत्पत्ति धर्मकं स्थाल्यादि द्रव्यमनित्यमिति दृष्टान्त उदाहरणम् यह शान्त दृष्टि से देखने की बात है कि शब्द में अनित्यत्व धर्म साध्य है क्योंकि उत्पत्ति धर्म वाला होने से जो २ पदार्थ उत्पन्न होते हैं वे २ सब अनित्य हैं। जैसे स्थाल्यादि द्रव्य उत्पत्तिधर्म वाले होने से अनित्य हैं वैसे कार्य्य शब्द भी अनित्य हैं यहां केवल स्थाल्यादि पदार्थों का उत्पत्ति धर्म ही कार्य्य शब्द में दृष्टान्त के लिये घटा के कार्य शब्दों को अनित्य ठहराया है यह तो कोई भी नहीं कह सकता कि घट पटादि पदार्थों में चक्षु से दीखना स्थूल कठोर और अंधेर में दीपक की अपेक्षा रहना आदि विरुद्ध धर्म हैं इस लिये उन का दृष्टान्त शब्द में नहीं घटेगा वा शब्द में भी वे धर्म हों कि दीपक जला के शब्द देखा जावे राजा जी को अंधेर में दीपक से शब्द देखना उस से पानी आदि लाना चाहिये

वा इस दृष्टान्त ही को न माने तो ऐसा दृष्टान्त कोई न मिले गा कि जिस में दार्ष्टान्त के सब धर्म बराबर मिल जावें । और जो कोई पदार्थ ऐसे भी हों कि जिन के सब धर्म बराबर मिलें तो उन का परस्पर अभेदान्वय होने से उन में दृष्टान्त दार्ष्टान्त तथा उपमान उपमेय भाव कुछ भी न बनसके गा । अब यहां प्रकृत में यह आया कि वेद को सूर्य का दृष्टान्त दिया है तो सूर्य अपने प्रकाश में किसी की अपेक्षा नहीं रखता वैसे वेदों से भी जो अर्थ प्रकाशित होते हैं उनमें ग्रन्थांतर की अपेक्षा नहीं है स्वयं प्रकाशत्व धर्म दोनों का समान है। और जैसे उत्पत्ति धर्म वाले न होने से आत्मादि द्रव्य नित्य हैं वैसा शब्द नहीं क्योंकि उत्पत्ति धर्मवाला है यहां केवल वैधर्म्य अर्थात् कार्य्य शब्द के अनित्यत्व धर्म से विरुद्ध आत्मा का नित्यत्व धर्म ही दृष्टान्त के लिये घटाया है किन्तु जो आत्मा और शब्द के प्रमेयत्व आदि साधर्म्य हैं वे विवक्षित नहीं। जैसा राजा जी का दृष्टान्त विषयक मत है वैसा किसी विद्वान् का नहीं कि दृष्टान्त के सब धर्म दार्ष्टान्त में घट सकते हों। निवे० २ पृष्ठ ५ पं० १६ राजा जी स्वामीजी से पूंछते हैं कि (स्वामीजी महाराज यह बतलावें कि पाणिनि आदि ऋषियों ने कहां ऐसा लिखा है कि मंत्र संहिताही वेद हैं ब्राह्मण वेद नहीं हैं) इस का उत्तर अब यह ब्राह्मण शब्द लौकिक है वा वैदिक इस के वैदिक होने में तो कोई प्रमाण नहीं मिलता । लौकिक होने में प्रमाण देखो तत्र लौकिका स्तावत् । गौरश्वः पुरुषो हस्ती शकुनिर्मृगो ब्राह्मण इति । वैदिकाः खल्वपि । शन्नो देवीरभिष्टये । इषेत्वोर्जेत्वा । अग्निमीळेपुरोहितम् । अग्न आयाहि वीतय इति । अब यहां अन्तःचक्षुओं से देखना चाहिये कि वैदिक शब्द में केवल ४ मंत्र संहिताओं के उदाहरण दिये हैं जो ब्राह्मण भी वेद होते तो वैदिक शब्दों में उनका उदाहरण क्योंन देते

अब कोई यह कहे कि लौकिक शब्दों में जिस ब्राह्मण शब्द का उदाहरण दिया है वह ग्रन्थवाची शब्द नहीं है किन्तु मनुष्यों में जाति विशेष का नाम है तो उससे पूछना चाहिये कि जाति वाची और ग्रन्थवाची शब्दों में कौन ऐसा चिन्ह है कि जिस से पृथक् २ जाना जावे। हां प्रकरण से अर्थ की संगति होती है सो यहां किसी का प्रकरण नहीं है। यहां पतंजलिजी महाराज के प्रमाण से यह सिद्ध हो गया कि मंत्र संहिताही वेद हैं ब्राह्मण नहीं। अब स्वामीजी पर जो प्रश्न था उस का तो यह उत्तर पतंजलि ऋषि के प्रमाण से हुआ परन्तु वही प्रश्न राजाजी के ऊपर गिरता है कि राजाजी यह बतलावें कि पाणिनि आदि महर्षियों ने ऐसा कहां लिखा है कि मंत्र और ब्राह्मण भाग दोनों वेद हैं अस्तु तावत्। निवे० २ पृष्ठ ५ पं० १८ पाणिनि ने तो जहां मंत्र और ब्राह्मण दोनों के लेने का प्रयोजन देखा स्पष्ट 'छन्दसि, कहा अर्थात् वेद में अर्थात् मंत्र और ब्राह्मण दोनों में और जहां केवल मंत्र वा ब्राह्मण का प्रयोजन देखा (मन्त्रे) वा (ब्राह्मणे) कहा और जहां मंत्र और ब्राह्मण अर्थात् वेद के सिवाय देखा वहां 'भाषायाम्' कहा, राजा जी को यह लिखना तो सुगम हुआ परन्तु निम्न लिखित प्रमाण पाणिनि सूत्र और वेदमंत्र आदि का अर्थ कर के अपने पक्ष मे घटाना सुगम क्यो कर हो सके गा अब देखिये। छन्दो ब्राह्मणानि च तद्विषयाणि। अ० ४ पा० २ सू० ६६ इस सूत्र में प्रोक्त प्रत्ययान्त छन्द और ब्राह्मण को अध्येट वेदिट विषयता विधानकी है अर्थात् प्रोक्त प्रत्ययान्त छन्द और ब्राह्मण का अध्येट वेदिट अभिधेय में ही प्रयोग हो स्वतन्त्र न हो। अब राजा जी के इस लेखानुसार कि (जहां मंत्र और ब्राह्मण दोनों के लेने का प्रयोजन देखा स्पष्ट 'छन्दसि' कहा) इस से पाणिनि के इस सूत्र में ब्राह्मण ग्रहण व्यर्थ होता है। क्योंकि जो छन्द के कहने से मंत्र और ब्राह्मण दोनों

का ही ग्रहण हो जाता तो फिर यहां ब्राह्मण का पृथक् ग्रहण क्यों
किया इस से स्पष्ट ज्ञापक होता है कि छंद से ब्राह्मण पृथक् है। निवे०
८ पृष्ठ ७ पं० २२ से (भला जैमिनि महर्षि के पूर्व मीमांसा को तो स्वामी
जी महाराज मानते हैं उस में इन सूत्रों का अर्थ क्यों कर लगावें गे)
तच्चोदकेषु मंत्राख्या। अ० १ पा० २ सू० ३२। शेषे ब्राह्मण शब्दः। अ० २
पाद १ सू० ३३ इस का अर्थ बहुत स्पष्ट है वेद का मंत्रों से अवशिष्ट जो
भाग सो ब्राह्मण) यह अनुभवार्थ राजा जी ने शबर स्वामी की टीका में
से सुना हो गा परन्तु यहां यह भी विचार करना उन को योग्य था कि
इन सूत्रों के संबध में कहीं वेद संज्ञा निर्वचनाधि करण है वा नहीं कि-
न्तु यहां तो केवल मंत्र निर्वचनाधिकरण और ब्राह्मण निर्वचनाधिकर-
ण है इस से फिर मंत्र और ब्राह्मण दोनों की वेद संज्ञा है यह अभिप्राय
कहां से सिद्ध हो सकता है जो इस प्रकरण में ऐसा होता कि (अथ वेदनि-
र्वचनाधिकरणम्) तो राजा जी का अभिप्राय अवश्य सिद्ध हो जाता। पर-
मात्मा ने वेदस्थ वाक्यों से सर्व विद्या भिधान कर दिया है अब इन में शेष
अर्थात् बाकी पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना व्याख्या करनी करानी आदि है
और थी भी जो थी सो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त महर्षि महाशय
लोगों ने कर दी है जिस से ये ऐतरेय आदि ग्रन्थ ब्रह्म अर्थात् वेदों का व्या-
ख्यान हैं इसी से इन का नाम ब्राह्मण रक्खा है अर्थात् ब्रह्मणां वेदाना-
मिमानि व्याख्यानानि ब्राह्मणानि अर्थात् शेषभूतानि सन्तीति। परन्तु जहां
से इन सूत्रों के अर्थ में राजा जी आदि को भ्रम हुआ है सो शबर स्वामीजी
कीइसी सूत्र पर यह व्याख्या है (अथ कि लक्षणं ब्राह्मणम्) (मंत्राश्च ब्रा-
ह्मणं च वेदः) विचार योग्य बात है कि न जाने शबर स्वामी ने इन दो
सूत्रों में वेद शब्द कहां से लिया और इन की अद्भुत कथा को देखिये
कि (प्रश्न) ब्राह्मण का क्या लक्षण है (उत्तर) मंत्र और ब्राह्मण वेद

है विद्वान् लोग विचार लेगें कि जैसा प्रश्न किया था वैसा ही उत्तर स्व-
वर स्वामी ने दिया है वा नहीं यहां विशेष लिखने की आवश्यकता
नहीं किन्तु । आम्रान् पृष्टः कोविदारानाचष्टे । इस न्याय के तुल्य यह
व्याख्या है ऐसा ही निवे॰ दू॰ २ पृष्ठ ४ पं० २४ निदान जब मैं ने गौतम
और कणाद के तर्क और न्याय से न अपने प्रश्न का प्रामाणिक उत्तर
पाया और न स्वामी जी महाराज की वाक्य रचना का उस से कुछ
संबध देखा डरा कि कहीं स्वामी जी महाराज ने किसी मेंम वा साहब
से कोई नया तर्क और न्याय रूस अमरिका अथवा और किसी दूसरी वि-
लायत का न सीख लिया हो, स्वामी जी ने जो भूमिका में गौतम न्याय
का प्रमाण वेद ब्राह्मण विषय में लिखा है उस को वही पुरुष समझ
सकता है कि जिस ने उन ग्रंथों की शैली देखी हो । विना पढ़े सब
विद्या किसी को नहीं आ जाती। और जिन्हों ने उन शास्त्रों में अभ्या-
स ही नहीं किया वे ही ऐसा अनर्गल लिख सकते हैं कि गोतम और
कणाद के तर्क न्याय से अपने प्रश्नों का प्रमाणिक उत्तर न पाया इ-
त्यादि । अब राजा जी को शास्त्रों में अभ्यास करना अवश्य हुआ क्यों-
कि उन के प्रश्नों का उत्तर कोई नहीं दे सकता । और स्वामी जी
महाराज जो किसी दूसरी विलायत का तर्कन्याय सीख भी लेते तो क्या
आश्चर्य और कौनसा यह बुरा काम था और जो सीख लेते तो अपने
ग्रन्थों में भी प्रमाण के लिये अवश्य लिखते वा लिखवालेते। इस से
स्पष्ट विदित होता है कि राजा जी ने ही उन विलायतियों से तर्क न्याय
कुछ पढा नहीं तो इस का प्रसङ्ग ही क्या था । ठीक है—यादृशी भा-
वना यस्य बुद्धिर्भवति तादृशी । इन के प्रश्नों का उत्तर जब ऋषि मु-
नियों के ग्रन्थों से भी न हुआ तो सब ऋषियों से बढ़ के राजा जी हो
गये इस से स्पष्ट सब महात्मा ऋषि लोगों की निन्दा आ जाती है। नि-

वे० २ पृष्ठ ६ पं० ४ (फ़रङ्गिस्तान के विद्वज्जन मण्डली भूषण काशीराज स्थापित पाठशालाध्यक्ष डाक्टर टीबो साहब बहादुर को दिख लाया बहुत अचरज में आये और कहने लगे हमतो स्वामीजी महाराज को बड़ा पंडित जानते थे पर अब उनके मनुष्य होने में भी संदेह होता है तब तो भ्रमोच्छेदन को भ्रमोत्पादन कहना चाहिये) बस अब तो राजाजी का पक्ष दृढ़तर सिद्ध हो गया होगा क्योंकि जब उक्त महाशय साहब ने स्वामीजी के मनुष्य होने में भी संदेह और भ्रमोच्छेदन का भ्रमोत्पादन नाम होने की साक्षी दी है फिर क्या चाहिये क्योंकि महाशयों की साक्षी भी गंभीर आशय युक्त होती है क्या ऐसी साक्षी को कोई भी मनुष्य मानेगा कि स्वामीजी के मनुष्य होने में भी संदेह है। निवे० २ पृष्ठ ७ पं० २० डाक्टर टीबो साहब की साक्षी का परामर्श यह है देखिये चित्त धर के (दयानन्दसरस्वती सिवाय एक उपनिषद् के ब्राह्मण और उपनिषद् ग्रंथों को छोड़ देते हैं और केवल संहिताओं को प्रमाण मानते हैं) इस का उत्तर तो भ्रमोच्छेदन के पृष्ठ ११ पं० २० में यह स्पष्ट लिखा है (परंतु जो २ वेदाऽनुकूल ब्राह्मण ग्रन्थ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता हूं) जो उक्त साहब ध्यान देकर देखते तो सिवाय एक उपनिषद् की इत्यादि विरुद्ध साक्षी क्यों देते। निवे० २ पृष्ठ ७ और इस विषय से आगे जो २ उक्त साहब ने लिखा है उस २ का उत्तर इसी उत्तर के आगे भ्रमोच्छेदन में लिखा है। निवे० २ पृष्ठ ८ पं० १८ (निःसन्देह दयानन्दसरस्वती जी को अधिकार नहीं कि कात्यायन के उस वचन को प्रक्षिप्त बतावें जिस के अनुसार मंत्र और ब्राह्मण का नाम वेद सिद्ध होता है ऐसे तो जो जिस किसी वचन को चाहे अपने अविवेक कल्पित मत से विरुद्ध पाकर प्रक्षिप्त कह दे) मुझ को अपनी अल्प बुद्धि से आज तक यह निश्चय था कि सत्याऽसत्य

विचार करने का अधिकार सब विद्वानों को है जो यह राजाज्ञावत् डाक्टर टीबो साहब की संमति सत्य हो तो ऐसा होजाय किंतु जो केवल एक डाक्टर टीबो साहब नेही ठेका लिया हो कि अन्य सब को अधिकार है केवल स्वामी जी को नहीं कि कौन मक्षिप्त और कौन नहीं ऐसा विचार करें जो ऐसा तो डाक्टर टीबो साहब को सम्मति देने और खंडन मंडन का अधिकार किसने दिया है हम भी पूछ सकते हैं अहो आश्चर्य्य इस सृष्टि में कैसी २ अद्भुत लीला देखने में आती है। निवे० २ पृ० ९ पं० ५ (सो मेरा तो अभिप्राय इतना ही है कि यदि ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार जमदग्नि आदि का अर्थ योंही माना जावे तो संहिता के समान ब्राह्मणों को भी वेद भाग अथवा मानीय मानने में उन्हीं ब्राह्मण ग्रंथों की युक्तियां क्यों न मानी जावें) जो इस बात का प्रमाण किया जावे तो यास्क मुनि कृत निघंटु निरुक्त पाणिनि मुनि कृत अष्टाध्यायी पतंजलि महामुनि कृत महाभाष्य और पिंगला चार्य्य कृत पिङ्गल सूत्र वेदों के भाष्य वा टीका आदि को भी वेद क्यों न माना जावे क्योंकि जैसे शतपथादि ग्रंथों से वेदस्थ जमदग्नि आदि शब्दों के अर्थ चक्षु आदि माने जाते हैं वैसे ही निघंटु और निरुक्त आदि से भी वैदिक शब्दों के संज्ञा और निर्वचन व्याकरण से शब्द अर्थ और सम्बन्ध और पिङ्गल सूत्रों से गायत्र्यादि छन्द षड्जादि स्वर आदि की व्याख्या वेदों से अविरुद्ध मानी जाती है तो इन की वेदसंज्ञा कौन कर सकेगा। निवे० २ पृष्ट ९ पं० १० सो यहां भी मेरा तो अभिप्राय इतनाही है कि वेद के नाम से मंत्र भाग अर्थात् संहिता और ब्राह्मणों को मान कर जहां वेदों को अपरा कहा जाय वहां मंत्र और ब्राह्मणों का कर्म्म काण्ड और जहां वेदों को परा कहा जाय वहां मंत्र और ब्राह्मणों का ज्ञान काण्ड मानना चाहिये) निवे० १ पृष्ट ११ पं० १०

(इस का अर्थ सीधा २ यह मान लेवें कि आप के चारों वेद और उन के छओं अङ्ग "अपरा" हैं जो "परा" उस से अक्षर में अधिगमन होता है अपना फिरावट का अर्थ वा अर्थाभास छोडें) निवे० १ पृष्ठ १२ पं० २० (नोट) कि चारों वेद संहिता और उन के छओं अङ्ग अपरा हैं परा उन के सिवाय अर्थात् उपनिषद् हैं) मुझ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहां क्यों राजाजी ने अपने पूर्व लेख से अपर लेख को विरुद्ध लिखा देखो पहिले निवेदन में चारों वेद और छओं अङ्गों को अपरा और उपनिषदों को परा विद्या मानी थी औ दूसरे निवेदन में चारों वेदों के कर्मकाण्ड को अपरा और उन के ज्ञानकाण्ड को परा विद्या मानी और दोनों निवेदनों का अभिप्राय यही है कि मंत्र भाग संहिता और ब्राह्मणभाग को वेदसंज्ञा मानें इसी लिये इतना परिश्रम उठाया और नोट में चारों वेद संहिता अर्थात् मंत्र संहिता ओंही को वेद मान कर ब्राह्मणों को वेद संज्ञा में लिखना भूल गये दृष्टि कीजिये (तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो अथर्ववेदः) राजाजी के इस लेखने उन्ही के अभिप्राय का निराकरण कर दिया इस को न लिखते तो अच्छा था क्योंकि इस लेख में ऋग्यजुः साम और अर्थव चार शब्द वाच्य मंत्र भाग संहिताओं ही के साथ चार वार वेद शब्द का पाठ है ऐतरेय शतपथ छांदोग्य ताराड्य आदि और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को उस वचन में न परा न अपरा में गणना और न ऐतरेय आदि शब्दों के साथ वेद नाम का पाठ है इस लिये यह पूर्वा पर विरुद्ध लेख है। निवे० २ पृष्ठ ६ पं० १४ (ऐसा ही आजतक वैदिक हिंदू परम्परा से मानते चले आये हैं) यहां भी मैं राजाजी से यह पूंछता हूं कि परंपरा और आजतक इस वाक्यावली का अभिप्राय सृष्ट्युत्पत्ति से लेकर आजतक का समय लिया जाय वा जैसा कि चार पां-

च पीढ़ियों में परंपरा हो जाती है वैसो ग्रहण की जाय जो प्रथम पक्ष है तो वैदिक के साथ आर्य्य शब्द लिखना उचित था अर्थात् वैदिक आर्य्य और जो चार पांच पीढ़ी की परम्परा अभिप्रेत है तो लोकाचार से भी वैदिक हिन्दू लिखना ठीक नहीं क्योंकि भारतवर्ष वासी मनुष्यों की हिन्दू संज्ञा सिवाय यवन ग्रन्थ और यवनाचार्यों की पाठशाला में पठन पाठन संसर्ग के विना राजा जी को कहीं न मिलेगी और ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमांसा पर्य्यन्त संस्कृत ग्रन्थों में तो एतद्देश का नाम आर्य्यावर्त्त और इस में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य वा ब्राह्मण आदि संज्ञा ही मिलें गीं परन्तु यह राजा जी का स्वात्मानुभव वा इस देशियों पर द्वेष अथवा आर्य्यावर्त्त देश से भिन्न देशस्थ विलायतियों से शिक्षा पाकर बोध हुआ होगा । यह साधारण बात नहीं किन्तु जो यह वैदिक शब्दों के साथ हिन्दू शब्द का परंपरा में आजतक पढ़ देना । सो राजा जी को विदेशियों की विद्या और शिक्षा का अनुपम फल है । निवे० २ पृ० १० पं० ६ (भला आप के) (शिव प्रसाद के) एक सहज से प्रश्न का तो उत्तर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से बना ही नहीं उत्तर के बदले दुर्वचनों की दृष्टि की यदि काशी जी के पण्डित उन से शास्त्रार्थ करने को उद्यत भी हों तो उत्तर के स्थान में उन्हें वैसे ही दुर्वचन पुष्पांजलि का लाभ होगा इस से अतिरिक्त उसमें से कुछ भी सार नहीं निकले गा) इस पर मैं अपनी बुद्धि के अनुसार इतना ही लिखता हूं कि जो श्री युत बाल शास्त्री जी श्रीमत्पंडितवरधुरंधरअज्ञानतिमिरनाशनैकभास्कर विशेषण युक्त ऐसा कहते हैं और ऐसा निश्चय हो तो स्वामी जी से उनके बडे २ गंभीराशय प्रश्नों के उत्तर कभी न बन सकें गे फिर इस से मेरी और अन्य लाखह किं वा करोड़ह मनुष्यों की यह

इच्छा है कि जो कोई विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पक्ष को वेदादि शास्त्र द्वारा निरस्त कर देतो उन को क्या ही लाभ नहो पुनः उक्त महाशय इस में क्यों विलम्ब कर रहे हैं और दुर्वचन पुष्पांजलि विषय में इतना ही मैं लिखता हूं कि काशीस्थ लोगों ने दूषणमालिका, दयानन्दपराभूति, चर्मकार भी स्वामी जी से उत्तम गाली सहस्रनामआदि पुस्तक और दण्डनीय, आदि विज्ञापन समाचारों में छपवाया तथा ताली शब्द आदि और जैसा असभ्य अनर्थ लेख स्वामी जी पर किया है और स्वामीजी ने सम्वत् १९२६ के शास्त्रार्थ में किस को गाली प्रदान वा दुर्वचन पुष्पांजलि की थी और जैसे पक्षपात क्रोधरहित होने के लिये स्वामी जी को लिखते हैं तो राजा जी ने पक्षपात और क्रोधयुक्त स्वामी जी को कब देखा था भला क्या पूर्वोक्त तो सुवचन पुष्पांजलि है और स्वामी का लेख दुर्वचन पुष्पांजलि कहा जा सकता है डाक्टर टीबो साहब बहादुर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मनुष्य होने में भी संदेह लिखते हैं क्या डाक्टर टीबो साहब को अपने सहीस आदि नौकरों के तो मनुष्य होने में कुछ भी संदेह नहीं किन्तु केवल स्वामी जी के मनुष्य होने में सन्देह करते हैं क्या यह बात अद्भुत गंभीराशय और असंगत नहीं है अहो क्या ऐसे २ लेख को भी बुद्धिमान् लोग अच्छा समझेंगे धन्य हैं! श्रीयुत शिव प्रसाद जी वादी और धन्य हैं! उन के साक्षी अर्थात् श्रीमज्जगत् पूज्य स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी श्रीमत् पण्डित वर धुरंधरअज्ञानतिमिरनाशनैकभास्करबालशास्त्रीजीमहाराज आर्यजन और विद्वज्जन मण्डलीभूषण काशीराजस्थापित पाठशालाध्यक्ष डाक्टर टीबो साहब बहादुर योह्यपियन् कि जिन्हों ने परस्पर मिल कर अपना अभीष्टमत प्रकाशित किया

है क्या भला ऐसे २ महाशयों के साम्हने मेरा लेख हासास्पद न होगा और क्या ऐसे २ महात्माओं की साक्षी होने पर राजा जी के विजय होने में किसी को संदेह भी रहा होगा वाह वाह वा !!! जो कोई पर पक्ष निषेध और स्वपक्ष सिद्ध करे तो ऐसी ही बुद्धिमत्ता से करे क्या सहायक अनुमति दायक भी ऐसे ही होने योग्य हैं जहां अर्थी ही साक्षी और न्यायाधीश हों वहां जीत क्यों न होवे क्यों न हों क्या यही सत्पुरुषों का काम है कि जहां तक बने दूसरे की निन्दा अपनी स्तुति करनी अपना सुकर्म समझना हां मैं भी तो राजा शिवप्रसाद जी और स्वामी विशुद्धानन्दसरस्वती जी वा बाल शास्त्रीजी और डाक्टर टीवो साहब बहादुर साक्षी आदि महाशयों के समान स्वामीजी की मनमानी निन्दा और अप्रतिष्ठा करने में तत्पर होता जो उनके प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव न जानता होता उनकी निन्दा और अपमान करने में कमती कभी करता परन्तु वाल्मीकि मुनि ने कहा है कि (सहवासी विजानीयाच्चरित्रं सहवासिनाम्) विना किसी के संग किये उसके गुण दोष विदित नहीं हो सकते संवत् १९ २८ से १९ ३७ के वर्ष पर्यन्त मेरा और स्वामीजी का समागम हुआ है जितने वर्ष वा महीने स्वामीजी का सत्संग मैंने किया है और यथा बुद्धि थोड़े से वेद भी देखे हैं उतने दिन और उतने मुहूर्त भी उनका समागम राजाजी आदि ने न किया होगा नहीं तो इतना अटाटूट विरोध कभी न करते । देखिये कै एक बड़े २ सेठ साहूकार रईस बुद्धिमान् पण्डित सज्जन लोग राजे महाराजे स्वामीजी को अत्यन्त मानते श्रद्धा करते और उपदेश का भी स्वीकार करते हैं और बहुतेरे विरुद्ध भी हैं तथापि कभी किसी का पक्षपात किसी से लोभ किसी का भय किसी की खुशामद किसी से छल वा किसी से धन हरने का उपाय

वा किसी से स्वप्रतिष्ठा की चेष्टा आदि अशिष्ट पुरुषों के कर्म करते इन को मैंने कभी नहीं देखा और क्या जैसी सब की सत्य बातें माननी और असत्य न माननी स्वामी जी की रीति है वैसी ही राजा जी आदि को मानने योग्य नहीं है परंतु इतने पर भी मैं बड़े आश्चर्य्य में हूं कि राजा जी आदि महाशय निष्कारण ईर्षा और परोत्कर्षासहन रूप यानारूढ़ हो कर स्वामी जी की बुराई करने में बढ़ते ही चले जाते हैं न जाने कब और कहां तक बढ़ेंगे क्या इसका फल आर्य्यावर्तादि देशों की अनुन्नति का कारण न होगा क्यों न यह घर की फूट रूपी रसास्वादन का प्रवाह दुर्योधन रूप हलाहल सागर से बहता चला आता हुआ आर्य्यावर्तस्थ मनुष्यों के अभाग्योदयकारक प्रलय को प्राप्त अबतक न हुआ क्यों इस को परमेश्वर अपने कृपाकटाक्ष से अब भी नहीं रोक देता कि जिस से हम सब सर्वतन्त्र सिद्धान्त रूप प्रेमसागरामृतोदधि में स्नानकर त्रिविध ताप से छूटकर परमानन्द को प्राप्त हों जैसे द्वीप द्वीपान्तर के वासी मुसलमान जैन ईसाई आदि मनुष्य अपने स्वदेशी और स्वमतस्थों को आनन्दित कर रहे हैं क्या ऐसे हम लोगों को न होना चाहिये प्रत्युत सब देशस्थ समग्र मनुष्यादि प्राणिमात्र के लिये परस्पर उपकार विद्या शुभाचरण और पुरुषार्थ कर अपने पूर्वज कि जिन महाशय आर्यों के हम सन्तान हैं, उनका दृष्टान्त अर्थात् उपमेय न हों और हों जैसी उन की कीर्त्ति और प्रतापरूप मार्त्तण्ड भूगोल में प्रकाशित होरहा था उन का अनुकरण क्यों न करें और इस में आश्चर्य्य कोई क्यों मानें कि राजाजी और उन के अनुयायी साक्षी स्वामीजी को अविद्वान् पशु अंधे आदि यथेष्ट शब्दों से निन्दा करते हैं मैं निश्चित कहता हूं कि स्वामी जी की निन्दा अप्रतिष्ठा और विरोधता किस ने नहीं की काशी में संवत् १९२६ वें वर्ष में उनपर हल्ला किया संखिया मिलाकर पान

बीडा दिया बुरी बुरी निन्दा के पुस्तक और विज्ञापन दिये कई ठिकाने मारने को आये ऊपर पत्थर और धूल फेंकी जिले बुलंद शहर करणवास के समीप जहां स्वामीजी रहते थे वहां किसी ने रात के १ बजे के समय १० आदमी तलवार और लट्ठ लेकर मारने को भेजे कई नास्तिक कहते कई क्रश्चीन बतलाते कई क्रोधी और कई पशुवत् नीच विशेषण देते कई उनका मुख देखने में पाप बतलाते और पास जाने को अच्छा नहीं कहते कोई कलिका अवतार कोई कल मरते आजही मरजाय तो अच्छा कई मजिष्ट्रेटों के कान भर व्याख्यान वंद करादेने में प्रयत्न कर चुके और कोई इन की बनाये पुस्तक भी हाथ में न लेना न देखना कई अपने बाग बगीचों में उन का रहना भी स्वीकार नहीं करते कई वेश्या का मुख देखने सङ्ग करने और पुंसि मैथुनाचरण में भी अपना धन्य जन्म मानते और औरों को उत्साहित करते हैं और स्वामीजी का दर्शन और सङ्ग उस से भी बुरा बतलाते हैं कई स्वामीजी और स्वामीजी के उपदेश मानने वालों को महानरक में गिरना चितलाते हैं । आप गौतम और कणादादि महाशयों से अपने को बुद्धि सागर ठहराते और स्वामीजी को निर्बुद्धि सहज प्रश्नों के उत्तर के अदाता कहते और कई चमार चांडाल आदि में विद्वत्ता और मनुष्य होने की शंका नहीं करते और स्वामीजी में विद्वत्ता के होने और मनुष्य पन में भी शंका बतलाते हैं कोई रेल का भाड़ा भी नहीं लगता ऐसा कहते हैं अब कहां तक इस लंबी गाथा को कहूं मैं ऐसी बातें सुनता और लिखता हुआ थकित होगया क्या ये पूर्वोक्त बातें आर्य्यावर्त्त के दौर्भाग्य के कारण नहीं हो रही हैं तथापि धन्य है स्वामीजी को इतने हुए पर भी सनातन वेदोक्त आर्य्योन्नति के यत्नों से विरक्त न होकर परोपकार से अपना जन्म सुफल कर रहे हैं भला जो धर्म्म और परमात्मा की कृपा न होती और पर मत द्वेषी स्वमतानुरागी क्षुद्राशय लोगों का राज्य होताता स्वामीजी

का आज तक शरीर बचना भी दुस्तर न होजाता क्या जो आर्य्य लोग भी मुशलमान आदि के तुल्य होते तो अब तक स्वामीजी का मुख और हस्त वेदभाष्यादि पुस्तक लिखने के लिये आजतक कुशल रह सकते? और जो स्वामीजी में पक्षपात राहित्य सत्यता विद्वत्ता शान्ति निन्दा स्तुति में हर्ष शोक रहितता न होती और विमल विद्या प्रगल्भता धार्मिकता आप्तत्वादि शुभ गुण न होते तो ऐसे २ सनातन वेदोक्त सत्य धर्मोपदेशादि प्रशंसनीय आर्य्योन्नति के दृढ़ कारण प्रकाशित और सुस्थिर कभी न कर सकते क्योंकि देखो आर्य्यावर्त्त में प्रशंसनीय महाशय विद्वानों के विद्यमान रहते भी आर्य्यावर्तीयमनुष्यों की वेदोक्त धर्माढ्यता प्राचीन अभ्युदयोदय प्रच्छन्न क्यों रहजाता क्या प्रत्यक्ष में भी भ्रम है कि देखिये जो हम आर्यों को विना आसमानी किताब वाले वुत्परस्त नालायक इन के मत का कुछ भी ठिकाना नहीं आदि आक्षेपों से जैन मुशलमान और इसाई लाखह क्रोड़ह बहका के अपने मत में मिलाते और कहते थे कि आओ हम से वाद विवाद करो हमारा मजहब सच्चा और तुह्मारा झूंठा है वेही अब स्वामीजी के सामने वेदादि शास्त्रों और तदुक्त आर्य्यधर्म का खंडन तो दूर रहा परंतु वाद करना भी असह्य समझते और कहते हैं कि आप हम पर प्रश्न मत कीजिये डरते हैं स्वामीजी के सन्मुख तो ऐसा है परंतु जिन्हों ने स्वामीजी के ग्रन्थ देखे और उन का समागम यथावत् किया है उन के भी साम्ने वे विजयवंत नहीं होसकते इत्यादि जो राजाजी आदि स्वामीजी के स्तुत्य गुण कर्म स्वभाव जानते तो उन के साथ ऐसा विरुद्ध वर्त्तमान कभी न करते सर्व शक्तिमान् सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापक सर्वनियन्ता जगदीश्वर सब आर्य्यों के आत्माओं में परस्पर प्रीति गुण स्वीकार दोष परिहार वेद विद्योन्नति रूप कल्पवृक्ष और चिन्ता मणि को सुस्थिर करे जिस

से सब आर्य्य भाई उस को परस्पर प्रेम और उपकार रूप सुन्दर जल से सींच कर उस के आश्रय से प्राचीन आर्य्य पदवी को पाकर आनन्द में सदा रहैं और सब को रक्खें ॥

राजाजी का बनाया इतिहास मैंने देखा तो अद्भुत बातें दिखाती हैं इन से यह भी प्रसिद्ध है कि जो स्वश्लाघा और अभिमान करेगा तो इतना ही करेगा निम्न लेख से यह बात सब को विदित होजायगी क्योंकि इङ्गित चेष्टित से मनुष्य का अभिप्राय गुप्त नहीं रह सकता राजाजी का कुछ अभी ऐसा वर्त्तमान है सो नहीं किन्तु (स्वभावो नान्यथा भवेत्) जैसा स्वभाव मनुष्य का होता है वह छूटना दुस्तर है जो उन्हों ने इतिहास तिमिरनाशक ग्रंथ बनाया है उस को कोई विद्वान् पक्षपात रहित सज्जन पुरुष ध्यान देकर देखे तो राजा जी की मानस परीक्षा और सौजन्य विदित अवश्य होजावे कि इन का क्या अभीष्ट है उस में अप्रमाण वेदादिशास्त्राभिप्रायशून्य बहुत बातें हैं और कुछ अच्छी भी हैं जो अच्छी हैं उन का स्वीकार और जो अन्यथा हैं उनके संक्षेप से दोष भी प्रकाशित करता हूं जैसा मुझ को विदित होता है इतिहास तिमिर नाशक पृष्ठ १ पङ्क्ति ११ (बाप दादा और पुरखा तो क्या हम इस ग्रन्थ में उस समय से लेकर जिस से आगे किसी को कुछ मालूम नहीं आज पर्य्यन्त अपने देश की अवस्था लिखने का मंसूबा रखते हैं) राजा जी थोड़ासा भी शोचते तो इतना अपना गौरव अपने हाथ से लिखने में अवश्य कम्प जा कर रुक के यथार्थ बात को समझ सकते । क्या अपने पुरखों से स्वयं उत्तम और सब आर्य्यावर्त्त वासियों को इतिहास ज्ञान विषय में निकृष्ट अज्ञानी कर स्वश्लाघी स्वयं नहीं बने हैं क्या कोई भी पूर्ण विद्वान् स्वमुख से अपनी कीर्त्ति को कह सकता है । यह सच है कि जितना २ विद्याविनय मनुष्य को अधिक होता है उतना २ वह सुशील

निरभिमानी महाशय होता और जितना २ वह कम होता है उतनी २ उसको कुशीलता अभिमान और स्वआशयता होती है। इति० पृ० १—१६ (पुराना हाल जैसा इस देश का बेठौर ठिकाने देखने में आता है विरले किसी दूसरे देश का मिले गा) वाह वाह वाह !!! न जाने किस देश की पाठशाला में इतिहासों को पढ़ के राजा जी को अपूर्व विज्ञान हुआ क्या यूरोप अमरिका एफरीका आदि देशों के पूर्व इतिहासोंसे भी आर्य्यावर्त्त देश का प्राचीन इतिहास बुरा है यह भी इन का लेख आर्य्य लोगों को ध्यान में रखना चाहिये। इतिहा० पृष्ठ ३ पङ्क्ति २ (आगे संस्कृत श्लोक बनाते थे अब भाषा में छन्द और कवित्त बनाते हैं क्योंकि गद्य का कण्ठस्थ रखना सहज है निदान ये भाट इसी में बड़ाई समझते हैं) क्या ही शोक की बात है कि मनु वाल्मीकि व्यास प्रभृति ऋषि महर्षि महात्मा महाशय ब्राह्मण लोगों को तो राजा जी भाट ठहराते हैं और आप महात्माओं के निन्दक और उपहास कर्त्ता हो कर नकली की पदवी को धारण करते हैं विदित होता है कि आर्य्यावर्त्तीय धार्म्मिक आप्त पुरुषों की निन्दा और विदेशियों की अत्युक्ति सदृश स्तुति ही से राजा जी प्रसन्न बनते हैं। इतिहा० पृष्ठ ४ पं० ३० (हाय हमारे देश में इतना भी कोई समझने वाला नहीं) सिवाय आप के ऐसी २ गूढ़ बातों के मर्म्म को कौन समझ सकता है तब ही तो आप सब से बड़ा मंसूबा बांध कर इतिहास लिखने को प्रवृत्त हुए। इतिहा० पृष्ठ १० (बहुतेरे हिंदू यह भी कहें गे कि जो बात पोथी में लिखी गई और परंपरा से सब हिंदू मानते चले आये भला अब वह क्यों कर झूंठ ठहर सकती है) भला यहां तो हिंदुओं की परंपरा का तिरस्कार राजा जी कर चुके और दोनों निवेदनों में ब्राह्मण पुस्तकों को वेद मानने के लिये स्वीकार किया है ठीक है मतलब सिंधु ऐसी ही चतुराई से पूरा करना

होता है। इतिहा० पृष्ठ १२ पं० १ से लेकर पृष्ठ १४ पं० ११ तक बौद्ध जैन हिंदुओं के मत विषयक बातें लिखी हैं इस से विदित होता है कि राजा जी का मत बौद्ध जैनी ही है। इसी लिये अपने मत की प्रशंसा वैदिक मत की निन्दा मनमानी की है। यह इन को अच्छा समय मिला कि कोई जानें नहीं और वैदिक मत की जड़ उखाड़ने पर सदा इन की चेष्टा है पुनः स्वामी जी जो सनातन रीति से वेदों का निर्दोष सत्य अर्थ टीक२ प्रकाशित कर रहे हैं इन को अच्छा कब लग सकता है इसी लिये निवेद-नों में भी अपनी सदा की चाल पर राजा जी चलते हैं इस में क्या आ-श्चर्य है। इतिहा० पृष्ठ १५ पं० १ (हिंदुओं की प्राचीन अवस्था०) यह बड़ा अनर्थ राजा जी का है कि आर्यों को हिंदू और पारस देश से आये हैं। पहिली बात तो इनकी निर्मूल है क्यों कि वेदों से लेके महाभारत तक किसी ग्रन्थ में आर्यों को हिंदू नहीं लिखा कौन जाने राजा जी के पुरखे पारस देश से ही इस देश में आये हों और उन की परंपरा से स्वदेश पारस का संस्कार अबतक चला आया हो क्या यह बात असंभव है कि इस आर्य्यावर्त्त ही से कोई मनुष्य पारस देश में जा रहे हों क्योंकि पारस देश में उत्पन्न हुई माद्री पाण्डुराज से विवाही थी उसी समय वा आगे पीछे वहां से यहां और यहां से वहां आ जा रहने का संभव हो सकता है और क्या जो पारस देश से आकर ही बसे होते तो पारसी लोगों वा ईरान वालों के प्राचीन इतिहासों में स्पष्ट न लिखते ? इतिहा० पृष्ठ० १५ पं० ५ (असुर को अहुर) नोट पं० १३ यहां भी ऋग्वेद के आरम्भ में असुर का अर्थ सुर लिया है और उसे सूरज का नाम माना है। असुरः प्राण दाता। असुरः सर्वेषां प्राणदः। असुर राक्षस के लिये तभी से ठहराया गया जब से सुर, देव, देवता के लिये ठहरा इत्यादि) धन्य ! है (मुखमस्तीति वक्तव्यं दश हस्ता हरीतकी)

इस में तो कुछ दोष नहीं कि असुर को वे पारसी लोग अहुर कहैं परन्तु जो बातें ऋग्वेद के नाम से राजा जी ने लिखी हैं सब निर्मूल हैं क्यों-कि ऋग्वेद के आरम्भ में तो (असुरः प्राणदाता) (असुरः सर्वेषां प्राणद:) ये नहीं हैं किन्तु ऐसा पाठ ऋग्वेद भर में कहीं नही है। क्या आश्चर्य है कि ईरान वाले जिद्द से देव को राक्षस कहते हों। इतिहा० पृष्ठ १५ पं०२ (हिंदू अपने तईं दूसरी जाति के लोगों से जुदा रहने के निमित्त आर्य पुकारते थे और इन्ही के बसने से यह देश हिमालय से विन्ध्य तक आर्य्यावर्त्त कहलाया पारस देशवाले भी आर्य्य थे वरन इसी कारण उस को अब भी ईरान कहते हैं) क्या अद्भुत लीला है ईरान वाले तो अब तक ईरानी, परस वाले पारसी ही बने रहे आर्य्य नाम वाले क्यों न हुए। कैसा झूंठ लिखा है कि अपने जुदा रहने के लिये आर्य्य पुकारते थे। जो ऋग्वेद की कथा भी राजा जी ने सुनी होती तो (विजानीह्यार्य्यान्येच दस्यवः) (उत शूद्रे उतार्य्ये) इन का अर्थ यही है (आर्य्य) श्रेष्ठ और (दस्यु) दुष्ट (आर्य्य) द्विज और (शूद्र) अनार्य को कहते हैं इस को जानते तो ऐसा अनर्थ क्यों लिख मारते जो ईरान से आर्य्य हो जाता है तो (आरा) और (अरि) आदि शब्दों से आर्य्य शब्द सिद्ध करने में किसी को राजा जी अटका सकें गे। ऐसे बहुत पुरुष अपनी प्रशंसा के लिये विदेशियों की झूंठी खुशामद किया ही करते हैं। इतिहा० पृष्ठ १५पं० २८ (ईरान की पुरानी पारसी भाषा में एक प्रकार की संस्कृत थी अर्थात् उसी जड़ से निकली थी जिस से संस्कृत निकली है) भला पारसी पढ़े बिना ऐसी २ गुप्त जड़ों की खोज राजा जी न होते तो कौन करता जो थोड़ासा भी विचार करते तो श्रेष्ठ गुणों से आर्य्य और एक किसी मनुष्य का नाम है आर्य्य उस से और इस देश वालों से क्या संबन्ध हो सकता है जिन ने दृष्टान्त संस्कृत पुरानी

पारसी के उदाहरण दिये हैं ये सब संस्कृत से पुरानी पारसी बनी है यह ठीक है क्योंकि परस देश का नाम निशान भी न था तब से आर्य्य और आर्य्यावर्त्त देश है। जब पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया है तब यवन देश के सब राजा आये थे उसी ईरान का राजा शल्य भी महाभारत युद्ध में आया ही था इस लिये राजा जी का ऐसा अनुभव केवल पारसी भाषा पढ़ने से हुआ है संस्कृत से नहीं। इतिहा॰ पृष्ठ १८ पं॰ २ से (ये आर्य्य उस समय सूर्य के उपासक थे वेद में सूर्य्य की बड़ी महिमा गायी है हिंदुओं का मूल मंत्र गायत्री इसी सूर्य की बन्दना है विष्णु इसी सूर्य्य का नाम है) राजाजी का स्वभाव सब से विलक्षण है! कोई कहता हो दिन तो वे रात कहें यद्यपि वेदों में सूर्य्य शब्द से परमेश्वर आदि कई अर्थ प्रकरण से भिन्न २ कहे हैं परंतु उपासना में सूर्य्य शब्द से जिस को गायत्री मंत्र कहता और जो व्यापकता से विष्णु है वहां परमेश्वर ही लिया है अन्यत्र भौतिक। इतिहा॰ पृष्ठ १८ पं॰ १ (आकाश को इन्द्र ठहराया) वेदों में इन्द्र शब्द से आकाश का ग्रहण कहीं नहीं किया है। हां राजाजी ने अपनी कल्पना से समझा होगा इतिहा॰ पृष्ठ १८ पं॰ ३ (गाय, बैल, घोड़ा, भेड़, और बकरी इत्यादि का बलि देते थे और उन का मांस भून भून और उबाल २ कर खाते थे—नोट ऋग्वेद में एक अश्वमेध का हाल यों लिखा है घोड़े के आगे रङ्ग बिरङ्ग की बकरियां रख कर उस से अग्नि की परिक्रमा दिलाई और फिर खम्भे से बांध कर और फरसे से काट कर उस का गोस्त सींक पर भूना और उबाला और गोले बना कर खागये) हाय ऐसे अनर्थ लेख से वेद और आर्य्यों की निन्दा कर राजाजी ने संतुष्टि क्योंकी क्योंकि गाय आदि पशुओं का मारना वेदों में कहीं नहीं लिखा न शराब का पीना और अश्वमेध का ऐसा हाल कहीं भी नहीं लिखा

राजाजी ने वाम मार्गियों के सङ्ग से ऐसी बात कि जिस से वेदों की निन्दा हांसी हो लखी होगी। इतिहा० पृष्ठ १६ पं० १२ (वर्ण भेद शूरू में दो ही रहा होगा अर्थात् गोरा और काला वर्ण का अर्थ रङ्ग है) वाह क्या चतुराई की लटा झलक रही है क्या गोरे और काले के बीच में कोई भी रङ्ग नहीं होता और (वर्ण वाहुः पूर्वसूत्रे) वर्ण नाम अक्षर वर्ण नाम स्वीकार अर्थ क्या नहीं होते (स्वार्थी दोषन्नपश्यति) हां यह हो तो हो कि विना गोरों की प्रशंसा के स्वार्थ सिद्ध क्योंकर होता) इतिहा० पृष्ठ २० से लेके अंगरेज के पैर पकरने अर्थात् ग्रन्थ की समाप्ति पर्य्यन्त राजाजी ऐसी चाल चलन से चले हैं कि जिस से इस देश की बहुत बुराई और कुछ अन्य देशों की भी वेदादि शास्त्रों की निन्दा और जैनमत की इङ्गित से प्रशंसा और अंगरेजों की प्रशंसा में जानो सब भाटों के प्रपितामह ही बन रहे हैं। क्या ही शोक की बात है कि इतिहास तिमिरनाशक के तीसरे खण्ड में कितनी वडी वेद आदि शास्त्रों और आर्य्य तथा आर्य्यावर्त्त देश की निन्दा लिख कर छपवाई है तो भी राजा जी के चरित्र पर किसी आर्य्य विद्वान् ने विचार कर प्रत्युत्तर नहीं किया मैं ने अल्प सामर्थ्य से (स्थाली पुलाक न्याय) के समान थोड़ासा नमूना राजाजी का दिखलाया है। इतने ही से सब बुद्धिमान् राजा जी के और मेरे गुण दोषों का विचार यथावत् कर ही लेंगे। जिन्हों ने वेद और आर्य्यावर्त्त की गर्हा करनी ही अपनी बड़ाई समझ ली है तो स्वामी जी की निन्दा करें इस में क्या आश्चर्य है सर्व शक्तिमान् परमात्मा परमदयालु सब पर कृपा रक्खे कि कोई किसी की निन्दा न करे सत्य को मानें और झूंठ को छोड़दे मेरा यहां यह अभिप्राय नहीं है कि किसी की व्यर्थ निन्दा करूं वा मिथ्या स्तुति हां इतना कहता हूं कि जितनी जिस की समझ है उतना ही कहे और लिखे

सकता है मेरी धार्मिक विद्वानों से प्रार्थना है कि जो कुछ मुझ से अन्यथा लेख हुआ हो तो क्षमा करें और अपनी प्रशंसनीय विद्यायुक्त प्रज्ञा से उस को शुद्ध कर लेवें इस पर सत्य २ परामर्श का प्रकाश कर आर्य्यों को सुभूषित करें ॥

ऋषि कालाङ्कभूवर्षे तपस्यासितेदले। दित्तिथौ वाक्पतौ ग्रन्थोभ्रमूंछेत्तुमकार्य्यलम् ॥

इत्यनुभ्रमोच्छेदन ॥

॥ विज्ञापन ॥

———०००———

सब सज्जनों को विदित किया जाता है कि श्रीमत् स्वामी दयानन्दसरस्वती जी से राजा शिवप्रसाद जी ने जो कुछ वाद उठाया था उस विषय के प्रथम निवेदन का उत्तर स्वामीजी ने भ्रमोच्छेदन नामक पुस्तक से दिया था कि जो सब सज्जनों को विदित है अब जो राजाजी ने द्वितीय निवेदन दिया है उस पर श्रीमत्स्वामी विशुद्धानन्द जी वा बालशास्त्री जी आदि विद्वानों की सम्मति नहीं है और स्वामी जीने प्रथम ही यह लिखा था कि अब आगे को जबतककिसी पत्र पर विशुद्धानन्द जी वा बालशास्त्री जी की सम्मति न होगी हम उत्तर न देंगे इस लिये इस दूसरे निवेदन का उत्तर एक पण्डित जी ने अनुभ्रमोच्छेदन नामक पुस्तक से दिया है और वैदिक यन्त्रालय में छपवाया है ॥

मैं सुहृदता से प्रकाशित करता हूं कि श्रीयुत राजा शिवप्रसाद जी आदि सज्जन महाशय पक्षपात छोड़ कर इस को देखें और सत्यासत्य का विचार करें कि जिस से परस्पर प्रीति और देशोन्नति यथावत् हो ॥

लाला सादीराम मैनेजर
वैदिक यन्त्रालय, बनारस ।

———

॥ सत्यधर्मविचार ॥

अर्थात्

धर्म चर्चा ब्रह्म विचार

चांदापुर

जो सं १८७७ ई० में

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और मौलवी मुहम्मद क़ासम साहब

और पादरी स्काट साहब के बीच हुआ था

जिसको

मुंशी बखतावर सिंह एडिटर आर्य्यदर्पण ने शोधकर भाषा और उर्दू में

वैदिकयंत्रालय काशी में अपने प्रबंध से छापकर

प्रकाशित किया ॥

संवत १९३७

विज्ञापन।

विदित हो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती वैसे तो वेदों का अत्युत्तम प्राचीन ऋषि मुनियों के प्रमाण सहित संस्कृत और आर्य्य भाषा में भाष्य कर ही रहे हैं परन्तु अब उन्होंने आर्य्य समाजों के कहने से व्याकरण आदि वेदों के अङ्ग और उपाङ्ग आदि को भी अति सुलभ आर्य्य भाषा में प्रकाश करने का प्रारम्भ किया है कि जिन से मनुष्य शीघ्र संस्कृत विद्या को पढ़कर मनुष्य जन्म के समग्र आनन्द को भोगें।

अभी तक निम्न लिखित पुस्तक पठन पाठन विषय सुगम आर्य्यभाषामें प्राचीन रीति से बनाये गये हैं और क्रम से इस वैदिक यंत्रालय में छपते जाते हैं।

१—वर्णोच्चारण शिक्षा। २—संस्कृत वाक्य प्रबोधः। ३—व्यवहार भानुः।

और के संधि विषय आदि ग्यारह ११ पुस्तक अष्टाध्यायी के एक२ विषय पर भाषा में व्याख्या सहित छप रहे हैं।

४—सन्धि विषयः। ५—नामिकः। ६—ताद्धितः। ७—कारकीयः। ८—सामासिकः। ९—अव्ययार्थः।

१०—आख्यातिकः। ११—सौवर.। १२—पारिभाषिकः। १३—उणादिगणः। १४—गणपाठः।

१५—अष्टाध्यायी—यह पुस्तक अलग भी संस्कृत वृत्ति सहित छपेगा॥

१६—निघंटु अर्थात् यास्क मुनि कृतो वैदिक कोशः।

निम्न लिखित पुस्तक इस वैदिक यंत्रालयमें उपस्थित हैं।

पुस्तक	मूल्य	डाक महसूल
१—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित ऋग् और यजुर्वेद भाष्य	२ वर्ष का १०)	
२—केवल ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	५)	।)
३—सत्यार्थ प्रकाशः	२॥)	।)
४—संस्कार विधिः	१॥~)	~)
५—आर्य्याभि विनयः	॥)	~)
६—संध्योपासन संस्कृत और भाषा	।)	)॥
७—संध्योपासन संस्कृत	~)	)॥
८—आर्य्योद्देश्य रत्न माला	~)॥	)॥
९—वेदान्ति ध्वान्त निवारणम्	~)	)॥
१०—भ्रान्ति निवारण	।)	)॥
११—सत्यासत्य विवेक उर्दू	~)	)॥
१२—गौतम अहल्या और इन्द्र वृत्रासुर की सत्यकथा	~)	)॥
१३—वर्णोच्चारण शिक्षा	~)	)॥
१४—संस्कृत वाक्य प्रबोधः	।~)	)॥
१५—व्यवहार भानु	।)	)॥
१६—शास्त्रार्थ काशी संस्कृत व भाषा	~)	)॥
१७—शास्त्रार्थ काशी भाषा व उर्दू	~)	)॥
१८—वेद विरुद्ध मत खण्डन	।)	)॥
१९—स्वामी नारायण मत खण्डन संस्कृत व गुजराती	~)	)॥
२०—स्वामी नारायण मत खण्डन गुजराती	~)	)॥
२१—एमरीका वालों का लेक्चर	~)	)॥
२२ भ्रमोच्छेदन	~)	)॥

सूचना।

सन १८८० ई० से आर्य्य दर्पण जो शाहजहांपुर छपता था और जिस में वेदादि सत्य शास्त्रानुकूल श्रीयुतस्वामी दयानन्द सरस्वती जी के व्याख्यान और नवीनमतों का खण्डन और इन मत वालों से इनका शास्त्रार्थ और आर्य्य समाजों के हाल आदि प्रकाशित होते हैं और जिसका वार्षिक मूल्य डाक महसूल सहित ३।~) है, उर्दू और आर्य्य भाषा नागरी दोनों में यहां की वैदिक यंत्रालय में छपता है॥

॥ ओंखम्ब्रह्म ॥

सत्यधर्म विचार

धर्मचर्चा मेला ब्रह्मविचार चांदापुर * कि जिस में बड़े २ विद्वान् † आर्य्यों ईसाइयों और मुसलमानों की ओर से एक सत्य के निर्णय के लिये इकट्ठे हुए थे सज्जन पाठक गणों के हितार्थ मुद्रित किया जाता है कि जिस से प्रत्येक मतों का अभिप्राय सब पर प्रकाशित हो जावे। सब सज्जनों को किसी मत के क्यों न हों उचित है कि पक्षपात रहित हो कर इस को सुहृदता से देखें।

विदित हो कि यह मेला दो दिन रहा मेले के आरम्भ से पूर्व कई लोगों ने स्वामी जी के समीप जाकर कहा कि आर्य्य और मुसलमान मिलके ईसाइयों का खण्डन करें तो अच्छा है इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह मेला सत्य और असत्य के निर्णय के लिये किया गया है इस लिये हम तीनों को उचित है कि पक्षपात छोड़ कर प्रीति पूर्वक सत्य का निश्चय करें किसी से विरोध करना कदापि योग्य नहीं।

इसके पश्चात् विचार का समय नियत

---

* यहां यह मेला मुंशी प्यारेलाल साहब की ओर से प्रति वर्ष हुआ करता है।

† इस धर्म चरचा में आर्य्यों की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और मुंशी इन्द्रमणि जी ईसाइयों की ओर से पाद्री स्काट साहेब पाद्री नौबिल साहेब पाद्री पार्कर साहेब और पाद्री जानसन साहेब और मुसल मानों की ओर से मौलवी मुहम्मद कासम साहेब

ست دھرم بچار

مباحثہ میلہ خدا شناسی چاندا پور†
سنہ ۱۸۷۷ ع کہ جسمیں علماء و فضلاء ‡ آریہ
دھرم والوں و عیسائیوں و اہل اسلام کے بعرض
تحقیق سچے دھرم کے جمع ہوئے تہے ہدیہ
ناظرین کیا جاتا ہے تا کہ حقیقت حال ہریک
مذہب کا سب پر بخوبی روشن ہو جاوے
سب صاحبوں کو خواہ کسی مذہب یا فرقے
کے ہوں لازم ہے کہ صدق دلسی تعصب کو
الگ رکھکر نہ دیکر اسکو بغور ملاحظہ
فرماویں *

واضح ہو کہ یہہ میلہ صرف دو روز رہا قبل
شروع ہونے میلہ کے بعض صاحبوں نے سوامی
دیانند سرستی جی کے ڈیرہ پر تشریف لیجاکر
فرمایا کہ بہتر ہو اگر اہل ہنود اور اہل اسلام ملکر
عیسائیوں کے مذہب کی تردید کریں سوامی جیجی
جواب دیا کہ اِس میلہ میں مناسب معلوم
ہوتا ہے کہ کوئی کسیکی طرفداری نہ کرے
لیکہ میری سمجھہ میں تو یہہ اچھی بات ہے
کہ ہم اور مولوی صاحبان اور پادری صاحبان
تینوں محبت سے ملکر ست کی تحقیقات
کریں کسی سے برخلافی کرنی واجب نہیں -
اسکے بعد تعین اوقات جلسہ قرار پائے اور

---

† یہاں یہہ میلہ منشی پیاریلعل صاحب
کی کوشش سے ہرسال ہوا کرتا ہے *

‡ اِس مباحثہ میں آریوںکی طرف سے
سوامی دیانند سرستی جی اور منشی اندرمن
صاحب — عیسائیوںکی طرفسے پادری اسکاٹ
صاحب و پادری نوبل صاحب و پادری پارکر
صاحب اور پادری جانسن صاحب - مسلمانوں
کی طرف سے مولوی محمد قاسم صاحب
... سید ... صاحب و چند دیگر

किया गया पादरियों ने कहा कि हम दो दिन से अधिक नहीं ठहर सकते और यही विज्ञापन में भी छापा गया था। इस पर स्वामी जी ने कहा कि हम इस प्रतिज्ञा पर आये थे कि मेला कम से कम पांच और अधिक से अधिक आठ दिन तक रहेगा। क्योंकि इतने दिनों में सब मतों का अभिप्राय अच्छे प्रकार ज्ञात हो सकता है तब इस पर वे लोग प्रसन्न न हुए तब मुन्शी इन्द्रमणि जी ने कहा कि स्वामी जी आप निश्चिन्त रहें सच्चा मत एक दिन में प्रकट हो जावेगा। फिर निम्न लिखित पांच प्रश्नों पर विचार करना सबने स्वीकार किया॥

पहिले दिन की सभा

मुन्शी प्यारे लाल साहब ने खड़े होकर सब से पहिले कहा—

प्रथम ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि जो सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। हम लोगों के बड़े भाग्य हैं कि उसने हम सब को ऐसे राज प्रबन्ध समय में उत्पन्न किया कि जिसमें सब लोग निर्विघ्नता से निर्भय होकर मत मतान्तरों का विचार कर सकते हैं। धन्य है इस आज के दिन को और बड़े भाग्य हैं इस भूमि के कि ऐसे २ सज्जन पुरुष और ऐसे २ विद्वान् मत मतान्तरों के जानने वाले यहां सुशोभित हुए हैं। आशा है कि सब विद्वान् अपने २ मतों की वार्त्ताओं को कोमल वाणी से कहेंगे कि जिन से सत्य और असत्य का निर्णय हो कर मनुष्यों की सत्य मार्ग में प्रवृत्ति हो जावेगी।

پادری صاحبان نے فرمایا کہ ہم دو روز سے زیادہ قیام نہیں کرسکتے اور یہی اشتہار میں مشتہر کیا گیا ہے تب سوامی جی نے فرمایا کہ ہم اس اقرار پر آئے تھے کہ میلہ کم سے کم پانچ روز اور زیادہ سے زیادہ آٹھ روز تک رہیگا کیونکہ اس عرصہ میں سب مذہبوں کا حال اچھی طرح معلوم ہوجاویگا تسپر منشی اندرمن صاحب نے جواب دیا کہ سوامی جی آپ خاطر جمع رکھیں ایک ہی دن میں سچا مذہب معلوم ہو جاویگا - بعدہ وے سوالات جو آیندہ مرقوم ہیں پیش ہوکر منظور کئے گئے *

جلسہ روز اول

بتاریخ ۱۹ مارچ سنہ ۱۸۷۷ ع

منشی پیارے لعل صاحب موجد میلہ نے کھڑے ہو کر آواز بلند یہہ فرمایا—

اول شکریہ پرمیشر کا ادا کرنا چاہئے کہ جو سب جگہہ موجود اور محیط ہے اور یہہ خوش قسمتی ہم لوگوں کی ہے کہ اسنے ہم سب کو ایسے شہنشاہ وقت کے قبضہ میں دیا کہ سب لوگ مذہبی گفتگو دل کھولکر کرسکتے ہیں آج وہ روز مبارک ہے اور خوش نصیبی اس زمین کی ہے کہ صاحبان عالیشان اور علماء واقفکار ہر ایک مذہب کے تشریف فرما ہیں - صاحبوں یہہ دنیا مسافر خانہ ہے زندگی کا کچھہ بھروسا نہیں آجکے روز پرمیشر کے فضل کا ظہور ہے سب صاحبوں نے عالی ہمتی سے قصد کرکے اس جلسہ کو رونق بخش فرمایا اور اپنے اپنے مذہب مقدسہ کی خوبیاں نہایت ملایمت اور شیریں زبانی سے بیان فرماوینگے کہ جنکے کلام اور بیانات سے راہ نجات کا ثمرہ حاضرین جلسہ کو حاصل ہوگا *

इस के पश्चात् जब मुसलमानों और ईसाइयों की ओर से पांच २ मनुष्य और आर्य्यों की ओर से स्वामी जी और मुंशी इन्द्रमणि जी दो ही विचार के लिये नियत किये गये तब मौलवियों और पादरियों ने हठ की कि आर्य्यों की ओर से भी पांच मनुष्य होने चाहियें। इस पर स्वामी जी ने कहा कि आर्य्यों की ओर से हम दोही बहुत हैं तब मौलवियों ने पण्डित लक्ष्मण शास्त्री का नाम अपने ही आप पादरियों से लिखवाना चाहा तब स्वामी जी ने उनसे तो यह कहा कि आप लोगों को अपनी२ ओर के मनुष्यों के लिख वाने का अधिकार है हमारी ओर का कुछ नहीं और पण्डित जी से यह कहा कि आप नहींजानते ये लोग हमारे और तुह्मारे बीच विरोध कराके आप तमाशा देखना चाहते है इस बात के कहने पर भी एक मौलवी ने पण्डित जी का हाथ पकड के उन से कहाकि तुमभी अपना नाम लिखवादो इन के कहने से क्या होता है, तिस पर स्वामी जी ने कहा कि अच्छा जो सब आर्य्य लोगों की सम्मति हो तो इनका भी नाम लिखवादो नहीं तो केवल आप लोगोंके कहने से इनका नाम नहीं लिखा जावे गा, फिर एक मौलवी साहब उठकर बोले कि सब हिन्दुओं से पूछा जावे कि इन दोनों के नाम लिखाने मे सबकी सम्मति है वा नहीं। इस पर स्वामी जी ने कहा कि जैसे आप को सिवाय फ़िर्क़ें सुनत जमात के अहल शिया आदि फ़िर्क़ों ने सम्मति करके नहीं बिठलाया और जैसे कि पादरी साहब को रोमन कैथोलिक फ़िरकों ने नियत नहीं किया। ऐसे ही आर्य्य लोगों में भी बहुत सोंकी हमारे बिठलाने में सम्मति

بعد ازاں جب کہ اہل اسلام اور اہل عیسائیوں کیطرف سے پانچ پانچ صاحب اور اہل آریوں کیطرف سے صرف دو سوامی دیانند سرستی و منشی اندرمن صاحب گفتگو کرنے کے لئے تجویز ہوئے تو مولوی صاحبان اور پادری صاحبان نے بہت اصرار کیا کہ آریوں کی طرف سے بھی پانچ شخص مقرر ہونے چاہئیں اسکے جواب میں سوامی جی نے فرمایا کہ ہم دوہی شخص کافی ہیں تاہم مولوی صاحبان نے پنڈت لکشمن شاستری جی کا نام خود بخود ہی پادری صاحب سے لکھوانا چاہا تب سوامی جی نے پھر اسے تو یہہ کہا کہ آپکو محض اپنی جانب کے انتخاب کرنیکا اختیار ہے ہمارے انتخاب و انتظام میں مداخلت کرنیکا آپکو کچھہ اختیار نہیں ہے اور پنڈت لکشمن شاستری جی سے فرمایا کہ آپ یہہ نہیں جانتے کہ یہہ لوگ باہم ہمارے اور تمہارے جھگڑا کرا کر آپ تماشا دیکھنا چاہتے ہیں باوصف اسبات کے ایک مولوی صاحب نے پنڈت لکشمن شاستری جی کا ہاتھہ پکڑ کر کہا کہ تم بھی اپنا نام لکھوا دو انکے کہنے سے کیا ہوتا ہے تسپر سوامی جی نے پھر یہی جواب دیا کہ اگر آریا لوگوں کا اتفاق ہو تو نام انکا لکھوا دو ورنہ محض تمہارے کہنے سے انکا نام نہیں لکھا جائیگا بعدہ ایک اور مولوی صاحب اٹھکر بولے کہ سب ہندوؤں سے پوچھا جاے کہ ان دونوں کے لکھانے میں سب کی راے کا اتفاق ہے یا نہیں حضور سوامی جی نے فرمایا کہ جیسے آپ کو سوا فرقہ سنت جماعت کے اہل شیعہ وغیرہ فرقوں نے اتفاق کر کے نہیں بٹھلایا علی ہذا القیاس پادری صاحب کو رومن کیتھولک وغیرہ فرقوں نے مقرر نہیں کیا ایسے ہی گو کہ آریا لوگوں میں بھی شک نہیں کہ ہماری نسبت بعض متفق الراے ہونگے اور بعض مخالف تو ہے مگر آپ کو کسی صورت میں ہمارے انتخاب میں دخل دینے کا اختیار نہیں ہے۔

और बहुतसोंकी असम्मति होगी परन्तु आप लोगों को हमारे बीच गडबड़ मचाने का कुछ अधिकार नहीं है, मुंशी इन्द्रमणि जी ने कहा कि हम सब आर्य्य लोग वेदादि शास्त्रों को मानते हैं और पण्डित जी भी इन्हीं को मानते हैं जो किसी का मत आर्य्य लोगों में से वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध हो तो चौथा पंथ नियत करके भले ही बिठला दीजियेगा।

इन बातों से मौलवियों का यह अभिप्राय था कि ये लोग आपस में झगड़ें तो हम तमाशा देखें। पण्डित जी का नाम लिखाना आर्य्य लोगों ने योग्य न समझा। फिर मौलवी लोग नमाज़ पढ़ने को चले गये और जब लौट कर आये तब उन में से मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहब ने कहा कि प्रथम मैं एक घण्टे तक उन प्रश्नों के सिवाय और कुछ अपने मत के अनुसार कहना चाहता हूं उसमें जो किसीको कुछ शंकाहोगी तो उसका मैं समाधान करूंगा इसको सबने स्वीकार किया। मौलवी साहबके कथन का तात्पर्य यह है-

मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहब

परमेश्वर की स्तुति के पश्चात् यह कहा कि जिस २ समय में जो २ हाकिम हो उसी की सेवा करनी उचित है जैसे कि इस समय जो गवरनर है उसी की सेवा करते और उसी की आज्ञा मानते हैं और जिसकी कि आज्ञापालन का समय व्यतीत होगया न कोई उस की सेवा करता है और न उसकी आज्ञा को मानता है और जैसे जब कोई कानून व्यर्थ हो जाता है तो उसके अनुसार कोई नहीं चलता परन्तु जो क़ानून उस की जगह नियत किया जाता है उसी के अनुसार सबको चलना

اور منشي اندرمن صاحب نے فرمایا کہ ہم سب آریالوگ وید شاستروں کو مانتے ہیں اور شاستري جي بهي ویدشاستروں کو مانتے ہیں اگر کسي صاحب کا مذہب آریہ لوگوں میں سے وید شاستروں کے برخلاف ہو تو چوتہا مذہب قایم کرکے بٹہلا دیجئیگا - غرض اِس قیل و قال سے مدعا مولوي صاحبون کا یہہ معلوم ہوتا تہا کہ یہہ لوگ آپسمیں جہگڑیں توہم لوگ تماشا دیکہیں غرضیکہ پنڈت لکشمن شاستري جی کا شامل کرنا آریا لوگوں نے مناسب نہ سمجہا *

اِسکے بعد مولویصاحب نماز پڑہنے کوچلے گئے اور جب فارغ ہوکر تشریف لائے تو مولوي محمدقاسم صاحب نے فرمایاکہ اول میں ایک گہنٹہ تلک سوالے سوالات مذکور کے اپنے اعتقاد کے مطابق بیان کرتا ہوں اور پہر اُسمیں جس کسي صاحب کو اعتراض ہو وہ فرماویں میں اُسکا جواب دونگا- چنانچہ سب نے منظور فرمایا- مولوي صاحب کے بیان کا خلاصہ یہہ ہے *

مولوي محمد قاسم صاحب

بعد حمد و سپاس یہہ فرمایا کہ جس جس وقت مین جو جو حاکم ہو اُسیکی اطاعت کرنی ضرور ہے جیسے کہ اِسوقت مین جو گورنر ہے اُسیکی خدمت کرتے اور اُسیکا حکم مانتے ہین جسکے کہ حکم کا وقت گذر چکا نہ کوئی اُسکی خدمت کرتاہے اور نہ اُسکے حکم کی تعمیل کرتاہے اور جیسے کہ جب کوئی قانون منسوخ ہوجاتاہے تو اُسکے احکام کی تعمیل کوئی نہین کرتا جو قانون بجاے اُسکے جاری ہوتاہے اُسکی تعمیل سب پر واجب آتی ہے تو اِنہین

होता है तो इन्हीं दृष्टान्तों के समान जो २ अवतार और पैगम्बर पूर्व समय में थे और जो २ पुस्तकें तौरेत ज़बूर बाइबिल उन के समय में उतरी थी अब उन के अनुसार न चलना चाहिये इस समय के सब से पिछले पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब हैं इसलिये उन को पैगम्बर मानना चाहिये । और जो ईश्वर वाक्य अर्थात् क़ुरान उनके समय में उतरा है उस पर विश्वास करना चाहिये और हम श्री राम और श्रीकृष्ण आदि और ईसा मसीह की निन्दा नहीं करते क्योंकि वे अपने २ समय में अवतार और पैगम्बर थे परन्तु इस समय तो हज़रत मुहम्मद साहब का ही हुकुम चलता है दूसरे का नहीं । जो कोई हमारे मज़हब वा क़ुरान शरीफ़ वा हज़रत मुहम्मद साहब को बुरा कहेगा वह मारे जाने के योग्य है ।

पादरी नोबिल साहब

मुहम्मद साहब के पैगम्बर और क़ुरान के ईश्वरीय वाक्य होने में सन्देह है क्योंकि क़ुरान में जो २ बात लिखी हैं सो सो बाइबिल की हैं इसलिये क़ुरान अलग आसमानी पुस्तक नहीं हो सकता और हज़रत ईसामसीह के अवतार होने में कुछ सन्देह नहीं क्योंकि उसके व्याख्यान से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह सत्य मार्ग बतलाने वाला था। केवल उसके व्याख्यान से ही मनुष्य मुक्ति पासकता है और उसने चिमत्कार भी दिखलाये थे।

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

हम हज़रत ईसा को अवतारतो मानते हैं और बाइबिल को आसमानी पुस्तक भी मानते हैं परन्तु ईसाइयों ने उस में बहुत कुछ घटत बढ़त करदी है। इसलि-

نظایر کے مطابق جو جو اوتار پیغمبر پہلے زمانوں میں تھے اور جو جو کتابیں توریت و زبور و انجیل اونکے عہد میں نازل ہوئیں تھیں اب اونکی تعمیل نہوني چاہئیے اِس زمانہ کے آخري پیغمبر حضرت محمد صاحب ہیں اسواسطے اُنکو پیغمبر ماننا چاہئیے اور جو کلام اللہ یعنی قرآن شریف اونکے عہد میں نازل ہوا اُسپر عمل کرنا چاہئیے اور ہم سري رام اور سري کرشن وغیرہ اور عیسی مسیح کی مذمت نہیں کرتے کیونکہ وے اپنے اپنے وقت میں اوتار اور پیغمبر تھے لیکن اِسوقت تو حضرت محمد صاحب کا ہي حکم چلتا ہے دوسریکا نہیں اور جو کوئي ہمارے مذہب یا قرآن شریف یا حضرت محمد صاحب کو برا کہیگا وہ واجب القتل ہے *

پادري نول صاحب

محمد صاحب کے پیغمبر اور قرآن کے خدا کے کلام ہونے میں شک ہے کیونکہ قرآن میں جو جو بات لکھي ہے سو سو بایبل کي ہے لہذا قرآن علیحدہ کتاب آسماني نہیں ہوسکتي اور حضرت عیسی مسیح کے اوتار ہونے میں کچھ شک نہیں کیونکہ اُسکی وعظ سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ وہ سچي راہ بتلانیوالا تھا محض اُسی کی وعظ سے آدمي نجات پا سکتا ہے اور اوسنے معجزے بھي دکھلائے تھے *

مولوي محمد قاسم صاحب

ہم حضرت عیسی کو پیغمبر تو مانتے ہیں اور انجیل کو کتب آسماني بھي مانتے ہیں لیکن عیسائي لوگوں نے اُسمیں تحریف یعني گھٹاؤ بڑھاؤ کردیا ہے اسواسطے وہ اصل نہیں

ये वह वही मूल नहीं है और जो कि उसका क़ुरान ने खण्डन भी कर दिया है इसलिये वह विश्वास के योग्य नहीं रही और हमारे हज़रत पैग़म्बर साहब का अवतार सब से पिछला है इसलिये हमारा मत सच्चा है।

फिर और मौलवियों ने बाइबिल में से एक आयत पादरी साहब को दिखलाई और कहा कि देखिये आपही लोगों ने लिखा है कि इस आयत का पता नहीं लगता॥

اور جو کہ وہ بروے قرآن منسوخ بھی ہو گئی ہے اسواسطے وہ اعتبار کے قابل نہیں رہی اور ہمارے حضرت پیغمبر صاحب خاتم الانبیا یعنی آخری پیغمبر ہیں اسلئے ہمارا مذہب سچا ہے - پھر دیگر مولویصاحبان نے بایبل میں سے ایک آیت پادری صاحب کو دکھلائی اور بیان کیا کہ آپ ہی صاحبوں نے یہہ لکھا ہے کہ اِس ایت کا پتہ نہیں لگتا *

पादरी नोविल साहब

जिस मनुष्य ने यह लिखा है वह सत्य वादी था जो उसने लेखक भूल को प्रसिद्ध कर दिया तो कुछ बुरा नहीं किया और हमलोग सत्य को चाहते हैं असत्य को नहीं इसलिये हमारा मत सत्य है

پادری نول صاحب

جس صاحب نے یہہ لکھا ہے وہ راستگو تھا اگر اوسنے تحریری غلطی کو ظاہر کر دیا تو کچھہ برا نہیں کیا - اور ہم لوگ سچ کو چاہتے ہیں جھوٹھہ کو نہیں اِسلئے ہمارا مذہب سچا ہے *

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

यह तो ठीक कि कुछ बुरा नहीं किया परन्तु जब कि किसी पुस्तक में वा दस्तावेज़ में एक बात भी झूठलिखी हुई विदित होजावे तो वह पुस्तक कदाचित माननीय नहीं रहता और न वह दस्तावेज़ही अदालत में स्वीकार हो सकती है

مولوی محمد قاسم صاحب

یہہ تو صحیح کہ کچھہ برا نہیں کیا لیکن جبکہ کسی کتاب میں یا دستاویز میں ایک بات بھی جھوٹھہ لکھی ہوئی ثابت ہوجاے تو ظاہرا وہ کتاب کسی صورت میں قابل اعتبار نہیں رہتی اور نہ وہ دستاویز قابل پذیرائی عدالت ہو سکتی ہے *

पादरी नोविल साहब

क्या क़ुरान में लेखक दोष नहीं होसकता इस बात पर हठ करना अच्छा नहीं और जो हम सत्य ही को मानते हैं और सत्य ही का खोज करते हैं इस कारण उस लेखक भूल को हमने स्वीकार कर लिया और तुम्हारे क़ुरान में बहुत घटत बढ़त हुई, जिसके प्रमाण में एक मौलवी ईसाई ने अरबी भाषा में बहुत कुछ कहा और सूरतों के प्रमाण दिये॥

پادری نول صاحب

کیا قرآن میں تحریری عیب نہیں ہوسکتا لہذا اسبات پر اصرار کرنا اچھا نہیں اور جو ہم راستی ہی کو پسند کرتے ہیں اور راستی ہی کے متلاشی رہتے ہیں اِس باعث سے اوس تحریری غلطی کو ہمنے قبول کرلیا اور تمہارے قرآن میں بہت تحریف ہوئی جسکی تائید میں ایک مولوی عیسائی نے بزبان عربی بہت کچھہ بیان کیا اور سورۃ کے حوالے دئے *

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

आप बड़े सत्य के खोजी हैं ! (मुख बना कर) जो आप सत्य ही को स्वीकार करते हैं तो तीन ईश्वर क्यों मानते हो ।

पादरी नोविल साहब

हम तीन ईश्वर नहीं मानते वे तीनों एक ही है अर्थात् केवल एक ईश्वर से ही प्रयोजन है। ईसा मसीह में मनुष्यता और ईश्वरता दोनों थी इस कारण वह दोनों व्यवहारों कों करता है अर्थात् मनुष्य के आत्मा से मनुष्यों का व्यवहार और ईश्वर की आत्मा से ईश्वर का व्यवहार अर्थात् चिमत्कार दिखलाना ।

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

वाह वाह एक घर में दो तलवार क्योंकर रह सकती हैं यह कहना पादरी साहब का अत्यन्त मिथ्या है उस ने तो कहीं नहीं कहा कि मैं ईश्वर हूं तुम हठ से उस को ईश्वर बनाते हो ।

पादरी नोविल सासब

एक आयत अंजील की पढी और कहा कि यह एक आयत है जिस में मसीह ने अपने आप को ईश्वर कहा है और कई एक चिमत्कार भी दिखलाये है इस से उसके ईश्वर होने में कोई संदेह नहीं हो सकता

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

जो वह ईश्वर था तो अपने आप को फांसी से क्यों न बचा सका ।

एक हिन्दुस्तानी पादरीसाहब

कुरान में कई एक आयतों का परस्पर विरोध दिखलाया और कहा कि हुकुम का खण्डन हो सकता है समाचार का नहीं हो सकता सो आप के कुरान में समाचारों का खण्डन है पहिले बैतुलमुकद्दस

مولوي محمد قاسم صاحب

آپ بڑے متلاشي راستي کے هيں ! اگر آپکو راستي هي پسند هے تو تين خدا کيون مانتے هو *

پادري نول صاحب

هم تين خدا نهيں مانتے بلکه وے تينوں ايک هي هيں يعني واحد حقيقي سے مراد هے عيسى مسيح ميں انسانيت اور الوهيت دونوں تهيں اسي سبب سے وه دونوں کاموں کو کرتا هے يعني انسان کي روح سے انسان کا کام اور خدا کي روح سے خدا کا کام يعني معجزه دکهلانا *

مولوي محمد قاسم صاحب

واه واه ايک ميان ميں دو تلوار کيونکر ره سکتي هيں يه کهنا پادري صاحب کا محض غلط هے اسنے تو کهيں نهيں کها که ميں خدا هوں ليکن تم بهودستي اسکو خدا بناتے هو *

پادري نول صاحب

ايک آيت انجيل کي پڑهي اور فرمايا که ديکهو يهه ايک آيت جسميں مسيح نے اپنے آپ کو خدا کها هے اور کئي ايک معجزه بهي دکهلائے هيں اس سے اسکے خدا هونے ميں کوئي شک نهيں هو سکتا *

مولوي محمد قاسم صاحب

جبوه خدا تها تو اپنے اپ کو صليب سے کيوں نه بچا سکا *

ايک پادري هندوستاني صاحب

چند آيتوں کا قرآن ميں اختلاف دکهلايا اور يه فرمايا که امر اور نهي منسوخ هوتے هيں اخبار منسوخ نهيں هوسکتے سو آپ کے قرآن ميں اخبار منسوخ هيں اول بيت المقدس

की ओर गिर नमाते थे फिर कावे की ओर दखाने लगे और कई आयतों का अर्थ भी सुनाया और कहा कि ईसा मसीह पर विश्वास लाये विना किसी को मुक्ति नहीं हो सकती और तुम्हारे कुरान में वाइ-विल का और ईसा मसीह का मानना लिखा है तुम लोग क्यों नहीं मानते हो ? ऐसी ही बातों के होते २ संध्या हो गई ॥

दूसरे दिन की सभा

प्रात:काल के साढ़े सात बजे सब लोग आये और वे पांच प्रश्न कि जो स्वीकार हो चुके थे पढ़े गये। वे पांच प्रश्न ये हैं—

१—सृष्टि को परमेश्वर ने किस चीज़ से किस समय और किस लिये बनाया ?

२—ईश्वर सब में व्यापक है वा नहीं ?

३—ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है ?

४— वेद, बाइबिल और क़ुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण है ?

५—मुक्ति क्या है और किस प्रकार मिल सकती है ?

इसके पश्चात् कुछ देर तक यह बात आपस में होती रही कि एक दूसरे को कहता था कि पहिले वह वर्णन करे। तदनन्तर पादरी स्काट साहब ने पहिले प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ किया और यह भी कहा कि यद्यपि यह प्रश्न किसी काम का नहीं मेरी समझ में ऐसे प्रश्न का उत्तर देना व्यर्थ है। परन्तु जब कि सब की सम्मति है तो मैं इस का उत्तर देता हूं ॥

पादरी स्काट साहब

यद्यपि हम नहीं जानते कि ईश्वर ने यह संसार किस चीज से बनाया है परन्तु इतना हम जान सकते हैं कि अभाव से

کي طرف سجدہ کرتے تھے بعدہ کعبہ کیطرف کرنے لگے اور چند آیتوں کے معنی بھی پڑھکر سنائے اور کہا کہ بغیر عیسی مسیح پر ایمان لائے کسی کی نجات نہیں ہوسکتی اور تمھارے قرآن میں بایبل کا ماننا اور عیسی مسیح کا ماننا لکھا ہے تم لوگ کیوں نہیں مانتے ہو۔ غرض اسطرحکی تقریریں کرتے کرتے شام ہوگئی *

جلسہ صبح روز دویم

تاریخ ۲۰ مارچ سنہ ۱۸۷۷ ع

ساڑھے سات بجے صبح کے سب صاحب تشریف لائے اور اپنے اپنے موقع پر کرسی نشین ہوگئے بعد ازاں منشی مکتا پرساد صاحب اور منشی پیارےلعل صاحب کی طرفسے یے پانچ سوال جوکہ کمیٹی نے منظور کئے تھے پیش ہوئے —

پہلا—دنیا کو پرمیشور نے کس چیز سے اور کس وقت اور کسواسطے بنایا ؟

دوسرا—ذات الہی محیط کل اشیاء ہے یا نہیں ؟

تیسرا—ایشور عادل اور رحیم کسطرح ہے ؟

چوتھا—وید اور بایبل اور قرآن کے کلام الہی ہونیمیں کیا دلیل ہے ؟

پانچواں—نجات کیا چیز ہے اور کسطرح حاصل ہو سکتی ہے ؟

کچھہ عرصہ تک تو اسپر باہم گفتگو ہوتی رہی کہ ایکدوسریکو کہتا تھا کہ پہلے وہ شخص بیان شروع کرے لیکن آخرکار پادری اسکاٹ صاحب نے پہلے سوال کا جواب شروع کیا اور یہہ بھی فرمایا کہ اگرچہ یہ سوال کسی کام کا نہیں ایسے سوال کے جواب دینے میں تضیع اوقات کرنا میری سمجھہ میں اچھا نہیں لیکن جبکہ سب کی مرضی ہے تو میں اسکا جواب دیتا ہوں *

پادری اسکاٹ صاحب

اگرچہ ہم نہیں جانتے کہ ایشور نے اس دنیاکو کس چیز سے بنایا ہے لیکن اتنا ہم جان سکتے ہیں کہ نیستی سے ہستی میں لایا کیونکہ

भाव में लाया है क्योंकि पहिले सिवाय ईश्वर के दूसरा पदार्थ कुछ न था उसने अपने हुकम से सृष्टि को रचा है। यद्यपि यह भी हम नहीं जान सकते कि उसने कब इस संसार को रचा परन्तु उसका आदि तो है वर्षों की गणना हमको नहीं जान पडती और न सिवाय ईश्वर के कोई जानसकता है इसलिये इस बात पर अधिक कहना ठीक नहीं।

ईश्वर ने किसलिये इस जगत् को रचा यद्यपि इसका भी उत्तर हमलोग ठीक२ नहीं जान सकते परन्तु इतना हम जानते हैं कि संसार के सुख के लिये ईश्वर ने यह सृष्टि की है, कि जिस में हम लोग सुख पावें और सब प्रकार के आनन्द करें॥

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

उसने अपने शरीर से प्रकट अर्थात् उत्पन्न किया, उस से हम अलग नहीं ; जो अलग होते तो उसकी प्रभुता में न होते कब से यह संसार बना यह कहना व्यर्थ है, क्योंकि हम को रोटी खाने से काम है, न यह कि रोटी कब बनी है।

यह जगत् सृष्टि के लिये रचा गया है, क्योंकि सब पदार्थ मनुष्य के लिये ईश्वर ने रचे हैं और हमको अपनी भक्ति के लिये ईश्वर ने रचा है। देखो पृथिवी हमारे लिये है, हम पृथिवी के लिये नहीं, क्योंकि जो हम न हों तो पृथिवी की कुछ हानि नहीं, परन्तु पृथिवी के न होने से हमारी बडी हानि होती है ऐसे ही जल, वायु अग्नि आदि सब पदार्थ मनुष्य के लिये रचे गये है मनुष्य सब सृष्टि में श्रेष्ठ है, उसको बुद्धि भी इसी श्रेष्ठता की परीक्षा को दी है, अर्थात् मनुष्य को अपनी भक्ति के लिये

بجز سوائے ایشور کے دوسری کوئی چیز نہ تھی اُسنے اپنے حکم سے اس مخلوقات کو بنایا ہے - اگرچہ یہہ بھی ہم نہیں جان سکتے کہ اُسنے کسوقت اس دنیا کو بنایا لیکن اُسکا آغاز تو ہے برسوں کی تعداد ہمکو معلوم نہیں ہوتی نہ سوائے ایشور کے کوئی جانسکتا ہے - پس اسبات میں زیادہ تقریر کرنا ٹھیک نہیں - ایشور نے کس لئے اس دنیا کو بنایا اگرچہ اسکا جواب بھی ہملوگ ٹھیک نہیں جان سکتے لیکن اتنا ہملوگ جانتے ہیں کہ انسانوں کے آرام کے لئے ایشور نے یہہ دنیا بنائی ہے - کہ جسمیں ہملوگ سکھہ پاویں اور سب قسم کے آنند کریں انسان ایشور نے دنیا کو بنایا ہے ٭

مولوی محمد قاسم صاحب

اُسنے اپنے وجود خاص سے ظاہر یعنی پیدا کیا اُسسے ہم جدا نہیں جدا ہوتے تو اُسکے تابع نہ ہوتے - کب سے یہہ دنیا بنی یہہ کہنا لاحاصل ہے کیونکہ ہمکو روٹی کھانے سے کام ہے یہہ کہ روٹی کب بنی ہے اس سے کیا غرض ہے - یہہ تمام مخلوق کے واسطے بنا گیا ہے کیونکہ سب چیزیں انسان کے لئے خدا نے بنائی ہیں - اور ہمکو اپنی عبادت کرانے کے لئے بنایا ہے دیکھو زمین ہمارے لئے ہے ہمکو زمین کے لئے نہیں بنایا کیونکہ اگر ہم نہوں تو زمین کا کچھہ حرج نہیں لیکن زمین کے نہونے سے ہمارا سب طرح حرج ہوتا ہے - ایسے ہی پانی ہوا آگ وغیرہ سب چیزیں انسان کے لئے بنائی گئی ہیں - انسان سارے مخلوق سے اشرف ہے انسان کو عقل بھی اسی شرف کے پہچاننے

और इस जगत् को मनुष्य के लिये ईश्वर ने रचा है।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

पहिले मेरी सब मुसलमानों और ईसाइयों और सुनने वालों से यह प्रार्थना है कि यह मेला केवल सत्य के निर्णय के लिये किया गया है, और यह ही मेला करने वालों का प्रयोजन है कि देखें सब मतों में कौनसा मत सत्य है, जौन से को सत्य समझें उसी को अंगीकार करें, इसलिये यहां हार और जीत की अभिलाषा किसी को न करनी चाहिये क्योंकि सज्जनों का यह ही मत होना चाहिये कि सत्य की सर्वदा जीत और असत्य की सर्वदा हार होती रहे। परन्तु जैसे मौलवी लोग कहते हैं कि पादरी साहब ने यह बात झूठ कही, ऐसे ही ईसाई कहते हैं कि मौलवी साहब ने यह बात झूठ कही, ऐसी वार्ता करना उचित नहीं। विद्वानों के बीच यह नियम होना चाहिये कि अपने २ ज्ञान और विद्या के अनुसार सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन कोमल वाणी के साथ करें कि जिस से सब लोग प्रीति से मिलकर सत्य का प्रकाश करें। एक दूसरे की निन्दा करना, बुरे २ वचनों से बोलना, द्वेष से कहना कि यह हारा और मैं जीता ऐसा नियम कदाचित् न होना चाहिये। सब प्रकार पचपात छोड़ कर सत्य भाषण करना सब को उचित है और एक दूसरे से विरोधवाद करना यह अविद्वानों का स्वभाव है विद्वानों का नहीं मेरे इस कहने का यह प्रयोजन है कि कोई इस मेले में अथवा और कहीं कठोर वचन का भाषण न करें॥

अब मैं इस पहिले प्रश्न का उत्तर कि

کر دی ہے پس انسان کو اپنی عبادت کے لئے اور اس عالم کو انسان کے لئے بنایا ہے *

سوامی دیانند سرستی جی

پہلے میری سب مسلمانوں اور عیسائیوں اور سننے والوں سے یہہ گذارش ہے کہ یہہ میلہ صرف سچ کی تحقیقات کے لئے منعقد ہوا ہے اور یہہ ہی منشی پیاریلعل صاحب اور منشی مکتا پرشاد صاحب موجدان میلہ کا مقصد ہے کہ منجملہ سب مذاہب کے سچا مذہب کونسا ہے تا کہ ہم اس سے واقف ہوکر اسیکو راست سمجھیں اور جھوٹے خیالات کو چھوڑ دیں - بس اس موقع پر ہار اور جیت کی خواہش کسیکو نکرنی چاہئے کیونکہ اچھے لوگوں کا یہی مقصد اصلی ہونا چاہئے کہ ست کی ہمیشہ جیت اور است کی ہار ہوتی رہے - لیکن جیسے مولوی لوگ کہتے ہیں کہ پادری صاحب نے یہہ بات جھوٹھہ کہی ایسے ہی عیسائی کہتے ہیں کہ مولویصاحب نے یہہ بات جھوٹھہ کہی ایسی تقریر کرنا مناسب نہیں در حقیقت عالموں اور فاضلوں کے باہم یہہ طریقہ انسب مستقل ہونا چاہئے کہ اپنے اپنے عقل اور علم کے موافق سچائی کا ثبوت اور باطل کی تردید و تنسیخ شیریں زبانی اور شایستگی کے ساتھہ کریں جس سے سب لوگ محبت سے ملکر راستی کا اظہار کریں ایک دوسرے پر طعنہ زنی کرنا بد کلامی سے بولنا مخالفت سے کہنا کہ یہہ ہارا اور میں جیتا ایسا طریقہ ہرگز مسلوک نہونا چاہئے - کیونکہ ہر طور سے طرفداری کو چھوڑ کر راست راست بیان کرنا سب کو واجب ہے ایک دوسرے سے مخالفت کرنا یہہ بے علمونکی عادت ہے عالمونکی نہیں - اس سے میری یہہ عرض ہے کہ کوئی اس میلہ میں یا اور کہیں سخت کلامی نکریں - اب میں اس پہلے سوال کا

ईश्वर ने जगत् को किस वस्तु से और किस समय और किस लिये रचा है अपनी छोटी सी बुद्धि और विद्या के अनुसार देता हूं—

परमात्मा ने सब संसार को प्रकृति से अर्थात् जिसको अव्यक्त अव्याकृत और परमाणु नामों से कहते हैं रचा है, सो यह ही जगत् का उपादान कारण है जिसका वेद आदि शास्त्रों में नित्य करके निर्णय किया है और यह सनातन है, जैसे ईश्वर अनादि है वैसे ही सब जगत् का कारण भी अनादि है, जैसे ईश्वर का आदि और अन्त नहीं वैसे ही इस जगत् के कारण का भी आदि और अन्त नहीं है। जितने इस जगत् में पदार्थ दीखते हैं उनके कारण से एक परमाणु भी अधिक वा न्यून कभी नहीं होता। जब ईश्वर इस जगत् को रचता है तब कारण से कार्य्य रचता है। सो जैसा कि यह कार्य्य जगत् दीखता है, वैसा ही इसका कारण है। सूक्ष्म द्रव्यों को मिलाकर स्थूल द्रव्यों को रचता है तब स्थूल द्रव्य होकर देखने और व्यवहार के योग्य होते हैं। और यह जो अनेक प्रकार का जगत् दीखता है उस को इसी कारण से ईश्वर ने रचा है, जब प्रलय करता है तब इस स्थूल जगत् के पदार्थों के परमाणुओं को पृथक्२ कर देता है क्योंकि जो२ स्थूल से सूक्ष्म होता है वह आंखों से देखने में नहीं आता तब बाह्य बुद्धि लोग ऐसा समझते हैं कि वह द्रव्य नहीं रहा परन्तु वह सूक्ष्म होकर आकाश में ही रहता है, क्योंकि कारण का नाश कभी नहीं होता और नाश अदर्शन को कहते हैं अर्थात् वह देखने में न आवे। जब एक २ परमाणु पृथक्२ हो

جواب کہ ایشور نے دنیا کو کس چیز سے اور کس وقت اور کسلئے بنایا اپنی چھوٹی سی عقل اور علم کے مطابق دیتا ہوں -

پرمیشور نے سب دنیا کو پرکرتی سے کہ جسکو اویکت اویاکرت پرمانو یعنی جزو لایتجزی وغیرہ ناموں سے کہتے ہیں بنایا ہے - سو یہی دنیا کی علت مادی ہے جسکو وید شاستروں میں قدیم ثبوت کیا ہے اور یہہ ہمیشہ سے ہے - جیسے ایشور قدیم ہے ویسے ہی سب دنیا کی علت فاعلی بھی قدیم ہے - جیسے ایشور کا آغاز اور انجام نہیں ایسے ہی اس حکمت کی علت فاعلی کا بھی نہیں ہے جتنی اس حکمت میں چیزیں دیکھتی ہیں انکی علت فاعلی سے ایک جزو بھی زیادہ اور کم کبھی نہیں ہوتا جب ایشور اس جگت کو بناتا ہے تب علت سے معلول کو بناتا ہے - سو جیسا کہ یہہ معلول حکمت دیکھتا ہے ویسی ہی اسکی علت فاعلی ہے لطیف چیزوں کو ملا کر کثیف چیزونکو بنایا ہے تب کثیف چیزیں ہوکر دیکھنے اور کار میں لانے کے لایق ہوتی ہیں اور یہہ جو نوع بنوع کا حکمت دیکھتا ہے اسکو اسی علت فاعلی سے ایشور نے بنایا ہے اور جب پرلے کرتا ہے تب اس کثیف حکمت کی سب چیزوں کے جزو کو جدا جدا کر دیتا ہے کیونکہ جو جو کثیف سے لطیف ہوتا ہے وہ آنکھ سے دیکھنے میں نہیں آتا تب ظاہر عقل لوگ سمجھتے ہیں کہ وہ چیز نہیں رہی حالانکہ وہ لطیف ہوکر آکاش میں رہتی ہے کیونکہ علت فاعلی کا کبھی ناش نہیں ہوتا - ناش اسکو کہتے ہیں کہ جو دیکھنے میں نہیں آوے جب ایک ایک جزو الگ الگ ہو جاتے

जाते हैं तब उनका दर्शन† नहीं होता फिर जब वेही परमाणु मिलकर स्थूल द्रव्य होते हैं तब दृष्टि में आते हैं यह नाश और उत्पत्ति की व्यवस्था ईश्वर सदा से करता आया है और ऐसे ही सदा करता जायगा, इसकी संख्या नहीं कि कितनी बार ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की और कितनी बार करसकेगा, इस बात को कोई नहीं कह सकता। अब इस विषय को जानना चाहिये कि जो लोग नास्ति अर्थात् अभाव से अस्ति अर्थात् भाव मानते हैं और शब्द से जगत् की उत्पत्ति जानते हैं उनका कहना किसी प्रकार से ठीक नहीं हो सकता, क्योंकि अभाव से भाव का होना सर्वथा असम्भव है। जैसे कोई कहे कि वन्ध्या के पुत्र का विवाह मैंने आंख से देखा है, तो जो उसके पुत्र होता तो वंध्या क्यों कहलाती! फिर उसके पुत्र का अभाव होने से उसके पुत्र का विवाह कब हो सकता है, और जैसे कोई कहे कि मैं किसी स्थान में नहीं था और यहां आया हूं अथवा सर्प बिल में न था और

† जब कोई वस्तु अत्यन्त छोटी हो जाती है तो फिर उसे और छोटा करना असम्भव है। जो किसी वस्तु के टुकड़े करते २ उसको इतना छोटा करदे कि फिर उसके टुकड़े होना असम्भव होजावे तो उस को परमाणु कहते हैं जितनी वस्तु संसार में हैं वे सब परमाणु से बनती हैं। जब किसी पत्थर को तोड़ डालते हैं और उसके अत्यन्त छोटे छोटे टुकड़ों को पृथक् २ कर देते हैं तो वे परमाणु कि जिन के इकट्ठे होने से फिर पत्थर बनता है सदा किसी न किसी स्वरूप में बने रहते हैं। एक परमाणु का भी इस संसार में से अभाव नहीं होता केवल स्वरूप और गुणों में भेद हुआ करता है जब मोम की बत्ती को जलाते हैं तो देखने में यह ज्ञान पड़ता है कि थोड़ी देर में सब बत्ती नहीं रहती, न जाने कि क्या हो गयी; परन्तु वे परमाणु जिनसे बत्ती में थे और ही रूप के वायु के सदृश हो जाते हैं, उन में से एक परमाणु का भी अभाव कदाचित् नहीं होता।

هیں تب وہ دیکھنے† میں نہیں آتے پھر جب وہی جزو کثیف ہوتے هیں تب دیکھنے میں آتے هیں - اس پیدایش اور نظر سے غایب ہونیکی حالتکو ایسور ہمیشہ سے کرتا آتاهے اور ایسے ہی ہمیشہ کرتاجایگا اسکی شمار نہیں کہ کتنی دفعہ ایسور نے دنیا کو پیدا کیا اور کتنی دفعہ کرسکیگا اس بات کو کوئی نہیں کہہ سکتا اب اس بات میں جاننا چاہئے کہ جو لوگ نیستی یاعدم سے ہستی یا وجود- ہونا مانتے هیں - اور حکم سے جگت کی پیدایش جانتے هیں انکا کہنا کسیطرح سے ٹھیک نہیں ہوسکتا کیونکہ نیستی یاعدم سے ہستی یا وجود کا ہونا ہرحال میں نا ممکن ہے - جیسے کوئی کہے کہ عقیمہ یا بانجھہ عورت کے بیٹے کی شادی میںنے آنکھہ سے دیکھی ہے- تو اگر اسکے بیٹا ہوتا تو وہ عقیمہ کیوں کہلاتی پھر اسکے بیٹا نہوے سے اسکے بیٹےکی شادی کب ہوسکتی ہے جیسے کوئی کہے کہ میں کسی جگہہ میں نہیں تھا اور یہاں آیا ہوں یا سانپ بل میں نہیں

† جب کوئی شے بہت چھوٹی صورت کی یعنے ذرہ ہو جاتی ہے تو پھر اسے اور چھوٹا کرنا غیر ممکن ہے- اگر کسی شے کے حصے کرتے کرتے ایک اتنا چھوٹا حصہ ہوجاوے کہ پھر اسکا حصہ کرنا غیر ممکن ہو تو اس چھوٹے حصہ کو ذرہ کہتے هیں- جتنے اجسام دنیا میں هیں وے سب ذروں سے بنتے هیں-جب کسی پتھر کو توڑ ڈالتے هیں اور اسکے نہایت چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں کو الگ الگ کردیتے هیں تو وے ذرے کہ جنکے جمع ہونیسے پتھر بنتاہے ہمیشہ کسی نہ کسی صورت کے بنے رہتے هیں- ایک ذرہ بھی اس دنیا میں سے نیست نہیں ہوتا صرف صورت اور حالت تبدیل ہوا کرتی ہے - جب موم بتی جلاتے هیں تو دیکھنے میں یہہ خیال ہوتا ہے کہ تھوڑی دیر میں سب بتی نہیں رہتی نہ جانیں کہ کیا ہوگئی پر حقیقت میں وے ذرے جتنے بتی میں تھے بدل کر ایک طرحکی ہوا کی صورت پر ہوجاتے هیں کوئی ایک ذرہ بھی نیست نہیں ہوتا *

निकल भी आया ; तो ऐसी वार्ता विद्वानों की नहीं होती इसमें कोई प्रमाण नहीं, क्योंकि जो वस्तु है ही नहीं फिर वह क्योंकर हो सकती है, जैसे कि जो हम लोग अपने २ स्थानों में न होते तो यहां चांदापुर में कभी न आसकते । देखो शास्त्र में भी लिखा है कि—

नासत आत्मलाभः । नसत आत्महानम् ॥

अर्थात् जो है सो आगे को होता है और जो नहीं है वह कभी नहीं हो सकता । इस से स्पष्ट ज्ञात होता है कि विना भाव के भाव कभी नहीं हो सकता, क्योंकि इस जगत् में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है कि जिसका कारण कोई नहो, इसवे यह सिद्ध हुआ कि भाव से भाव अर्थात् अस्ति से अस्ति होती है नास्ति से अस्ति किसी प्रकार नहीं हो सकती, यह "वदतोव्याघातः" अर्थात् अपनी वात को आप ही काटने के सदृश वात है । पहिले किसी वस्तु का अन्यथा भाव कह कर फिर यह भी कहना कि उसका भाव होगया पूर्वापर विरोध है । इसको कोई विद्वान् नहीं मान सकता और न किसी प्रमाण से ही सिद्ध कर सकता है कि विना कारण के कोई कार्य्य होसके, इसलिये अभाव से भाव अर्थात् नास्ति से वा हुकम से जगत् की उत्पत्ति का होना सर्वथा असम्भव है, इससे यह ही जानना चाहिये कि ईश्वर ने जगत् के अनादि उपादान कारण से ही सब संसार को रचा है, अन्यथा नहीं ॥

यहां दो प्रकार का विचार स्थित होता है एक यह कि जो जगत् का कारण ईश्वर हो तो ईश्वर ही सारे जगत् का रूप हुआ तो ज्ञान, सुख, दुःख, जन्म, मरण हानि, लाभ, नरक, स्वर्ग, क्षुधा, तृषा,

نا ور نکل بھی آیا تو ایسی بات عالموں کی نہیں ہوتی اسمیں کوئی ثبوت نہیں ہے کیونکہ جو چیز ہے ہی نہیں وہ کیونکر ہوسکتی ہے - جیسے ہم لوگ اپنے اپنے مکانوں میں نہ ہوتے تو یہاں چاندپور میں نہ آسکتے تھے ۔ دیکھو شاستر میں بھی لکھا ہے کہ—

नासत आत्मलाभः । नसत आत्महानम् ॥

یعنی جو ہے سو آگے کو ہوتا ہے اور جو نہیں ہے وہ کبھی نہیں ہو سکتا - پس اس سے ثابت ہوچکا کہ نیستی سے ہستی کبھی نہیں ہو سکتی - کیونکہ اس جگت میں کوئی بھی ایسی چیز نہیں ہے کہ جسکی علت فاعلی کوئی نہو اس سے یہہ ثبوت ہوا کہ ہستی سے ہستی یا وجود سے وجود ہوتا ہے نیستی سے ہستی یا عدم سے وجود کسطرح نہیں ہوسکتا - یہہ اپنی بات کو آپ ہی کاٹنے کے برابر بات ہے - کیونکہ پہلے ایک چیز کو عدم مطلق کہہ کر پھر یہہ بھی کہنا کہ اُسکا وجود ہوگیا صریح پہلے قول کے خلاف ہے اُسکو کوئی عالم نہیں مانیگا کہ بدون علت فاعلی کے معلول ہوسکے کیونکہ اِسکو کوئی بھی کسیطرحسے ثبوت نہیں کرسکتا کہ نیستی سے ہستی اور حکم سے جگت کی پیدایش ہوسکے پس اس سے یہی جاننا چاہئے کہ ایشور نے جگت کی قدیم علت مادی سے سب دنیا کی چیزوں بنایا ہے اور کسیطرح نہیں -

اس موقع پر دو سوال پیدا ہوتے ہیں—

اول یہ کہ جو جگت کی علت فاعلی ایشور ہو تو ایشور ہی سارے جگت کا روپ ہوا ہے تو گیان - سکھ - دکھ - جنم - مرن - نرک - سرگ - بھوک - پیاس - تپ وغیرہ بیماریاں گرفتاری او

ज्वर आदि रोग, बन्ध और मोक्ष सब ईश्वर में ही घटते हैं फिर कुत्ता बिल्ली चोर दुष्ट आदि सब ईश्वर ही बन गया ॥

दूसरा यह कि जो सामग्री मानें तो ईश्वर कारीगर के समान होता है ॥

तो उत्तर यह है कि कारण तीन प्रकार का होता है—

एक उपादान, कि जिसको ग्रहण कर के किसी पदार्थ को बनावें, जैसे मिट्टी लेकर घडा और सोना लेकर गहना और रुई लेकर कपड़ा बनाया जाय।

दूसरा निमित्त, जैसे कुम्हार अपनी विद्या और सामर्थ्य के साथ घडे का बनाता है

तीसरा साधारण, जैसे चाक आदि साधन और दिशा, काल इत्यादि।

अब जो ईश्वर को जगत् का उपादान कारण मानें तो ईश्वर ही जगत् रूप बनता है, क्योंकि मिट्टी से घडा अलग नहीं होसकता, और जो निमित्त मानें तो जैसे कुम्हार मिट्टी के विना घड़ा नहीं बना सकता और जो साधारण मानें तो जैसे मिट्टी से अपने आप विना कुम्हार घड़ा नहीं बन सकता, इन दोनों व्यवस्थाओं में वह पराधीन वा जड़ ठहरता है। इस लिये जो यह कहते हैं कि ईश्वर जगत् रूप बन गया है तो उनके कहने से चोर आदि होने का दोष ईश्वर में आता है इस से ऐसी व्यवस्था माननी चाहिये कि जगत् का कारण अनादि है और नाना प्रकार के जगत् को बनाने वाला परमात्मा है, और इसी प्रकार जीव भी अपने स्वरूप से अनादि हैं, और स्थूल कार्य्य जगत् तथा जीवों के कर्म नित्य प्रवाह से अनादि हैं, ऐसे माने विना किसी प्रकार से निर्वाह नहीं हो सकता ॥

نجات سب ایسور میں ہی متصور ہوتے ہیں گویا کتا بلی چور بدمعاش وغیرہ ایشور ہی بنگیا *

دوسرے حولوازم مانیں تو ایسور صانع مخلوق کا ہوتا ہے —

تو جواب یہہ ہے کہ کارن تین طرح کے ہوتے ہیں —

اول علت مادی - کہ جسکو لیکر کسی چیز کو بناویں - جیسے مٹی لیکر گھڑا اور سونا لیکر زیور اور روئی لیکر کپڑا بنایا جاے *

دوم علت فاعلی - جیسے کمہار اپنے علم اور طاقت کے ساتھہ گھڑے کو بناتا ہے *

سوم علت آلی - جیسے چاک وغیرہ چیزیں اور آکاش اطراف اوقات وغیرہ *

اب جو ایسور کو جگت کی علت مادی مانیں تو ایشور ہی جگت روپ بنتا ہے کیونکہ مٹی سے گھڑا جدا نہیں ہو سکتا- اور علت فاعلی مانیں تو جیسے کمہار بغیر مٹی کے گھڑا نہیں بنا سکتا - اور علت آلی مانیں تو جیسے مٹی سے خود بخود گھڑا نہیں بنسکتا - تو ان دونوں صورتوں میں وہ محتاج بالغیر یا بے جان ٹھہرتا ہے—

اِس وجہہ سے جو یوہ کہتے ہیں کہ ایشور جگت روپ بنگیا ہے تو انکے کہنے سے چور وغیرہ ہونیکا عیب ایشور کی نسبت عاید ہوتا ہے اِسلئے یہی ماننا لازم ہے کہ دنیا کی علت فاعلی قدیم ہے اور طرح بہ طرح کے جگت کو بنانے والا پرماتما ہے اور اِسی طرح جیو بھی اپنے سروپ سے قدیم ہیں اور یہہ معلول جگت اور نیز جیوون کے کرم کبھی پیدا اور کبھی ناپید ہونیسے قدیم ہاں ایسے مانے بدون کسیطرح نرباہ نہیں ہوسکتا

अब यह कि ईश्वर ने किस समय जगत् को बनाया है अर्थात् संसार को बने हुए कितने वर्ष हो गये हैं इसका उत्तर दिया जाता है—

सुनो भाइयो इस प्रश्न का हमलोग तो उत्तर देसकते हैं आप लोग नहीं देसकते क्योंकि जब आप लोगों के मतों को कोई अठारह सौ वर्ष से कोई तेरह सौ वर्ष से और कोई पांच सौ वर्ष से उत्पत्ति है तोफिर आप लोगों के मत में जगत् के इतिहास के वर्षों का लेख किसी प्रकार नहीं होसकता और हम आर्य लोग सदा से कि जब से यह सृष्टि हुई है बराबर विद्वान् होते चले आये हैं। देखो इस देशसे और सब देशों में विद्या गई है, इस बात में सब देश वालों के इतिहासों का प्रमाण है कि आर्य्यावर्त्त देश से मिस्र देश मे और वहां से युनान और युनान से योरोप आदि में विद्या फैली है। इसलिये इस का इतिहास किसी दूसरे मत मे नहीं होसकता॥

देखो हम आर्य्य लोग संसार की उत्पत्ति और प्रलय के विषय में वेद आदि शास्त्रों की रीति से सदा से जानते हैं कि हज़ार चतुर्युगियों का एक ब्राह्म दिन और इतने ही युगों की एक ब्राह्म रात्री होती है अर्थात् जगत् की उत्पत्ति होके जब तक कि वर्त्तमान होता है उस का नाम ब्राह्म दिन है और प्रलय होके जब तक हजार चतुर्युगी पर्य्यन्त उत्पत्ति नहीं होती उसका नाम ब्राह्म रात्री है। एक कल्प मे चौदह मन्वन्तर होते हैं, ओर प्रत्येक मन्वन्तर ७१ चतुर्युगियों का होता है। सो इस समय सातवां वैवस्वत मन्वन्तर वर्त्तमान हो रहा है और इस से पहिले ये छः मन्वन्तर बीत चुके हैं —

स्वायंभव, स्वारोचिष, औत्तमि, तामस,

اب یہ کہ ایشور نے کسوقت جگت کو بنایا ہے یعنی اس دنیا کو بنے ہوئے کتنے برس ہو گئے ہیں اسکا جواب دیا جاتا ہے —

سنو بھائیو اس سوال کا جواب ہم لوگ تو دے سکتے ہیں آپ لوگ نہیں دے سکتے کیونکہ جب آپ لوگوں کے مذہب کوئی اٹھارہ سو برس کوئی تیرہ سو برس کوئی پانچسو یا سات سو برس سے پیدا ہوئے ہیں تو پھر آپ لوگوں کے مذہب میں خلقت کی پیدایش کی تحریر کسطرح نہیں ہوسکتی - ہم لوگ ہمیشہ سے کہ جبسے یہ دنیا ہوئی ہے تبسے برابر عالم و فاضل ہوتے چلے آئے ہیں - دیکھو اس ملک سے اور سب ملکوں میں علم گیا ہے - اس امر میں سب ملک والوں کے تواریخ گواہ ہیں کہ آریاورت سے مصر میں اور وہاں سے یونان اور یونان سے یورپ وغیرہ میں علم پھیلا ہے اسلئے خلقت کی پیدایش کی تحریر کسی دوسرے کے مت میں ہرگز نہیں ہوسکتی *

دیکھو ہم آریہ لوگ دنیا کی پیدایش اور پرلے کے بارہ میں وید شاستروں کی رو سے ہمیشہ سے جانتے ہیں کہ ہزار چوکڑیوں یا چار جگوں کا ایک برہم دن اور اتنی ہی جگوں چوکڑیوں کی برہم رات ہوتی ہے یعنی خلقت کی پیدایش ہوکے جب تک کہ وہ قائم رہتا ہے اسکا نام برہم دن ہے اور جبتک پرلے ہوکر ہزار چوکڑی جگوں تک پیدایش نہیں ہوتی اسکا نام برہم رات ہے - ایک برہم دن کی میعاد میں چودہ منونتر ہوتے ہیں اور ہر ایک منونتر اکہتر چوکڑی جگوں کا ہوتا ہے - سو اجکل ساتواں ویوست منونتر ہے اور اس سے پہلے چھ منونتر گذر چکے ہیں
स्वायंभव, स्वारोचिष औत्तमि — [illegible]
तामस, रैवत, चाक्षुष।

वैवस्वत, घोर वासुप॥ अर्थात् १९६०८५२९७६ वर्षों का भोग हो चुका है और अब २३३३२२७०२४ वर्ष इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं। सो हमारे देश के इतिहासों में यथार्थ क्रम से सब बातें लिखी हैं और ज्योतिष शास्त्र में भी मितीवार प्रति सम्वत् घटाते बढ़ाते रहे हैं और ज्योतिष की रीति से जो वर्षपत्र बनता है उस में भी यथावत् सब को क्रम से लिखते चले आते हैं अर्थात् एक२ वर्ष घटाते और एक२ वर्ष भोग में आज तक बढ़ाते आये हैं, इस बात में सब आर्य्यावर्त्त देश के इतिहास एक हैं, किसी में कुछ विरोध नहीं॥

फिर जब कि जैन मत वाले और मुसलमान इस देश के इतिहासों को नष्ट करने लगे तब आर्य्यलोगों ने सृष्टि के इतिहास को कंठस्थ करलिया, सो बालक से लेके वृद्ध तक नित्य प्रति उच्चारण करते हैं कि जिस को संकल्प कहते हैं और वह यह है—

ओं तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे आर्य्यावर्त्तान्तरैकदेशे ऽमुक नगरेऽमुकसंवत्सरायनर्त्तु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहूर्त्तेऽत्रे दंकार्यं क्रतं क्रियते वा॥

जो इस को ही विचारले तो इससे सृष्टि के वर्षों की गणना बराबर जान पड़ती है॥

जो कोई यह चाहे कि हम इस बात को नहीं मान सकते तो उसका उत्तर यह है कि जो परम्परा से मितीवार दिन बढ़ाते चले आते हैं और जब कि इतिहासों और ज्योतिष शास्त्रों में भी इसी प्रकार लिखा है तो फिर इस को मिथ्या कोई नहीं कह सकता, जैसे कि बही खाते में प्रतिदिन मितीवार लिखते हैं और उस को

پس ایک ارب چھانوے کروڑ آٹھہ لاکھہ باون ہزار نوسو چھتر (۱۹۶۰۸۵۲۹۷۶) برس گذر چکے ہیں اور اب دو ارب تینتیس کروڑ بتیس لاکھہ ستائیس ہزار چوبیس (۲۳۳۳۲۲۷۰۲۴) برس آگے کو باقی ہیں

سو ہمارے ملک کی تواریخوں میں جیون کی تیوں بالترتیب سب باتیں لکھی ہیں اور جوتش شاستر میں بھی تاریخ وار ایک ایک سال گھٹاتے بڑہاتے رہے ہیں اور جوتش کے قاعدہ سے جو جنتری بنتی ہے اسمیں بھی ٹھیک ٹھیک بالترتیب لکھتے چلے آتے ہیں یعنے ایک ایک برس گھٹاتے اور ایک ایک برس آجتک بڑہاتے آئے ہیں - سب آریاورت دیش کی تواریخ اس بات میں متفق ہیں کسی میں کچھہ اختلاف نہیں *

پھر جبکہ جین مت والے اور مسلمان اس ملک کی کتابوں کو غارت کرنے لگے تب آریالوگوں نے دنیا کی پیدائش کی تاریخ کو حفظ کرلیا سو بالک سے لیکر بوڑھے تک روزمرہ کہتے ہیں اسکا نام سنکلپ ہے اور وہ یہہ ہے —

ओं तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे वैवस्वते मन्वंतरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे आर्य्यावर्त्तान्तरैकदेशेऽमुक नगरेऽमुक संवत्सरायनर्त्तु मासपक्ष दिन नक्षत्र मुहूर्तेऽत्रे दंकार्य्यं क्रतं क्रियते वा॥

جو اسپر ہی غور کرے تو اس سے دنیا کی پیدائش کا زمانہ بخوبی ظاہر ہوتا ہے *

اگر کوئی یہہ کہے کہ ہم اسبات کو نہیں مان سکتے تو اسکا جواب یہہ ہے کہ جو قدیم سے تاریخ وار دن چڑہاتے چلے آتے ہیں اور جبکہ تواریخوں اور جوتش شاستروں میں بھی ایسے ہی لکھا ہے تو پھر اسکو غلط کوئی نہیں کرسکتا جیسے بہی کھاتہ میں روز تاریخوار لکھتے ہیں اور اسکو کوئی جھوٹھہ نہیں کہسکتا

कोई भूठ नहीं कह सकता, और जो यह कहता है उस से भी पूछना चाहिये कि तुम्हारे मत मे सृष्टि की उत्पत्ति को कितने वर्ष हुए है तब यह क्या तो छः हज़ार क्या सात हज़ार क्या आठ हज़ार वर्ष बतलावे गा तो वह भी अपने पुस्तकों के अनुसार कहता है, तो इसी प्रकार उस को भी कोई नहीं मानेगा क्योंकि यह पुस्तक की बात है ॥

और देखो भूगर्भ विद्या से जो देखा जाता है तो उसमे भी यह ही गणना ठीकर आती है ॥

इस लिये हम लोगों के मत में तो जगत् के वर्षों की गिनती बन सकती है और किसी के कदाचित् नहीं, इसलिये यह व्यवस्था सृष्टि की उत्पत्ति के वर्षों की सब को ठीक माननी उचित है ॥

अब यह कि ईश्वर ने किस लिये सृष्टि को उत्पन्न किया इस का उत्तर दिया जाता है —

जीव और जगत् का कारण स्वरूप से अनादि और जीव के कर्म तथा कार्य जगत् नित्य प्रवाह से अनादि है, जब प्रलय होता है तब जीवों के कुछ कर्म शेष रहजाते है तो उनके भोग कराने के लिये और फल देने के लिये ईश्वर सृष्टि को रचता है और अपने पक्षपात रहित न्याय को प्रकाशित करता है, ईश्वर में जो ज्ञान, बल, दया आदि और रचने की अत्यन्त शक्ति है उनके सफल करने के लिये उसने सृष्टि को रचा है — जैसे आंख देखने के लिये और कान सुनने के लिये हैं वैसे ही रचना शक्ति रचने के लिये है। सो अपनी सामर्थ्य की सफलता करने के लिये ईश्वर ने इस जगत् को रचा है कि

اور جو یہہ کہتا ہے اُسسے بھی پوچھنا چاہئے کہ تمہارے مت میں دنیا کی پیدایش کو کتنے برس ہوئے ہیں تب وہ کیا تو چھہ ہزار کیا سات کیا آٹھہ ہزار برس بتلاویگا - وہ بھی گویا اپنی کتابوں کی روسے کہتا ہے تو اِسیطرح اُسکو بھی کوئی نہیں مانیگا کیونکہ یہہ کتاب کی بات ہے ٭

اور دیکھو بھوگربھ ودیا (یعنی زمین کے طبقات یعنی تہوں کے دیکھنے کی مدت معلوم ہونے کا علم) سے جو دیکھا جاتا ہے تو اُس سے بھی اُسی قدر اُسکی تعداد شمار میں آتی ہے - ہم آریہ لوگوں کے مت میں تو جگت کے برسوں کی گنتی بن سکتی ہے اور کسیکی ہرگز نہیں - اسلئے یہہ تعداد دنیا کی پیدایش کی سبکو ٹھیک ماننا واجب ہے ٭

اب یہہ کہ ایشور نے کسلئے دنیا کو بنایا اسکا جواب دیا جاتا ہے — جیو اور جگت کی علت مادی صورت سے قدیم اور جیوکے کرم اور معلول جگت بار بار پیدا اور نابود ہونیسے قدیم ہیں جب پرلے ہوتا ہے تب جیووں کے کچھہ کرم باقی رہتے ہیں تو اُنکے بھوگ کرانے اور پھل دینے کیلئے ایشور دنیا کو بناتا ہے تاکہ اپنے بے طرفدار عدل کو ظاہر کرے ایشور میں جو گیان - قدرت - رحم وغیرہ اور بنانے کی قدرت مطلق ہے اُنکے مفید ہونے کے لئے دنیا کو بنایا ہے - جیسے آنکھہ دیکھنے [illegible] اور کان سننے کے لئے موضوع ہیں ویسے ہی [illegible] کی قدرت پیدا کرنے کے [illegible] سو اپنی سب قدرت کے مفید [illegible] حکمت [illegible] ایشور نے بنایا

के सब लोग सब पदार्थों से सुख पावें। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये जीवों के नेत्र आदि साधन भी रचे हैं॥ इसी प्रकार सृष्टि के रचने से और भी अनेक प्रयोजन हैं कि जो समय कम रहने से अब नहीं कहे जा सकते विद्वान् लोग आप जान लेंगे॥

पादरी स्काट साहब

जिस की सीमा होती है वह अनादि नहीं हो सकता, जगत् सीमा निरूपण है इसलिये वह अनादि नहीं हो सकता। कोई पदार्थ अपने आप को नहीं रच सकता, परन्तु ईश्वर ने जगत् को अपनी सामर्थ्य से रचा है। कोई नहीं जानता कि ईश्वर ने किस पदार्थ से रचा है और पण्डित जी ने भी नहीं बताया कि किस पदार्थ से जगत् को रचा॥

मौलवी मुहम्मद क़ासम साहब

जब कि सब पदार्थ सदा से हैं तो ईश्वर को मानना व्यर्थ है। कोई उत्पत्ति का समय नहीं कह सकता॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

(पादरी साहब के उत्तर में)

पादरी साहब मेरे कहे को नहीं समझे मैं तो केवल जगत् के कारण को ही अनादि कहता हूं और जो कार्य है सो अनादि नहीं होता जैसे मेरा शरीर साढ़े तीन हाथ का है सो उत्पन्न होने से पहिले ऐसा न था और न नाश होने के पश्चात् ही ऐसा रहेगा पर इसमें जितने परमाणु हैं वे नष्ट नहीं होते, इस शरीर के परमाणु पृथक् २ होकर आकाश में बने रहते हैं॥

ہے تاکہ سب لوگ سب چیزوں سے آرام پاوین دہرم ارتھہ کام موکش حاصل کرنیکے لئے جیوون کے آنکہہ وغیرہ بھی بنائی ہیں غرضیکہ اِس دنیا کے پیدا کرنیمیں بے انتہا اغراض ہیں کہ جو اب وقت کم رہجانیسے نہیں بیان ہوسکتیں - عاقل خود جانلینگے

پادري اسکاٹ صاحب

جسکی حد ہو تي ہے وہ قدیم نہیں ہوسکتا جگت حدود سے محدود ہے پس وہ قدیم نہیں ہو سکتا - کوئي چیز اپنے آپ کو نہیں بناسکتی لیکن ایسور نے جگت کو اپني قدرت سے بنایا ہے - کوئي نہیں جانتا کہ ایسور نے کس چیز کو لیکر بنایا ہے اور پنڈت جي نے بھی نہیں بتایا کہ کس چیز سے جگت کو بنایا

مولوي محمد قاسم صاحب

جبکہ ساری چیزیں ہمیشہ سے ہیں تو ایسور کو ماننا لاحاصل ہے - کوئي پیدایش کا وقت نہیں کہہ سکتا

سوامی دیانند سرستی جی

(بجواب پادري صاحب)

پادري صاحب میرے بیان کو اچھی طرح نہیں سمجھے

میں تو محض جگت کي علت مادّي کو قدیم کہتاہوں- جو معلول ہے سو قدیم نہیں ہوتا جیسے میرا جسم ساڑہے تین ہاتھہ کا ہے سو قبل پیدا ہونیکے ایسا نہیں تھا اور ناش ہونیکے بعد بھي ایسا نہیں رہیگا پر اِسمیں جتنے پرمانو یعنے جزولایتجزي ہیں وے ضایع نہیں ہوتے اس جسم کے پرمانو الگ الگ ہو کر آکاش میں بنے رہتے ہیں

और उन परमाणुओं में जो संयोग और वियोग * की शक्ति है तो वह सदा उन में रहती है॥ जैसा मिट्टी से घड़ा बनाया जोकि बनाने के पहिले नहीं था और नाश होने के पश्चात् भी नहीं रहेगा, परन्तु उस में जो मिट्टी है वह नष्ट नहीं होती और जो गु-

اُن پرمانوؤں میں جو اکٹھا ہونے اور جدا + ہونے کی طاقت ہے وہ ہمیشہ اُن میں رہتی ہے جیسے مٹی سے گھڑا بنایا جو کہ بنانے کے پہلے نہیں تھا اور ناش ہونے کے پیچھے بھی نہیں رہیگا لیکن اُسمیں جو مٹی ہے وہ ناش نہیں ہوتی اور

* सब लोग देखते हैं कि अग्नि में बहुतसे पदार्थ जल जाते हैं, अब विचार करना चाहिये कि जब कोई पदार्थ जल जाता है तो क्या होजाता है। देखने में आता है कि लकड़ी जलकर थोडी सी राख रह जाती है तो अब यह विचारना चाहिये कि जलने से वह पदार्थ ही नष्ट होजाता है वा उस का स्वरूप ही बदल जाता है। जब मोम बत्ती जलाते हैं तो देखने में वह मोम नहीं रहता, यह नहीं जानपड़ता कि कहां गया परन्तु उस मोम का स्वरूप बदल कर वायु के सदृश हो जाता है, और इसी कारण वायु में मिलजाने से दृष्टि में नहीं आता॥

इस की परीक्षा के लिये एक बोतल के भीतर मोम बत्ती जलाओ और उसका मुख बंद करदो, तो उस बत्ती का जितना भाग वायु के सदृश हो जावेगा वह बोतल से बाहर नहीं जा सकेगा पर थोडी देर के पीछे यह दिखलाई देगा कि वह बत्ती बुझ गई॥

अब यह सोचना चाहिये कि बत्ती क्यों बुझ गई। और बोतल के वायु में अब कुछ भेद हुआ वा नहीं।

इस बात की परीक्षा इस प्रकार होगी कि थोडा सा चूने का पानी उस बोतल में और एक और बोतल में कि जिस में केवल वायु भरा हुआ हो और उस में कोई बत्ती न जली हो डालो, तो यह दिखलाई देगा कि जिस बोतल में बत्ती जली है उस में चूने का रंग दूध सा हो जावेगा और दूसरी बोतल का जैसे का तैसा रहेगा, इस से सिद्ध हुआ कि बत्ती के जलाने से कोई नई वस्तु बोतल के वायु में मिलगई है। वह एक वस्तु वायु के सदृश है कि जो दृष्टि में नहीं आता। अब देखना चाहिये कि मोम बत्ती का कोई परमाणु नष्ट नहीं होता पर जिन पदार्थों से वह बत्ती बनी है उन का स्वरूप भिन्न हो जाता है॥

+ سب لوگ یہہ دیکھتے ہیں کہ آگ سے بہت سے اجسام جل جاتے ہیں۔ اب غور کرنا چاہئے کہ جب کوئی چیز جلتی ہے تو کیا ہوتی ہے؟ دیکھنے میں یہہ معلوم ہوتا ہے کہ لکڑی جلکر تھوڑی سی راکھہ رہجاتی ہے تو اب یہہ دریافت کرنا چاہئے کہ جلنے سے کسی جسم کا کچھہ حصہ حقیقت میں نیست ہو جاتا ہے یا صورت حالت میں تبدیلی ہوتی ہے؟ جب موم بتی جلاتے ہیں تو ظاہر میں معلوم ہوتا ہے کہ موم نیست ہوگیا یہہ نہیں نظر آتا کہ وہ کیا ہوا۔ پر حقیقت میں موم بدلکر ہوا کی شکل کی چیز بنجاتی ہے اور ہوا میں ملنے کے سبب سے نہیں نظر آتا۔ اسکے تجربہ کے لئے ایک بوتل کے اندر موم بتی جلاؤ اور اُسکا مُنہہ بند کردو تو معلوم ہوگا کہ اگر موم بتی کا کچھہ حصہ ہوا کی شکل میں تبدیل ہوجائیگا تو وہ بوتل کے باہر نہیں جاسکیگا۔ پر اس تجربہ میں تھوڑے عرصہ کے بعد یہہ نظر آویگا کہ بتی بجھہ گئی۔ اب غور کرنا چاہئے کہ بتی کیوں بجھی؟ اور بوتل کی ہوا میں کچھہ فرق ہوا یا نہیں؟ اس بات کو اسطرح سے معلوم کرو کہ تھوڑا سا چونے کا پانی اس بوتل میں اور پھر ایک اور بوتل میں کہ جسمیں صرف ہوا بھری ہو اور کوئی بتی نہ جلی ہو ڈالو تو یہہ نظر آویگا کہ جس بوتل میں بتی جلی ہے اسمیں چونے کا رنگ دودھہ سا ہوجاویگا پر دوسری بوتل میں کچھہ تبدیلی نہ ہوگی۔ اس سے ثابت ہوا کہ بتی جلنے سے کوئی نئی چیز بوتل کی ہوا میں ملجاتی ہے۔ وہ ایک جسم ہوا کی طرح ہے جو نظر نہیں آتا۔ حقیقت میں موم بتی کا کوئی ذرہ نیست نہیں ہوتا پر جن چیزوں سے بتی بنی ہے اُنکی حالت میں فرق ہوجاتا ہے

ग अर्थात् चिकनापन उस में है कि जिससे वह पिण्डाकार होता है वह भी मिट्टी में सदा से है; वैसे ही संयोग और वियोग होने की योग्यता परमाणुओं में सदा से है ॥ इससे यह समझना चाहिये कि उन परमाणु द्रव्यों से यह जगत् बना है, वे द्रव्य अनादि हैं, कार्य्य द्रव्य नहीं ॥ और मैं ने यह कब कहा था कि जगत् के पदार्थ स्वयं अपने को बना सकते हैं, मेरा कहना तो यह था कि ईश्वर ने उस कारण से जगत् को रचा है ॥

और जो पादरी साहब ने कहा कि शक्ति से जगत् को रचा है तो मैं पूछता हूं कि शक्ति कोई वस्तु है वा नहीं ? जो कहो कि है, तो वह अनादि हुई और जो कहो कि नहीं तो उससे आगे को दूसरी कोई वस्तु भी नहीं बन सकती। और जो पादरी साहब ने यह कहा कि पण्डित जीने यह नहीं बताया कि किस से यह जगत् बना है, कदाचित् पादरी साहब ने नहीं सुना होगा मैंने तो जिससे यह कार्य्य जगत् बना है उसको प्रकृति आदि नामों से कि जिस को परमाणु भी कहते हैं कहा था ॥

(मौलवी साहबके उत्तर में)

सब पदार्थों का कारण अनादि है तो भी ईश्वर को मानना अवश्य है, क्योंकि मिट्टी में यह सामर्थ्य नहीं कि आप से आप घडा बनजाय। जो कारण होता है वह आप कार्य्य रूप नहीं बन सकता क्योंकि उस में बनने का ज्ञान नहीं होता और कोई जीव भी उस को नहीं बना सकता आज तक किसी ने कोई वस्तु ऐसी नहीं बनाई जैसा कि यह मेरा शरीर है, ऐसी वस्तु कोई नहीं बना सकता और आज तक ऐसा कोई मनुष्य नहीं हुआ और न है कि जो

جو چکنا پن اُس میں ہے کہ جسسے وہ بشکل گولہ کے ہوتی ہے وہ مٹی میں ہمیشہ سے ہے ویسے ہی اکٹھا ہونے اور جدا ہونے کی طاقت پرمانوں میں ہمیشہ سے ہے - اِس سے یہہ سمجھنا چاہئے کہ اُن پرمانوؤں سے یہہ جگت بنا ہے - وے پرمانو قدیم ہیں - معلول جگت پرمانو نہیں

اور میں نے یہہ کب کہا تھا کہ جگت کی چیز خود اپنے آپ کو بنا سکتی ہیں - میرا کہنا تو یہہ تھا کہ ایسور نے علت فاعلی سے اِس جگت کو بنایا ہے - اور جو پادریصاحب نے کہا کہ قدرت سے جگت کو بنایاہے تو میں پوچھتا ہوں کہ قدرت کوئی چیز ہے یا نہیں ؟ اگر کہو کہ کوئی چیز ہے تو وہ قدیم ہوئی والا یہہ کہو کہ کوئی چیز نہیں ہے تو اُس سے آگے کو دوسری چیزیں بھی بن نہیں سکتیں اور جو پادری صاحب نے یہہ کہا کہ پنڈت جی نے یہہ نہیں بتایا کہ کس چیز سے یہہ جگت بنا ہے شاید پادری صاحب نے نہیں سنا ہوگا کیونکہ میںنے تو پرکرتی وغیرہ ناموںسے علت فاعلی کو کہاتھا جسکا نام پرمانو بھی ہے کہ اُس سے یہہ معلول جگت بنا ہے .

(مولویصاحب کے بیان پر)

سب چیزوںکی علت فاعلی قدیم ہے تو بھی ایشور کو ماننا ضرور ہے کیونکہ مٹی میں یہہ طاقت نہیں کہ اپ سے آپ گھڑا بنجائے جو علت فاعلی ہوتی ہے وہ آپ معلول نہیں بن سکتی کیونکہ اُسمیں بننیکا گیان نہیں ہوتا اور کوئی جیو بھی اُسکو نہیں بناسکتا - آجتک کسی نے کوئی چیز ایسی نہیں بنائی جیسا کہ میرا بدن ہے - ایسی چیز کوئی نہیں بناسکتا آجتک کوئی ایسا شخص نہیں ہوا ہے اور نہ اس وقت ہے کہ جو کسی دو ترش چیزوںکو

परमाणुओं को पकड़ के किसी युक्ति से उनसे ऐसी वस्तु बनासके, कोई दो त्रिसरेणुओं काभी संयोग नहीं करसकता, इससे यह सिद्ध हुआ कि केवल उस परमेश्वर को ही यह सामर्थ्य है कि सब जगत् को रचे ॥ देखो एक आंख की रचना में ही कितनी विद्या का दृष्टान्त है, आजतक बड़े २ वैद्य अपनी बुद्धि लगाते चले आते हैं तो भी आंख की विद्या अधूरी ही है कोई नहीं जानता कि किस २ प्रकार और क्या २ गुण ईश्वर ने उस में रक्खे हैं। इस लिये सूर्य्य चांद आदि जगत् का रचना और धारण करना ईश्वर ही का काम है, तथा जीवों के कर्मों के फल का पहुंचाना यह भी परमात्मा ही का काम है किसी दूसरेका नहीं इस से ईश्वर को मानना अवश्य है ॥

एक हिंदुस्तानी पादरी साहब

जब दो वस्तु हैं एक कार्य्य दूसरा कारण तो दोनों अनादि नहीं होसकते इससे ईश्वर ने नास्तिसे अस्ति अपनी सामर्थ्यसे कीहै

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

गुण दो प्रकार के होते हैं एक अंतस्थ दूसरा बाह्य अंतस्थ तो अपने में होते है और बाह्य दूसरे से अपने में आते हैं। और अंतस्थ गुण दूसरे में जाकर वैसे ही बनजाते है परन्तु जिसके गुण होते है वह उन से पृथक् होताहै जैसे सूर्य्य का प्रतिबिम्ब जिस वर्तन में पडताहै वैसा ही बनजाता है परन्तु सूर्य्य नहीं होजाता, वैसे ही ईश्वर ने हमको अपनी इच्छा से बनायाहै

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

(ईसाई साहब के उत्तर में)

आप दोनों के अनादि होने में क्यों शंका करतेहै क्योंकि जितने पदार्थ इस जगत् में बने हैं उन सब का कारण अर्थात् परमाणु

نہیں بنسکے - اس سے یہہ صاف ظاہر ہے کہ صرف اُس پرمیشور ہی کو یہہ قدرت ہے کہ سب جگت کو بناوے - دیکھو ایک آنکھہ ہی کی بناوٹ کتنے مختلف علوم کی تمثیل ہے آجتک بڑے بڑے حکماء غور کرتے کرتے اپنی عقل کو خرچ کرتے چلے آئے تو بھی آنکھہ کے جاننے کا علم ادھورا ہے کہ کس کس طرح اور کیا کیا صفتیں اُسمیں ایشور نے رکھی ہیں اُنکو - اور ایشور کے کوئی اور کوئی نہیں جانسکتا - اسلئے سورج چاند دنیا وغیرہ کا بنانا اور قایم رکھنا صرف ایشور ہی کا کام ہے اور جیووں کے کرموں کے پھل کا پہونچانا یہہ بھی پرماتما کا ہی کام ہے کسی دوسرے کا نہیں - اس سے ایشور کو ماننا ضرور ہے

ایک ہندوستانی عیسائی صاحب

جب کہ دو چیزیں ہیں ایک معلول دوسری علت باطنی تو دونوں قدیم نہیں ہوسکتیں اس سے ایشور نے نیستی سے ہستی اپنی قدرت سے کی ہے

مولوی محمد قاسم صاحب

وصف دو قسم کے ہوتے ہیں ایک باطنی دوسرے ظاہری - باطنی تو اپنی ذات میں ہوتے ہیں اور ظاہری دوسرے سے اپنے میں آتے ہیں - باطنی اوصاف دوسرے میں جاکر ویسے ہی بنجاتے ہیں لیکن جسکے وصف ہوتے ہیں وہ اُس سے جدا ہوتا ہے جیسے سورج کا عکس برتن جس برتن میں پڑتا ہے ویسا ہی بنجاتا ہے لیکن سورج نہیں بنجاتا ایسے ہی ایشور نے ہمکو اپنے ارادہ سے بنایا ہے

سوامی دیانند سرستی جی

(عیسائی صاحب کے جواب میں)

آپ دونوں کے قدیم ہونے میں کیوں شک کرتے ہیں کیونکہ جسقدر چیزیں اس جگت میں بنی ہیں سب کی علت باطنی قدیم ہے

आदि सब अनादि हैं और जीव भी अनादि हैं कि जिनकी संख्या कोई नहीं बतासकता, और नास्ति से अस्ति कभी नहीं हो सकती सो मैं पहिले कह चुका हूं परन्तु आप जो कहते हैं कि शक्ति से बनाया तो बतलाओ कि शक्ति क्या वस्तु है ? जो कहो कि कोई वस्तु है, तो फिर वही कारण ठहरने से अनादि हुई। और ईश्वर के नाम गुण कर्म सब अनादि हैं कोई अब नहीं बने

(मौलवी साहब के उत्तर में)

आप जो यह कहो कि भीतर के गुणों से जगत् बनाहै तो भी नहीं बन सकता, क्योंकि गुण द्रव्यके विना अलग नहीं रह सकते और गुण से द्रव्य बन भी नहीं सकता। जब भीतर के गुणों से जगत् बना है तो जगत् भी ईश्वर हुआ, जो यह कहो कि बाहर के गुणों से जगत् बना तो ईश्वर के सिवाय आप को भी वे गुण और द्रव्य अनादि मानने पड़ेंगे। और जो यह कहो कि इच्छा से हम लोग बनगये तो मेरा यह प्रश्न है कि इच्छा कोई वस्तु है वा गुण है ? जो वस्तु कहोगे तो वह अनादि ठहर जायगी, और जो गुण मानोगे तो जैसे केवल इच्छा से घड़ा नहीं बन सकता परन्तु मिट्टी से बनता है तो वैसे ही इच्छा से हम लोग भी नहीं बन सकते॥

पादरी स्काट साहब

हम लोग इतना जानते हैं कि नास्ति से अस्ति को ईश्वर ने बनाया, यह हम नहीं जानते कि किस पदार्थ से और किस प्रकार यह जगत् बनाया; इस को ईश्वर ही जानता है, मनुष्य कोई नहीं जान सकता॥

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

ईश्वर ने अपने प्रकाश से जगत् बनाया है॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

اور جیو بھی قدیم ہیں کہ جنکی تعداد کوئی نہیں بیان کرسکتا اور نیستی سے ہستی کبھی نہیں ہوسکتی سومیں پہلے کہہ چکا ہوں لیکن آپ جو کہتے ہیں کہ قدرت سے بنایا تو بتلاو کہ قدرت کیا چیز ہے جو کہو کہ کوئی چیز ہے تو یہی علت فاعلی ٹہیرنے سے قدیم ہوئی اور ایسور کے نام گن کرم سب قدیم ہیں کوئی حال میں بنانے سے نہیں بنا *

(مولوی صاحب کے بیان پر)

آپ جو کہو کہ باطنی اوصاف سے جگت بنا ہے تو بھی نہیں بن سکتا - کیونکہ اوصاف موصوف کے بغیر الگ نہیں رہ سکتے - اور اوصاف سے موصوف بن بھی نہیں سکتا جب باطنی اوصاف سے جگت بنا تو جگت بھی ایسور ہوا اگر یہہ کہو کہ ظاہری اوصاف سے جگت بنا تو ایشور کے سوائے آپکو بھی وے اوصاف اور موصوف قدیم ماننے پڑینگے و الا یہہ کہو کہ ارادہ سے ہم لوگ بنگئے تو میرا یہہ سوال ہے کہ ارادہ کوئی چیز ہے یا اوصاف ہے ؟ اگر چیز کہوگے تو وہ قدیم ٹہبر جائنگی اور جو وصف مانوگے تو جیسے صرف خواہش سے گھڑا نہیں بن سکتا الا مٹی سے بنتا ہے تو ویسے ہی ارادہ سے ہم لوگ بھی نہیں بن سکتے *

پادری اسکاٹ صاحب

ہم لوگ اتنا جانتے ہیں کہ نیستی سے ہستی کو ایشور نے بنایا اور یہہ ہم نہیں جانتے کہ کس چیز سے اور کسطرح یہہ جگت بنایا اسکو ایشور ہی جانتا ہے انسان کوئی نہیں جان سکتا *

مولوی محمد قاسم صاحب

خدا نے اپنے نور سے جگت کو بنایا ہے *

سوامی دیانند سرسوتی جی

(पादरी साहब के उत्तर में)

कार्य्यको देखकर कारणको देखना चाहिये कि जो वस्तु कार्य्य है वैसा ही उस का कारण होता है, जैसे घड़े को देखकर उसका कारण मिट्टी जान लिया जाता है, कि जो वस्तु घड़ा है वही वस्तु मिट्टी है। आप कहते हैं कि अपनी शक्ति से जगत् को रचा सो मेरा यह प्रश्न है कि वह शक्ति अनादि है वा पीछे से बनी है? जो अनादि है तो द्रव्य रूप उसको मान लो, तो उसीको जगत् का अनादि कारण मानना चाहिये ॥

(मौलवी साहब के उत्तर में)

नूर कहते हैं प्रकाश को, उस प्रकाश से कोई दूसरा द्रव्य नहीं बन सकता, परन्तु वह नूर मूर्त्तिमान् द्रव्य को प्रसिद्ध दिखला सकता है और वह प्रकाश करने वाले पदार्थ के बिना अलग नहीं रहसकता। इससे जगत् का जो कारण प्रकृति आदि अनादि है उसको माने बिना किसी प्रकार से किसी का निर्वाह नहीं हो सकता, और हम लोग भी कार्य्य को अनादि नहीं मानते परन्तु जिससे कार्य्य बना है उस कारण को अनादि मानते है

एक हिंदुस्तानी ईसाई साहब

जो ईश्वर ने अपनी प्रकृति से सब संसार को रचा तो उसकी प्रकृति में सब संसार सनातन था, और वह उसकी प्रकृति में अनादि था तो ईश्वर ही की सीमा होगई

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

जब कि ईश्वर की प्रकृति में सब जगत् था तब ही तो वह अनादि हुआ और वही अनादि वस्तु रचने से सीमा में आई अर्थात् लम्बा चौड़ा, बड़ा, छोटा आदि

(پادری صاحب کے بیان پر)

معلول کو دیکھکر علت کو دیکھنا چاہئے کہ جو چیز معلول ہے ویسی ہی اسکی علت ہوتی ہے جیسے گھڑے کو دیکھکر اسکی علت مٹی مانی جان لیتے ہیں کہ جو چیز گھڑا ہے وہی چیز مٹی ہے - او آپ کہتے ہیں کہ اپنی قدرت سے خلقت کو بنایا سو میرا یہہ سوال ہے کہ وہ قدرت قدیم ہے یا پیچھے سے بنی ہے؟ اگر قدیم ہے تو اسکو صورت والی سے مان لو - تو اسکو سب جگت کی علت ماننی چاہئے ۔

(مولوی صاحب کے بیان پر)

نور کہتے ہیں پرکاش کو اس پرکاش سے کوئی دوسری چیز نہیں بنسکتی الا وہ نور صورت والی چیز کو ظاہر دکھلا سکتا ہے اور وہ پرکاش کرنے والی شے کے بغیر جدا نہیں رہسکتا - اس سے خلقت کی علت والی پرکرتی وغیرہ قدیم ہے - اسکو مانے بنا کسی طرح کسیکا نباہ نہیں ہوسکتا - اور ہم لوگ بھی معلول کو قدیم نہیں مانتے جس سے معلول بنا ہے اس علت مادی کو قدیم مانتے ہیں ۔

ایک ہندوستانی عیسائی صاحب

[illegible]

سوامی دیانند سرستی جی

[illegible]

सब प्रकार का ईश्वर ने उस में से बनाया। इसलिये रचे जानेसे केवल जगत् ही की सीमा हुई ईश्वर की नहीं ॥

अब देखिये मैंने जो पहिले कहा था कि नास्ति से अस्ति कभी नहीं होसकती किन्तु भाव से ही भाव होता है सो आप लोगों के कहने से भी वह बात सिद्ध हो गई कि जगत् का कारण अनादि है ॥

ईसाई साहब

सुनो भाई मलवी साहबो ! कि पण्डित जी इसका उत्तर हज़ार प्रकार से देसकते हैं हम और तुम हजारों मिलकर भी इन से बात करें तो भी पण्डित जी बराबर उत्तर दे सकते हैं, इस लिये इस विषय में अधिक कहना उचित नहीं ॥

ग्यारह बजे तक यह वार्त्ता हुई, फिर सब लोग अपने २ डेरों को चले गये और सब जगह मेले में यही बात चीत होती थी कि जैसा पण्डित जी को सुनते थे उससे सहस्र गुणा पाया ॥

दोपहर के पश्चात् की सभा

फिर एक बजे सब लोग आये और इस पर विचार किया कि अब समय बहुत थोड़ा और बातें बहुत बाकी हैं इसलिये केवल मुक्ति विषय पर विचार करना उचित है। प्रथम थोड़ी देर तक ये बातें होती रहीं कि पहिले कौन वर्णन करे, एक दूसरे पर टालता था। तब स्वामी जी ने कहा कि उसी क्रमसे भाषण होना चाहिये अर्थात् पहिले पादरी साहब फिर मौलवी साहब और फिर मैं, परन्तु जब पादरी साहब और मौलवी साहब दोनों ने कहा कि हम पहिले न बोलेंगे, तब स्वामी जीने ही पहिले कहना स्वीकार किया

وغیرہ سب طرحکا ایشور نے آسمان سے دنیا
پس وہ جگت ہی بوجہہ بنائے جانے کے
محدود ہوا ہے ایشور محدود نہیں ہوا - پس
جو میں نے پہلے کہا تھا کہ نیستی سے ہستی
کبھی نہیں ہو سکتی الا ہستی سے ہستی ہی
ہوتی ہے سو آپ لوگوں کے قول سے بھی وہی
بات ثابت ہو گئی کہ جگت کی علت فاعلی
قدیم ہے *

عیسائی صاحب

سنو بھائی مولوی صاحبو اسبات کو —
کہ پنڈت جی اسکا جواب ہزار طرح سے
دے سکتے ہیں ہم اور تم ہزاروں ملکر بھی
اسبات کریں تو بھی پنڈت جی برابر جواب
دے سکتے ہیں - پس اسبات میں آئندہ تقریر
کو طول دینا مناسب نہیں

غرضیکہ گیارہ بجے تک یہہ گفتگو ہوئی - بعدہ
سب صاحبان اپنے اپنے ڈیروں کو تشریف لیگئے
جابجا میلہ میں یہہ ذکر تھا کہ جیسا پنڈت
جیکو سنتے تھے اس سے ہزار درجہ زیادہ پایا *

جلسہ بعد دو پہر

(بتاریخ ۲۰ مارچ)

پھر بعد ازاں ایک بجے سب صاحبان تشریف
لائے تب سب صاحبوں نے اسپر غور کیا کہ
اب وقت تو بہت تھوڑا باقی ہے اور باتیں
بہت ہیں اسلئے صرف نجات کے سوال میں
گفتگو ہو تو بہت اچھی بات ہے - تھوڑی دیر
تک یہہ قیل و قال ہوتی رہی کہ پہلے کون
بیان کرے - ایک دوسرے پر ٹالتا تھا - تب
سوامی جی نے کہا کہ پہلی ترتیب سے
گفتگو ہونی چاہئے یعنی اول پادری صاحب
پھر مولوی صاحب بعدہ میں - مگر پادری صاحب
اور مولوی صاحب کا جبکہ اسبات پر اتفاق ہوا
کہ ہم لوگ پہلے بیان نہیں کرینگے سوامی جی
ہی کریں تو سوامی جی نے اسطرح فرمایا —

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

मुक्ति कहते हैं छूटजाने को, अर्थात् जितने दुःख हैं उन सब से छूटकर एक सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहना और फिर जन्म मरण आदि दुःख सागर मे नहीं गिरना इसी का नाम मुक्ति है।

वह किस प्रकार से होती है इस का पहिला साधन सत्य का आचरण है, और वह सत्य आत्मा और परमात्मा की साक्षी से निश्चय करना चाहिये अर्थात् जिस में आत्मा और परमात्मा की साक्षी न हो वह असत्य है, जैसे किसी ने चोरी की जब वह पकडा गया उस से राज पुरुष ने पूछा कि तूने चोरी की या नहीं ? तब वह कहता है कि मैंने चोरी नहीं की परन्तु उसका आत्मा भीतर से कह रहा है कि मैने चोरी की है, तथा जब कोई झूठ की इच्छा करता है तब अन्तर्यामी परमेश्वर उसको चिता देता है कि यह बुरी बात है इस को तू मत कर और शंका लज्जा और भय आदि उसके आत्मा मे उत्पन्न कर देता है, और जब सत्य को इच्छा करता है तब उसके आत्मा मे आनन्द कर देता है और प्रेरणा करता है कि यह काम तूं कर। अपना आत्मा जैसे सत्य काम करने में निर्भय और प्रसन्न होता है। वैसे झूठ मे नहीं होता। जब परमात्मा की आज्ञा को तोडकर बुरा काम कर लेता है तब उसकी मुक्ति किसी प्रकार नहीं होसकती और उसी को असुर दुष्ट दैत्य और नीच कहते हैं, इसमें वेदका प्रमाण है कि

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृता.।
ता स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥ यजुर्वेदे। अध्याये ४०। मंत्र ३ ॥

سوامي ديانند سرستي جي

مکت کہتے ہیں چھوٹ جانے کو- یعنی
جتنے تکلیفات ہیں اُن سب سے چھوٹکر ایک
ست چد انند سروپ پرمیسور میں وصل ہوکر ہمیشہ
آنند میں رہنا او پھر بار بار پیدا ہونے او
مرنے کی تکلیفات عظیم میں نہ گرنا اسکا نام
مکت ہے - وہ کس طرح سے ہوتی ہے اسکا
پہلا عمل راستی کا پابند ہونا ہے اور اُس
راستی کا آتما او پرماتما کی گواہی سے تحقیق
کرنا چاہئے - جس حسمیں آتما او پرماتما کی
گواہی نہ ہو وہ جھوٹھ ہے جیسے کسی نے
چوری کی جب وہ پکڑا گیا اُس سے حاکم نے
پوچھا کہ تونے چوری کی یا نہیں ؟ تب وہ
کہتا ہے کہ میں نے چوری نہیں کی لیکن اُسکا
آتما اندر سے کہہ رہا ہے کہ میں نے چوری کی
ہے - علاوہ جب کوئی جھوٹھ کی خواہش
کرتا ہے تب عالم الغیب پرمیشور اُسکو جتا
دیتا ہے کہ یہ بری بات ہے اسکو تو مت کر او
شرم و حیا او ڈر وغیرہ اُسکے آتما میں پیدا
کردیتا ہے او جب راستی کی خواہش کرتا ہے
تب اُسکے آتما میں آنند یعنی راحت وآسودگی
کر دیتا ہے [illegible] کر دیتا ہے کہ یہہ
کام تو کر [illegible] راست کام کرنے
میں [illegible] ہوتی ہے ویسے
[illegible] نہیں ہوتی - جب پرماتما
کے [illegible] کام کرتا ہے تب
[illegible] نہیں ہوسکتی او
[illegible] کہتے ہیں
[illegible]

असुर्य्या नाम ते [illegible]
लोका अन्धेन तमसा वृता। ता [illegible]
त्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो [illegible]।
यजुर्वेदे। अध्याये ४०। मं [illegible]

माता पिता छोडकर और दौड़कर अपने लडके को उठाकर गोद में लेते हैं कि हमारा लडका कहीं गिर पडेगा तो इस के चढ लगने से उसको दुःख होगा और जैसे माता पिता अपने बच्चों को सदा सुख मे रखने की इच्छा और पुरुषार्थ सदा करते रहते है वैसे ही परम कृपानिधि परमेश्वर की ओर जब कोई सच्चे आत्मा के भाव से चलता है तब वह अनन्त शक्तिरूप हाथों से उस जीव को उठाकर अपनी गोद में सदा के लिये रखता है, फिर उसको किसी प्रकार का दुःख नहीं होने देता है और वह सदा आनन्द में रहता है। पक्षपात को छोडकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करके अर्थ की सिद्ध करना चाहिये। देखो सब अन्याय अधर्म और पक्षपात से होता है जैसे कि यह मौलवी साहब का वस्त्र बहुत अच्छा है मुझको मिले तो मैं उसको ओढ कर सुख पाऊं, इस मे अपने सुख का पक्षपात किया और मौलवी साहब के सुख और दुःख का कुछ विचार न किया। इसी प्रकार पक्षपात से ही नित्य अधर्म होता है। अधर्म से काम को सिद्ध करना इसी को अनर्थ कहते है, और धर्म और अर्थ से कामना अर्थात् अपने सुख की सिद्धि करना इसको काम कहते है, और अधर्म अर्थात् अनर्थ से काम को सिद्ध करना इसको कटकाम कहते है, इस लिये इन तीनों अर्थात् धर्म अर्थ और काम से मोक्ष को सिद्ध करना उचित है। इस मे यह बात है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करना इसको धर्म और उसकी आज्ञा का तोडना इसको अधर्म कहते है, सो धर्म आदि ही मुक्ति के साधन है और कोई नहीं और मुक्ति सत्य पुरुषार्थ से सिद्ध होती है अन्यथा नहीं॥

اور دوڑ کر اپنے لڑکے کو اٹھا کر گود میں لے لیتے
ہیں کہ ہمارا لڑکا کہیں گر پڑے گا تو اسکے
چوٹ لگنے سے اسکو تکلیف ہوگی اور جیسے
والدین اپنے بچوں کو ہمیشہ آرام دینے کی
خواہش اور کوشش کرتے رہتے ہیں ویسے ہی
اور کرپا نیدھی پرمیشور کی طرف جب کوئی
سچے آتما کے ساتھ چلتا ہے تب وہ اننت شکتی
روپ ہاتھوں سے اس جیو کو اٹھا کر اپنی
گود میں ہمیشہ کے لئے رکھتا ہے پھر اسکو کسی
طرح کی تکلیف نہیں ہونے دیتا ہے - اور وہ
ہمیشہ آنند میں رہتا ہے

تعصب اور طرفداری کو چھوڑ کر راستی کو
قبول اور جھوٹ کو ترک کرکے سب چیزوں کی
خواہش اور ان کو حاصل کرنا چاہئے

دیکھو سب ناانصافی تعصب اور طرفداری وغیرہ
سے ہی ہوتے ہیں مثلاً یہہ کہ مولوی صاحب
کا کپڑا بہت اچھا ہے مجھ کو ملے تو میں اوڑھ
کر آرام کروں - اسمیں اپنے آرام کی طرفداری
اور مولوی صاحب کے آرام و تکلیف کا کچھ نہ
خیال کیا اسطرح طرفداری سے ہمیشہ پاپ
ہوتا ہے

[illegible] سے خواہشات نفسانی کے حاصل کرنے
[illegible] کہتے ہیں

[illegible] سے خواہش کرکے آرام کے
[illegible] کو کام کہتے ہیں

[illegible] سے کام کے حاصل کرنے کو
[illegible] کہتے ہیں

[illegible] اور کام سے نجات
[illegible]

[illegible] کہ ایشور کے حکم کے
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पादरी स्काट साहब

पण्डित जी ने कहा कि सब दुःखों से छूट-ने का नाम मुक्ति है, परन्तु मैं कहता हूं कि सब पापों से बचने और स्वर्ग में पहुंचने का नाम मुक्ति है। कारण यह है कि ईश्वरने आदम को पवित्र रचाथा परन्तु शैतान ने उसको बहका के उस से पाप करादिया, इससे उसकी सबसंतान भी पापी है, जैसे घडी बनाने वाले ने उसकी चाल स्वतन्त्र रक्खी है और वह आप ही चलती है, ऐसे ही मनुष्य भी अपनी इच्छा से पाप करते हैं तो फिर अपने ऐश्वर्य्य से मुक्ति नहीं पासकते और न पापों से बच सकते हैं। इस लिये प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास बिना किये मुक्ति नहीं हो सकती। जैसे हिन्दु लोग कहते हैं कि कलियुग मनुष्यों को पाप करा के बिगाडता है इससे उनकी मुक्ति नहीं हो सकती परन्तु ईसामसीह पर विश्वास करने से वे भी बच सकते हैं।

प्रभु ईसामसीह जिस २ देश में गये अर्थात् उसकी शिक्षा जहां २ गई है वहां २ मनुष्य पापों से बचते जाते हैं। देखो इस समय सिवाय ईसाइयों के और किसी के मत से भलाई और अच्छे गुणों की उन्नति है? मैं एक दृष्टान्त देता हूं कि जैसे पण्डित जी बलवान् हैं ऐसेही इंगलिस्तान में एक मनुष्य बलवान था परन्तु वह मद्य पान चोरी व्यभिचार आदि बुरे काम करता था जब वह ईसामसीह पर विश्वास लाया तब सब बुराइयों से छूट गया और मैंने भी ईसे मसीह पर विश्वास किया तब मुक्ति को पाया और बुरे कामों से बच गया, सो ईसामसीह की आज्ञा के विरुद्ध आचरण से मुक्ति नहीं हो सकती, इस

پادری اسکاٹ صاحب

پنڈت جی نے بیان کیا کہ سب تکلیفوں سے چھوٹنے کا نام مکتی ہے لیکن میں کہتا ہوں کہ سب گناہوں سے بچنے اور بہشت میں پہونچنے کا نام مکتی ہے - وجہہ یہہ ہے کہ ایشور نے آدم کو پاک بنایاتھا مگر شیطان نے اسکو بہکا کے اس سے گناہ کرادیا لہذا اسکی سب اولاد بھی پاپی ہے جیسے گھڑی ساز نے اسکی چال خودمختاری رکھی ہے اور وہ خود ہی چلتی ہے ایسے ہی انسان بھی اپنے اختیار سے پاپ کرتے ہیں لہذا باختیار خود مکتی نہیں ہوسکتی اور نہ گناہوں سے بچسکتے ہیں

پس حضرت مسیح کے بھروسہ بنا کسیکی مکتی نہیں ہوسکتی - جیسے ہندو لوگ کہتے ہیں کہ کلجگ انسان کو پاپ کرا کر بگاڑتا ہے اس سے انکی مکتی نہیں ہوسکتی لیکن عیسی مسیح کے بھروسہ سے وے بھی بچسکتے ہیں

خداوند عیسی مسیح جس جس ملک میں گیا یعنی جہاں جہاں اسکی تعلیم گئی وہاں وہاں لوگ پاپوں سے بچتے جاتے ہیں

دیکھو اس زمانہ میں کہیں سوائے عیسائیوں کے اور کسیکے مذہب میں بھلائی اور اچھے کاموں کی افزایش ہے ؟

میں ایک نظیر دیتاہوں کہ جیسے پنڈت جی قوی ہیں ایسا ہی انگلستان میں ایک شخص قوی اندام تھا مگر وہ شراب پیتا تھا اور چوری پیشہ اور زنا کار بھی تھا مگر جب عیسی مسیح پر اعتقاد لایا تب سب برائیوں سے چھوٹ گیا اور میں نے بھی جب مسیح پر اعتقاد کیا تب مکتی کو پایا اور خراب کاموں سے بچ گیا

سو عیسی مسیح کی مرضی کے خلاف عمل سے مکتی نہیں ہوسکتی

लिये सब को ईसामसीह पर विश्वास लाना चाहिये, उसी से मुक्ति हो सकती है और किसी प्रकार नहीं ।

मौलवी मुहम्मदक़ासम साहब

हमलोग यह नहीं कह सकते कि पण्डित जीने जो मुक्ति के साधन कहे केवल उन से ही मुक्ति हो सकती है क्योंकि ईश्वर की इच्छा है जिस को चाहे उसको मुक्ति दे और जिसको न चाहे न दे, जैसे समय का हाकिम जिस अपराधी से प्रसन्न हो उसको छोड़ दे और जिससे अप्रसन्न हो उसको क़ैद में डाल दे । उसकी इच्छा है जो चाहे सो करे, उसपर हमारा ऐश्वर्य नहीं है, नजाने ईश्वर क्या करेगा, पर समय के हाकिम पर विश्वास रखना चाहिये, इस समय का हाकिम हमारा पैगम्बर है उसपर विश्वास लाने से मुक्ति होती है । हां यह बात अवश्य है कि विद्या से अच्छे काम हो सकते हैं परन्तु मुक्ति तो केवल उसी के हाथ में है ॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी
(पादरी साहब के उत्तर में)

आपने जो यह कहा कि दुःखों से छूटना मुक्ति नहीं, पापों से छूटने का नाम मुक्ति है सो मेरे अभिप्राय को न समझ कर यह बात कही है क्योंकि मैं तो पहिले साधन में ही सब पापों अर्थात् असत्य कामों से बचना कह चुका हूं, और बुरे कामों का फल भी दुःख कहाता है अर्थात् जब पाप करेगा तो दुःख से नहीं बच सकता । इसके अनन्तर और साधनों में भी स्पष्ट कहा है कि अधर्म छोड़कर धर्म का आचरण करना मुक्ति का साधन है, जो पादरी साहब इन बातों को समझते तो कदाचित् ऐसी बात न कहते ।

لیئے عیسی مسیح پر اعتقاد سبکو لانا
چاہئے اور اُسی سے مکتی ہوسکتی ہے اور
کسی طرح نہیں ۔

مولوی محمد قاسم صاحب

ہم لوگ یہہ نہیں کہہ سکتے کہ پنڈت جی
نے جو جو نجات ہونیکے ذریعے بیان کئے صرف
اُنہی سے نجات ہوتی ہے کیونکہ ایسور کو
اختیار ہے کہ جسکو چاہے اسکو نجات دے اور جسکو
نہ چاہے اُسکو نہ دے - جیسے وقت کا حاکم
جس مجرم سے راضی ہو اُسکو چھوڑ دے
اور جس سے ناراض ہو اُسکو قید کرے
پس وہ مختار ہے جو چاہے سو کرے - اُسپر
ہمارا اختیار نہیں ہے - نجانے ایسور کیا کریگا
پر وقت کے حاکم پر بھروسہ کرنا چاہئے - سو
اُس وقت کا حاکم ہمارا پیغمبر ہے اُسپر ایمان
لانے سے نجات ہوتی ہے - ہاں یہہ بات ضرور
ہے کہ علم سے اچھے کام ہوسکتے ہیں مگر نجات
تو صرف اُسی کے قبضہ میں ہے ۔

سوامی دیانند سرستی جی
(پادری صاحب کے جواب میں)

آپنے جو یہہ کہا کہ تکلیفوں سے چھوٹنا [illegible]
[illegible] گناہوں سے چھوٹنے کا نام نجات ہے
[illegible]

दूसरे जो आप यह कहते हैं कि ईश्वर ने आदम को पवित्र रचा था परन्तु शैतान ने बहका कर पाप करा दिया तो उसकी संतान भी इसी कारण से पापी हो गई सो यह बात ठीक नहीं है क्योंकि आपलोग ईश्वर को सर्वशक्तिमान् जानतेही हैं सो जब कि ईश्वर के पवित्र बनाये आदम को शैतान ने बगाड़ दिया और ईश्वर के राज में विघ्न कर के ईश्वर की व्यवस्था को तोड़डाला तो इस से ईश्वर सर्वशक्तिमान् नहीं रहसकता, और ईश्वर की बनाई हुई वस्तु को कोई नहीं बिगाड़ सकता है। और एक आदम ने पाप किया तो उसकी सारी संतान पापी होगई यह सर्वथा असम्भव और मिथ्या है, जो पाप करता है वही दुःख पाता है दूसरा कोई नहीं पासकता और ऐसी बात कोई विद्वान् नहीं मानेगा। और देखो एक आदम और हव्वा से किसी प्रकार इस जगत् की उत्पत्ति भी नहीं हो सकती क्योंकि बहन और भाई का विवाह होना बड़े दोष की बात है, इसलिये ऐसी व्यवस्था मानना चाहिये कि सृष्टि के आदि में बहुत से पुरुष और स्त्री परमेश्वर ने रचे।

और जो यह कहा कि शैतान बहकाता है तो मेरा यह प्रश्न है कि जब शैतान ने सब को बहकाया तो फिर शैतान को किस ने बहकाया? जो कहो कि शैतान आप से ही आप बहक गया, तो सब जीव भी आप से ही आप बहक गये होंगे, फिर शैतान को बहकाने वाला मानना व्यर्थ है; जो कहो कि शैतान को भी किसी ने बहकाया है तो सिवाय ईश्वर के दूसरा कोई बहकाने वाला शैतान का नहीं है, तो फिर जब ईश्वर ने ही सबको बहकाया

دوسرے جو آپ یہہ کہتے ہیں کہ ایسور نے آدم کو پاک بنایا تھا لیکن سیطاں نے بہکاکر اس سے پاپ کرادیا تو اسکی اولاد بھی اسی وجہہ سے پاپی ہوگئی سو یہہ بات ٹھیک نہیں کیونکہ آپ لوگ ایسور کو قادر مطلق مانتے ہی ہیں سو جبکہ ایسور کے پاک بنائے آدم کو سیطان نے بگاڑ دیا اور ایسور کی عملداری میں دخل دیکر اسکے انتظام کو توڑڈالا تو اسسے ایسور قادر مطلق نہیں رہسکتا - ایسور کی بنائی ہوئی چیز کو کوئی نہیں بگاڑ سکتاہے *

اور ایک آدم نے پاپ کیا تو اسکی سب اولاد پاپی ہوگئی یہہ بالکل خلاف ہے کیونکہ جو پاپ کرتاہے وہی تکلیف پاتاہے دوسرا کوئی نہیں آپ کی یہہ بات کوئی عالم نہ مانیگا *

علاوہ اسکے ایک آدم اور حوا سے کسطرح اس دنیا کی پیدایس بھی نہیں ہوسکتی کیونکہ بہن بھائی کا بیاہ ہونا بڑے عیب کی بات ہے پس یہہ بات اس طرح ماننا چاہئیے کہ دنیا کے شروع میں بہت سے مرد اور عورت ایسور نے پیدا کئے تھے *

اور جو یہہ کہا کہ سیطان بہکاتا ہے تو میرا یہہ سوال ہے کہ جب شیطان نے سبکو بہکایا تو پھر سیطان کو کسنے بہکایا ؟

جو کہو کہ سیطان خود آپ سے ہی بہک گیا تو سب جیو بھی آپ سے ہی بہک گئے ہونگے پھر شیطان کو بہکانے والا ماننا بےفائدہ ہے *

اور جو کہو کہ سیطان کو بھی کسینے بہکایا ہے تو علاوہ ایشور کے دوسرا کوئی بہکانے والا نہیں ہوسکتا - تو پھر جبکہ ایشور نے ہی سبکو بہکایا تب بہکانے والا آپ لوگوں کے مت

तब मुक्ति देने वाला कोई भी आप स्रोगों के मतमें न रहा और न मुक्ति पाने वाला, क्योंकि जब परमात्मा ही बहकाने वाला ठहरा तो बचाने वाला कोई भी नहीं हो सकता; और यह बात परमात्मा के स्वभाव से भी विरुद्ध है क्योंकि वह न्यायकारी और सत्य कामों का ही कर्ता है तथा अच्छे कामों में ही प्रसन्न होता है, वह किसी को दुःख देने वाला और बहकाने वाला नहीं ॥

और देखो कैसे आश्चर्य की बात है कि यदि शैतान ईश्वर के राज में इतना गड़बड़ करता है फिर भी ईश्वर उसको न दण्ड देता है न मारता है न कारागृह में डालता है, इससे स्पष्ट परमात्मा की निर्बलता पाई जाती है और विदित होता है कि परमात्मा ही को बहकाने की इच्छा है, इससे यह बात ठीक नहीं और न शैतान कोई मनुष्य है, जब तक शैतान के मानने वाले शैतान का मानना न छोड़ेंगे तबतक पाप करने से नहीं बच सकते क्योंकि वे समझते हैं कि हम तो पापी ही नहीं जैसा शैतान ने आदम को और उसकी संतान को बहकाके पापी किया वैसाही परमात्मा ने आदम की संतान के पाप के बदले में अपने एकलौते बेटे को सूली पर चढ़ा दिया फिर हमको क्या डर है और जो हम से कुछ पाप भी होता है तो हमारा विश्वास ईसामसीह पर है वह आप क्षमा करादेगा क्योंकि उसने हमारे पापों के बदले में जान दी है, इसलिये ऐसी व्यवस्था मानने वाले पापों से नहीं बच सकते ॥

और जो घड़ी का दृष्टान्त दिया था सो ठीक है क्योंकि सब अपने२ काम करने में स्वतन्त्र हैं परन्तु ईश्वर की आज्ञा अच्छे कामों के करने के लिये है बुरे के लिये नहीं

میں کوئی نہی نہ رہا اور نہ نجات پانیوالا -
کیونکہ جب ایشور ہی بہکانے والا ٹہرا تو
بچانے والا کوئی نہی نہیں ہوسکتا - اور یہہ
بات ایشور کی عادت سے بہی خلاف ہے
کیونکہ وہ منصف اور راست کاموںکا ہی کرنے
والا ہے اور اچہے کاموں میں سے ہی خوش
ہوتا ہے وہ کسیکو تکلیف دینے والا اور بہکانے
والا نہیں - او دیکہو کیسے تعجب کی بات ہے
کہ باوجودیکہ اسکے راج میں شیطان اتنا گڑبڑ
کرتا ہے پہربہی ایشور اسکو نہ سزا دیتا ہے
نہ مارتا ہے نہ قید کرتا ہے تواس سے صریح
ایشور کی ناطاقتی اور کمزوری پائی جاتی ہے
اور معلوم ہوتا ہے کہ ایشور کو بہکانے کی خواہش
ہے - اس سے یہہ بات ٹہیک نہیں - اور نہ
شیطان کوئی شخص ہے جب تک شیطان کے
ماننے والے شیطان کا ماننا نہ چہوڑینگے تب تک
پاپ کرنے سے نہیں بچ سکتے ہیں کیونکہ وے
سمجہتے ہیں کہ ہم تو پاپی ہی نہیں جیسا
شیطان نے آدم کو اور اسکی اولاد کو بہکا کے
پاپی کیا ویسا ہی ایشور نے آدم کی اولاد کے
پاپ کے بدلے میں اپنے اکلوتے بیٹے کو سولی
چڑہا دیا [illegible] ہمکو کیا ڈر ہے اور اگر ہمسے کچہہ
پاپ بہی ہوتا ہے تو ہمارا بہروسہ عیسیٰ مسیح
پر ہے وہ خود ہمکو [illegible] کیونکہ اسنے ہمارے
پاپوں کے بدلے میں جان دی ہے پس ایسی
بات [illegible] پاپوں سے نہیں بچ سکتے اور جو
[illegible] دی تہی سو ٹہیک ہے کیونکہ
سب [illegible] میں خود مختار ہیں لیکن
[illegible] اچہے کاموں کے کرنے کے لئے ہے برے
[illegible] نہیں *

और जो आप ने यह कहा कि स्वर्ग में पहुंचना मुक्ति है शैतान के बहकाने के कारण मनुष्यों में शक्ति नहीं कि पापोंसे छूट कर मुक्ति पासकें — यह बात भी ठीक नहीं क्योंकि जब मनुष्य स्वतन्त्र है और शैतान कोई मनुष्य नहीं तो आप दोषों से बचकर परमात्मा की कृपासे मुक्ति को पा सकते हैं; और स्वर्ग से आदम गेहूं खानेके कारण निकाला गया और यह ही आदम का पाप हुआ कि गेहूं खाया तो मैं आप से पूछता हूं कि आदम ने तो गेहूं खाया और पापी हो गया और स्वर्ग से निकाला गया, आप लोग जो उस स्वर्ग की इच्छा करते है तो क्या आप लोग वहां सब पदार्थ खावें गे। तो क्या पाप नहीं होगा? और वहां से निकाले नहीं जाओ गे? इससे यह बात भी ठीक नहीं होसकती॥

और आप लोगों ने ईश्वर को मनुष्य के सदृश माना होगा अर्थात् जैसे मनुष्य सर्वज्ञ नहीं वैसेही आपने परमात्मा को भी माना होगा कि जिससे आप वहां गवाही और वकील की आवश्यकता बतलाते हैं! परन्तु आपके ऐसे कहने से ईश्वर की ईश्वरता सब नष्ट हो जाती है। वह सब कुछ जानता है, उस को गवाही और वकील की कुछ आवश्यकता नहीं है; और उसको किसी की सिफ़ारिश की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि सिफ़ारिश न जानने वाले से कीजाती है।

और देखिये आपके कहने से परमात्मा पराधीन ठहरता है क्योंकि विना ईसा मसीह की गवाही वा सिफ़ारिश के वह किसी को मुक्ति नहीं दे सकता और कुछ भी नहीं जानता इससे परमात्मा में अल्पज्ञता आतीहै कि जिससे वह सर्वज्ञ-

اور آپ نے جو یہہ فرمایا کہ بہست میں پہونچنا مُکتی ہے دوجہہ بہکانے شیطان کے انسانوں میں قدرت نہیں کہ وے گناھوں سے پاک ہوکر مُکتي پا سکیں - تو یہہ بات بہي ٹھیک نہیں - کیونکہ جب انسان خود مختار ہیں اور شیطان کوئی شخص نہیں تو خود گناھوں سے بچکر ایشور کي کرپا سے مُکتي کو پا سکتے ہیں اور بہشت سے آدم بوجہہ کھانے گیہوں کے نکالا گیا اور یہي آدم سے گناہ ہوا کہ گیہوں کھایا - تو میں آپ سے پوچھتا ہوں کہ آدم نے تو گیہوں کھایا او پاپي ہوگیا اور بہشت سے نکالا گیا۔ آپ لوگ جو اُس بہشت کي خواہش کرتے ہیں تو کیا آپ لوگ وہاں سب چیز کھاوینگے اور ہرطرح کے عیش کرینگے ! تو کیا پاپ نہیں ہوگا؟ اور وہاں سے نکالے نہیں جاوگے؟ اِس سے یہہ بات بہي ٹھیک نہیں ہوسکتي *

آپ لوگوں نے ایشور کو دنیوي حاکم کے مانند مانا ہوگا یعني ویسے ہی آپ لوگوں نے ایشور کو ٹھہرایا ہوگا کہ وہ محیط کل اشیاء نہیں جس سے اُسکے یہاں انسان کے لئے گواہی اور وکیل کي ضرورت بتلاتے ہو- آپکے کہنے سے ایشور کي ایشورتا سب نگڑ جاتي ہے - کیونکہ وہ خود سب کچہہ جانتا ہے اُسکو گواہی یا وکیل کي کچہہ ضرورت نہیں اور وہ کسیکي سفارش کي بهي ضرورت نہیں رکہتا کیونکہ سفارش نہ جاننے والے سے کي جاتي ہے - سو دیکھئے کہ آپکے بیان سے ایشور محتاج بالغیر ٹھہرتا ہے کیونکہ بغیر عیسيٰ مسیح کی گواہی یاسفارش کے وہ کسیکو مُکتئ نہیں دیسکتا او وہ کچہہ بہي نہیں جانتا اس سے ہمہداں نہ ہونیکاعیب ایشور کي نسبت آپکے کہنے سے عاید ہوتا ہے جس سے وہ قادر مطلق اور علم

क्तिमान् और सर्वज्ञ किसी प्रकार नहीं हो सकता। और देखो अब कि वह न्यायकारी है तो किसी की सिफ़ारिश और मिथ्या प्रशंसा से न्याय के विरुद्ध कदाचित् नहीं कर सकता, जो विरुद्ध करता है तो न्यायकारी नहीं ठहर सकता। इसी प्रकार जो आप मनुष्य हाकिम के सदृश ईश्वर के दरबार मे भी फ़रिश्तों का होना मानोगे तो और बहुत से दोष ईश्वर में आवेंगे, इस से ईश्वर सर्वव्यापक नहीं होसकता क्योंकि जो सर्वव्यापक है तो शरीरवाला न होना चाहिये और जो सर्व व्यापक नहीं है तो अवश्य है कि शरीरवाला हो और शरीर वाला होने से उस की शक्ति सब पर घेरने वाली न हुई, शरीर वाला जितना दूर का ज्ञान रखता है पर उस का पकड और मार नहीं सकता।

और जो शरीर वाला होगा उसका जन्म और मरण भी अवश्य होगा, इस लिये ईश्वर को किसी एक जगह पर और फरिश्तों का उसके दरबार में होना ऐसी बातें मानना किसी प्रकार ठीक नहीं होसकती, नहीं तो ईश्वर की सीमा होजायगी

देखो हम आर्य्य लोगों के शास्त्रों को यथावत् पढ़े विना लोगों को उलटा निश्चय होजाता है अर्थात् कुछ का कुछ मान लिया जाता है, जो पादरी साहब ने कलियुग के विषय मे कहा सो ठीक नहीं क्योंकि हम आर्य्य लोग युगों की व्यवस्था इस प्रकार से नहीं मानते, इस में ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि

कलिः शयानो भवति सञ्जिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्॥
ऐत०। पञ्चिका ७। कण्डिका १५॥

अर्थात् जो पुरुष सर्वथा अधर्म करता है

مطلق کسیطرح سے نہیں ہوسکتا - وہ عادل ہے کسی کی سفارش خوشامد سے عدل کے خلاف کبھی نہیں کرسکتا - اگر خلاف کرتا ہے تو عادل نہیں ٹھہرسکتا - اور اگر آپ دنیوی حاکم کی طرح فرشتوں کا ایشور کے دربار میں حاضر ہونا مانوگے تو بہت سے عیب ایشور کی نسبت ثابت ہونگے - اور اسبات سے ایشور محیط کل اشیاء نہیں ہوسکتا کیونکہ اگر محیط کل اشیاء ہے تو جسمانی نہ ہونا چاہئے اور جو محیط کل اشیاء نہیں ہے تو لازم آتا ہے کہ جسمانی ہو اور جسمانی ہونے کی صورت میں اسکی قدرت سب پر حاوی نہ ہوگی- جسمدار جسم والا دور کی چیز کا علم رکھتا ہے مگر اسکو پکڑ نہیں سکتا مار نہیں سکتا ٭

اور جو جسمانی ہوگا وہ پیدا اور مرنے والا یعنی حادث اور فانی ہوگا پس ایسی باتیں ماننا کہ ایشور کسی جگہ پر ہے اور فرشتے اسکا کام کرتے ہیں نہ کسی طرح سے ٹھیک نہیں ہوسکتی- ورنہ ایشور محدود ہوجاویگا ٭

دیکھو ہم آریوں کے شاستروں کے ٹھیک ٹھیک نہیں پڑھنے اور دیکھنے سے الٹا معلوم ہوجاتا ہے یعنی سمجھتا کچھ ہے اور کچھ [illegible] - جو پادری صاحب نے کلجگ کے بارے میں کہا سو ٹھیک نہیں [illegible] آریہ لوگ جگوں کے بارے میں اس طرح سے نہیں مانتے - جس میں ایتریہ براہمن کی سند ہے کہ

कलिः शयानो भवति सञ्जि[illegible]
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं [illegible]
ऐत० पञ्चिका ७ कण्डिका १५॥

[illegible]

और नाममात्र धर्म करता है उसको कलि और जो आधा अधर्म और आधा धर्म करता है उस को द्वापर और जो एक हिस्सा अधर्म और तीन हिस्से धर्म करता है उसको त्रेता और जो सर्वथा धर्म करता है उसको सतयुग कहते हैं ॥

इसके जाने विना कोई बात कहदेना ठीक नहीं हो सकती ॥

इस से जो कोई बुरा काम करता है वह दुःख पाने से कदाचित् नहीं बच सकता और जो कोई अच्छा काम करता है वह दुःख पाने से बच जाता है किसी ही देश में क्या क्यों न हो ॥

क्या ईसा मसीह के बिना ईश्वर अपने सामर्थ्य से अपने भक्तों को नहीं बचा सकता ! वह अपने भक्तों को सब प्रकार से बचा सकता है उस को किसी पैग़म्बर की आवश्यकता नहीं। हां यह सच है कि जब जिस २ देश में शिक्षा करने वाले धर्मात्मा उत्तम पुरुष होते हैं, उस २ देश के मनुष्य पापों से बच जाते हैं और उन्हीं देशों में सुख और गुणों की वृद्धि होती है ; यह भी सब लोगों के लिये सुधार है इसका कुछ मत से प्रयोजन नहीं देखो आर्य्य लोगों में पूर्व उपदेश की व्यवस्था अच्छी थी इस से उस समय में वे सुधरे हुए इस समय में अनेक कारणों से सत्य उपदेश कम होने से जो किसी बात का बिगाड़ हो तो इस से आर्य्य लोगों के सनातन मत में कोई दोष नहीं आ सकता, क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति के समय से लेके आजतक आर्य्यों ही का मत चला आता है वह कुछ बहुत नहीं बिगड़ा !

देखो जितने १८०० वा १३०० वर्षों के भीतर ईसाइयों और मुसलमानों के मतों

دھرم کرتا ہے اسکو کلجگ جو آدھا ادھرم اور آدھا دھرم کرتا ہے اسکو دواپر جو تین حصے دھرم اور ایک حصہ ادھرم کرتا ہے اسکو تریتہ اور جو بالکل دھرم کرتا ہے اور کچھہ ادھرم نہیں کرتا اسکو ست جگ کہتے ہیں - سو اسکے بنا جانے کوئی بات کہدینی کبھی بھی ٹھیک نہیں ہو سکتی - اور جو کوئی بد کام کرتا ہے وہ تکلیف پانے سے کبھی نہیں بچ سکتا جو اچھے کام کرتا ہے وہی تکلیفوں سے بچ جاتا ہے خواہ آریاورت کا رہنے والا ہو خواہ اور کسی ملک کا - کیا عیسی مسیح کے بنا ایشور اپنی قدرت سے اپنے بھگتوں کو نہیں بچا سکتا؟ وہ اپنے بھگتوں کو ہر طرح سے بچا سکتا ہے کسی پیغمبر کے بھروسہ کی پرواہ نہیں - ہاں یہہ بات سچ ہے کہ جب جس ملک میں تعلیم کرنے والے دھرم آتما نیک آدمی ہوتے ہیں اس ملک کے رہنے والے پاپوں سے بچ جاتے ہیں اور انہیں ملکوں میں آرام اور ہر بات کی ترقی ہوتی ہے - یہہ بھی سب لوگوں کے لئے اچھی بات ہے اسکا کچھہ مذہب کے اوپر حصر نہیں ہے - جیسے آریا لوگوں میں پہلے تعلیم کے طریقے اچھے تھے اس سے اس زمانہ میں وے ہمیشہ نیک بنے ہوئے تھے اور اس زمانہ میں کئی وجوہات سے عمدہ تعلیم کے کم ہونے سے جو کسی طرح کا بگاڑ معلوم ہو تو اس سے آریا لوگوں کے قدیمی مت کی نسبت کوئی عیب عاید نہیں ہو سکتا کیونکہ دنیا کی پیدایش کے وقت سے لیکر آجتک آریوں کا ہی مت چلا آتا ہے وہ ابتک کچھہ بہت نہیں بگڑا - غور کے قابل یہہ بات ہے کہ جتنے اٹھارہ سو یا تیرہ سو برسوں کے عرصہ میں عیسائیوں اور مسلمانوں کے مذہبوں

सें आपुसके विरोध से फिरके होगये हैं उन के सामने जो १९६०८५२९७६ वर्षों के भीतर आर्य्यों के मत में बिगाड़ हुआ है वह बहुत ही कम है। और आप लोगों में जितना सुधार है सो मत के कारण नहीं किन्तु पार्लिमेण्ट आदिके उत्तम प्रबन्ध सेहै, जो ये न रहें मत से कुछ भी सुधार न हो और पादरी साहब ने जो इंगलिस्तान के दुष्ट मनुष्य का दृष्टान्त मेरे साथ मिला कर दिया सो इस प्रकार कहना उनको योग्य न था परन्तु न जाने किस प्रकार से यह बात भूल से उनके मुख से निकली।

(मौलवी साहब के उत्तर में)

ईश्वर चाहे सो करे ऐसा ठीक नहीं, क्योंकि वह पूर्ण विद्या और ठीक २ न्याय पर सदा रहता है, किसी का पक्षपात नहीं करता।

इस कहने से कि जो चाहे सो करे यह भी आता है कि ईश्वर ही बुराई भी करता होगा और उसी की इच्छा से बुराई होतीहै, यह कहना ईश्वर में नहीं बनता ईश्वर जो कोई मुक्ति का काम करता है उसी को मुक्ति देता है मुक्ति के काम के विना किसी को मुक्ति नहीं देता, क्योंकि वह अन्याय कभी नहीं करता जो विना पाप पुण्य के देखे जिसको चाहे दुःख देवे और जिस को चाहे सुख, तो ईश्वर में अन्याय आदि प्रमाद लगता है, सो वह ऐसा कभी नहीं करता, जैसे अग्नि का स्वभाव प्रकाश और जलाने काहै इनके विरुद्ध नहीं करसकता वैसे ही परमात्मा भी अपने न्याय के स्वभाव से विरुद्ध पक्षपात से कोई व्यवस्था नहीं करसकता।

सब समय का हाकिम मुक्ति के लिये परमेश्वर ही है दूसरा कोई नहीं और जो

میں باہمی اختلاف سے انیک فرقے ہو گئے ہیں تو اُسکی نسبت ایک ارب چھیانوے کروڑ آٹھ لاکھ باون ہزار نو سو چھہتر برسوں میں آریوں کے مت میں بگاڑ کا مقابلہ کیا جاتا ہے تو آپ لوگوں کے مت سے کم ہے دیکھو آپ لوگوں میں جسقدر عمدہ پن ہے سو مذہب کے سبب سے نہیں صرف پارلیمنٹ وغیرہ کے عمدہ قواعد کی وجہہ سے ہے - اگر یہہ نرہے تو مت سے کچھہ بھی عمدہ پن نہ رہ سکے - اور پادری صاحب نے جو انگلستان کے ایک بدمعاش آدمی کی مثال میرے ساتھہ ملا کر دی سو انکی یہہ طور انکے لایق نہ تھی لیکن نجانے کس طرح سے انکے منہہ سے یہہ بات غلطی سے نکلی •

(مولوی صاحب کے بیان پر)

ایشور چاہے سو کرے ایسا ٹھیک نہیں کیونکہ وہ علم مطلق اور ٹھیک ٹھیک انصاف پر ہمیشہ رہتا ہے کسیکی طرفداری نہیں کرتا - یہہ کہنا کہ جو چاہے سو کرے اس سے یہہ نکلتا ہے کہ ایشور ہی برائی بھی کرتا ہوگا او اُسی کی خواہش سے برائی ہوتی ہے یہہ کہنا ایشور میں نہیں بنتا •

ایشور جو کوئی مُکتی کے کام کرتا ہے اسیکو مُکتی دیتا ہے مُکتی کے کام کے بغیر کسیکو مُکتی نہیں دیتا کیونکہ وہ بےانصافی کبھی نہیں کرتا اگر بدون پاپ پن کے دیکھے جسکو چاہے دکھہ دیوے اور جسکو چاہے سکھہ دیوے تو ایشور کی نسبت بےانصافی عاید ہوتی ہے - سو وہ کبھی ایسا نہیں کرتا - جیسے آگ کی خاصیت روشنی دینے اور جلانے کی ہے اسکے برخلاف وہ نہیں کر سکتی ویسے ہی ایشور بھی اپنے عدل کی خاصیت کے خلاف طرفداری کا کوئی کام نہیں کرسکتا • ہر وقت کا حاکم مُکتی کے لئے پرمیشور ہی ہے دوسرا کوئی نہیں ہے

कोई दूसरेको माने उसका मानना व्यर्थ है मुक्ति दूसरे पर विश्वास करनेसे कभी नहीं होसकती क्योंकि ईश्वर जो मुक्ति देने में दूसरेके आधीन है वा दूसरे के कहने से देसकता है तो मुक्ति देने में ईश्वर पराधीन है तो वह ईश्वर ही नहीं होसकता वह किसीका सहाय अपने काम में नहीं लेता, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है

मैं जानता हूं कि सब विद्वान् ऐसाही मानते होंगे जो पक्षपात से औरों के दिखलाने को न मानतेहों तो दूसरी बात है

इस में मुझ को बड़ा आश्चर्य है कि परमात्मा को "लाशरीक" भी मानते हैं और फिर पैगम्बरों को भी मुक्ति देने में उस के साथ मिला देते हैं! यह बात कोई विद्वान् नहीं मानेगा।

इससे यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर धर्मात्मा मनुष्यों को मुक्ति के काम करने से मुक्ति स्वतन्त्रता से दे सकता है, किसी की सहायता के आधीन नहीं; मनुष्य को ही आपस में सहाय की आवश्यकताहै ईश्वर को नहीं; न वह मिथ्या प्रसन्न होने वाला है जो मिथ्या प्रसन्न होकर अन्याय करे; वह तो अपने सत्य धर्म और न्याय से सदा युक्त है, और अपनेसत्य प्रेम के भरे हुए भक्तों को यथावत् मुक्ति देकर औरसब दुःखों से बचाकर सदा के लिये आनन्द में रखता है, इसमें कुछ संदेह नहीं॥

इतनेमें चार बज गये। स्वामी जी ने कहा कि हमारा व्याख्यान बाकीहै, मौलवी साहब ने कहा कि हमारे नमाज़ का समय आगया। पादरी स्काटसाहब ने स्वामीजो से कहा कि हम को आप से एकान्त में कुछ कहना है; सो वे दोनों तो उधर गये, इधर एक ओर तो एक मौलवी मेज़

اور جو کوئي دوسريکو حاکم مانے سو اسکا ماننا غلط ہے - مُکتي دوسرے کے اوپر اعتقاد کرنے سے کبھي نہيں ہوسکتي کيونکہ ايشور اگر مُکتي دينے ميں دوسرے کا محتاج ہے يا دوسرے کے کہنے سے ديسکتا ہے تو مُکتي کے دينے مين ايشور محتاج بالغير ہوا تو وہ ايشور ہی نہيں ہوسکتا کيونکہ ايشور کسيکي امداد اپنے کام ميں نہيں ليتا اس لئے کہ وہ سربشکتي مان ہے اور ميں جانتا ہوں کہ سب عالم لوگ ايسا ہی مانتے ہيں اگرچہ تعصب مذہبي سے بظاہر نمانتے ہوں تو يہہ بات ديگر ہے *

مجھکو بڑا تعجب ہے کہ لاشريک بھي ايشور کو مانتے ہيں اور پھر پيغمبروںکو بھی مُکتي دينے ميں ايشور کے ساتھہ شريک کرتے ہيں يہہ بات کوئي عالم نہيں مانيگا - پس اِس سے يہہ ثبوت ہوتا ہے کہ پرميشور دھرم آتماوں کو مکتي کے کام کرنے سے مکتي خود مختاري سے دے سکتا ہے اِس بات ميں کسی کي امداد کا محتاج نہيں - امداد کي خواہشيں سارے انسانوں کو آپسميں ہی ہيں ايشور کو نہيں نہ وہ خوشامدي ہے جو خوشامد سے ناانصافي کرے وہ تو اپنے سچے عدل سے دايم و قايم رہتا ہے اور اپنے سچے پريم کے بھرے ہوئے بھگتوں کو مکتي ديکر سب دوکھوں سے بچاکر ہميشہ کے لئے آنند ميں رکھتا ہے اسميں کچھہ شک نہيں ہے *

اتنے مين چار بج گئے - سوامي جي نے کہا کہ ہمارا بيان ابھي باقی ہے ليکن مولوي صاحبان نے فرمايا کہ ہمارے نماز پڑھنے کا وقت آ گيا *

پادري اسکات صاحب نے سوامی جی سے فرمايا کہ ہمکو آپ سے عليحدگی مين گفتگو کرنی ہے سو دونوں صاحب ايک جانب کو تشريف لے گئے اِس عرصہ مين ايک مولوي صاحب نے ايک ميز پر جوتا پہنے

पर जूता पहने हुए खड़े होकर और दूसरी ओर पादरी अपने मत का व्याख्यान देने लगे ॥

और कितने ही लोगों ने यह उड़ा दिया कि मेला हो चुका, तब स्वामी जी ने पादरी और आर्य्य लोगों से पूछा कि यह क्या गड़ बड़ हो रहा है मौलवी लोग नमाज़ पढकर आये वा नहीं? उन्हों ने उत्तर दिया कि मेला तो होचुका। इसपर स्वामी जी बोले कि ऐसे झटपट मेला किसने समाप्त कर दिया, न किसी की सम्मति लीगई न किसी से पूछा गया, अब आगे कुछ बात चीत होगी वा नहीं? जब वहां बहुत गड़बड़ देखा और संवाद की कोई व्यवस्था न जान पड़ी तो लोगों ने स्वामी जी से कहा कि आप भी चलिये मेला तो पूरा हो ही गया, इसपर स्वामी जी ने कहा कि हमारी इच्छा तो यह थी कि कमसे कम पांच दिन मेला रहता, इसके उत्तर में पादरी साहबों ने कहा कि हम दो दिन से अधिक नहीं रह सकते।

फिर स्वामी जी आकर अपने डेरे पर धर्म सम्वाद करने लगे। उस दिन रात को पादरी स्काट साहब और दो पादरियों के साथ स्वामी जी के डेरे पर आये, स्वामी जी ने कुरसियां बिछवाकर आदर पूर्वक उनको बिठलाया और आप भी बैठगये। फिर आपस में बात चीत होने लगी, पादरी साहबों ने पूछा कि आवागमन सत्य है वा असत्य, और इसका क्या प्रमाण है? स्वामी जी ने कहा कि आवागमन सत्य है और जो जैसे कर्म करता है वैसा ही शरीर पाता है; जो अच्छे काम करता है तो मनुष्य का और जो बुरे करता है तो पक्षी आदि का शरीर पाता है, और जो बहुत

شور کرتے شروع کرکے اپنے مذہب کا وعظ کرنا شروع کیا ایسے ہی اسکے دوسرے طرف پادری صاحب و کرسچین صاحب اپنے مذہب کا بیان کرنے لگ گئے اور کتنے ہی لوگوں نے وہاں یہہ مشہور کردیا کہ میلا ختم ہوگیا تب سوامی جی نے پادری لوگوں اور آریا لوگوں سے پوچھا کہ یہ کیا گڑبڑ ہو رہا ہے مولوی لوگ نماز پڑھکر آئے یا نہیں؟ تب انہوں نے کہا کہ میلا تو پورا ہوگیا - اسپر سوامی جی نے کہا کہ جھٹ پٹ میلا کسنے ختم کردیا نہ کسیکی رائے لیگئی نہ کسی سے پوچھاگیا؟ اب آگے کچھہ گفتگو ہوگی یا نہیں؟ جبکہ وہاں انتظام کا بہت شور و غل دیکھا اور میلہ میں گفتگو کرنیکی کوئی صورت معلوم نہوئی تب لوگوں نے سوامی جی سے کہا کہ آپ بھی تشریف لے چلئے میلہ تو پورا ہی ہوگیا - اسپر سوامی جی نے کہا کہ ہماری خواہش تو یہہ تھی کہ کم سے کم پانچ دن تک اور زیادہ سے زیادہ آٹھہ دن تک میلہ رہتا - جسکے جواب میں پادری صاحب نے کہا کہ دو دن سے زیادہ ہملوگ نہیں رہسکتے - دوسرا اسی شب کو پادری اسکاٹ صاحب معہ اور دو پادری صاحبوں کے سوامی جی کے ڈیرہ پر تشریف لائے - سوامی جی نے مکان کے نیچے کرسی بچھوا کر بڑی عزت سے پادری صاحبوں کو بٹھلایا اور آپ بھی بیٹھ گئے - پھر آپسمیں بات چیت شروع ہوئی مسئلہ تناسخ کی نسبت پادری صاحبان نے پوچھا کہ تناسخ سچا ہے یا جھوٹا اور اسکا کیا ثبوت ہے؟ سوامی جی نے فرمایا کہ تناسخ سچا ہے اور جو جیسے کرم کرتا ہے ویسا ہی جسم پاتا ہے اگر عمدہ کرم کرتا ہے تو آدمی کا اور جو خراب کرتا ہے تو حیوان وغیرہ کا جسم پاتا ہے اور جو بہت اچھے کرم کرتا ہے

उत्तम काम करता है वह देवता अर्थात् विद्वान् और बुद्धिमान् होताहै। देखो जब बालक उत्पन्न होता है। तब उसी समय अपनी माता का दूध पीने लगता है, कारण यह ही है कि उसको पहिले जन्म का अभ्यास बना रहता है यह भी एक प्रमाण है। और धनाढ्य कंगाल, सुखी दुःखी अनेक प्रकार के ऊंच नीच देखने से विदित होता है कि कर्मों का फल है। कर्म देह से और देह से आवागमन सिद्ध है, जीव अनादि हैं कि जिनका आदि और अन्त नहीं। जिस योनि से जीव जन्म लेता है उसका कुछ स्वभाव भी बना रहता है इसी कारण मनुष्य आदि विचित्र स्वभाव और प्रकृति आदि के होते हैं, इससे भी आवागमन सिद्ध है।

इसी प्रकार और बहुत से प्रमान आवागमन के हैं, परन्तु जीव का एक बार उत्पन्न होना और फिर कभी न होना इस का कुछ प्रमाण नहीं होसकता, क्योंकि जो मैंने कहा उसके विरुद्ध होना चाहिये था सो ऐसा होना असम्भव है, और फिर यह बात कि मरा और हवालात हुई अर्थात् जब क्यामत होगी तब उसका हिसाब किताब होगा तबतक बेचारा हवालात रहा मानना अच्छा नहीं। फिर पादरी साहब चले गये॥

मौलवियों ने शाहजहांपुर जाकर मुंशी इन्द्रमणि जी को लिखा कि जो आप यहां आवें तो हम आप से शास्त्रार्थ करना चाहते हैं, परन्तु जब स्वामी जी और मुंशी जी वहां पहुंचे तो किसी ने शास्त्रार्थ का नाम तक भी न लिया॥

ہوتا یعنی عالم وفہیم ہوتا ہے - دیکھو جب
پیدا ہوتا ہے تب اُسی وقت اپنی
دودھ پینے لگتا ہے سبب یہہ ہے کہ اُسکو
جنم کا خیال بنا رہتا ہے یہہ بھی ایک
تناسخ کا ہے - نیک بخت و بد بخت
قسم قسم کے درجہ و مرتبہ اور آرام و تکلیف
سے ظاہر ہوتا ہے کہ کرموں کا پھل ہے
جسم سے اور جسم سے تناسخ ثابت ہے -
قدیم ہیں کہ جنکا شروع اور انتہا نہیں -
جسم سے جیو جنم لیتاہے اُسکی کسیقدر
وغیرہ بنی رہتی ہیں اسی سبب سے
وغیرہ مختلف طبیعتوں اور عادتوں کے
ہیں یہہ بھی ایک ثبوت تناسخ کا ہے
بہت سے ثبوت تناسخ کے ہیں لیکن
روح کا پیدا ہونا اور پھر کبھی نہ
ہونا اسکا ثبوت نہیں ہو سکتا کیونکہ جو
بیان کیا اُسکے برخلاف ہونا چاہئے - سو
ہونا غیرممکن ہے - اور یہہ بات کہ مرا اور
ہوئی یعنی جب قیامت ہوگی
اُسکا حساب کتاب ہوگا تب تک بیچارہ
رہا ماننا اچھا نہیں - بعد ازاں پادری
تشریف لیگئے *

شاہجہاں پور جاکر مولوی صاحبوں نے
اندرمن صاحب کو لکھا کہ ہم آپ
بحث کرنا چاہتے ہیں - لیکن جب
جی اور منشی جی وہاں پہونچے تو
نے بحث مباحثہ کا نام تک نہ لیا *

ऋषिकालाङ्कचन्द्राब्दे नभश्शुक्ले दले तिथौ।
द्वादश्यां मङ्गले वारे ग्रन्थोऽयं पूरितो मया॥

ओ३म् ।

नमोविश्वम्भराय जगदीश्वराय ॥

अथ

॥ गोकरुणानिधिः ॥

गाय आदि पशुओं की रक्षा से सब प्राणियों के सुख के लिये ॥

अनेक सत्पुरुषों की सम्मति के अनुसार आर्य्यभाषा में बनाया है ॥

इस के अनुसार वर्त्तमान करने से संसार का बड़ा उपकार है ॥

संवत् १९३७ पौष

यह ग्रन्थ लाला सादीराम के प्रबन्ध से वैदिक यन्त्रालय बनारस, में मुद्रित हुआ

पहिलीवार १०००
छापा गया ।

[illegible]

॥ विज्ञापन ॥

यद्यपि आर्य्यावर्त्तदेशीय जन अपनी दयालुता और परंपरा से अद्यापि पशुओं की हिंसा करने में महापराधही जानते और मानते हैं तथापि विदेशीय पशु हिंसक निर्दयी जोकि पशुओं की हिंसा करने से संसार की हानि और उन अनाथ पशुओं को दारुण दुःख देते हैं उनके कारण इस देश के भी अज्ञान जन पशुओं की हिंसा करने और मांस खाने में प्रवृत्त होते जाते हैं इस महापराध से सर्वथा संसार की हानि और उन अनाथ पशुओं का दारुण दुःख देख श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती जीने निज करुणारूपी अमृत से गाय आदि पशुओं की रक्षा और संसार के विविध सुख होने के लिये यह (गोकरुणानिधि) ग्रन्थ प्रकाशित किया है ॥

सब सज्जन महाशय राजा महाराजा तथा सर्कार गवर्नमेण्ट से यह प्रार्थना है कि पक्षपात को छोड़ इस ग्रन्थ को देखें और परम उपकार देने वाले पशुओं पर दयारूपी अमृत की दृष्टि करके उन दीनों को बचावें कि जिस से संसार को अत्यंत आनन्द हो ॥

कीमत इस ग्रन्थ की ⁄)॥ बाहर के मगाने वालों को)॥ महसूल समेत ⁄) देने होंगे ॥

जो सज्जन इस ग्रन्थ को लिया चांहे मुझ से इस पते पर पत्र व्यवहार करें ॥

लाला सादीराम मैनेजर
वैदिक यन्त्रालय बनारस।
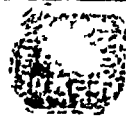
ओ३म्

नमोनमः सर्वशक्तिमते जगदीश्वराय।

॥ गोकरुणानिधिः ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे शं
चतुष्पदे। य० अ० ३६ मं० ८॥

तनोतु सर्वेश्वर उत्तमम्बलं गवादिरक्षं विविधं दयेरितः।
अशेषविघ्नानि निहत्य नः प्रभुः सहायकारी विदधातु गोहितम्॥ १॥
ये गोसुखं सम्यगुशंति धीरा यद्धर्म्मजं सौख्यमथाददन्ते॥
क्रूरा नराः पापरता नयंति प्रज्ञाविहीनाः पशुहिंसकास्तत्॥ २॥

भूमिका।

वे धर्म्मात्मा विद्वान् लोग धन्य हैं जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव अभिप्राय सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चल के सब संसार को सुख पहुंचाते हैं, और शोक है उन पर जो कि इन से विरुद्ध स्वार्थी दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिये वर्त्तमान हैं,। पूजनीय जन वे हैं, जो अपनी हानि होती हो तो भी सब के हित के करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं। और तिरस्करणीय वे हैं जो अपनेही लाभ में संतुष्ट रह कर अन्य के सुखों का नाश करते हैं, ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख

जो स्वयं न मानता हो, क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिस के गले को काटे या रच्चा करे वह सुख और दुःख का अनुभव न करे? जब सब को लाभ और सुखही में प्रसन्नता है तो विना अपराध किसी प्राणी का प्राणवियोग करके अपना पोषण करना यह सत् पुरुषों के सामने निंद्य कर्म्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिस से ये सब दया और न्याय युक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें, और स्वार्थपन से पच्चपात युक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिस से दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें,। इस ग्रंथ में जो कुछ अधिक न्यून वा अयुक्त लेख हुआ हो उस को बुद्धिमान् लोग इस ग्रंथ के तात्पर्य्य के अनुकूल करलेवें, धार्म्मिक विद्वानों की यही योग्यता है कि वक्ता के वचन और ग्रंथ कर्त्ता के अभिप्राय के अनुसार ही समझ लेते हैं, यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है कि जिस से गौ आदि पशु जहां तक सामर्थ्य हो बचाये जावें, और उन के बचाने से दूध घी और खेती के बढ़ने से सब को सुख बढ़ता रहे॥ परमात्मा कृपा करे कि यह अभीष्ट शीघ्र सिद्ध हो। इस ग्रन्थ में तीन प्रकरण हैं एक समीच्चा, दूसरा नियम, और तीसरा उपनियम,। इन को ध्यान दे पच्चपात छोड़ विचार के राजा तथा प्रजा यथावत् उपयोग में लावें कि जिस से दोनों के लिये सुख बढ़ताही रहे॥

इति भूमिका।

अथ समीक्षा ॥

गौ कृष्यादिरक्षिणीसभा ॥

इस सभा का नाम गो कृष्यादि रक्षिणी इस लिये रक्खा है जिस से गो आदि पशु और कृषि आदि कर्म्मों की रक्षा और वृद्धि होकर सब प्रकार के उत्तम सुख मनुष्यादि प्राणियों को प्राप्त होते हैं, और इस के विना निम्नलिखित सुख कभी नहीं प्राप्त हो सकते, । सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो २ पदार्थ बनाये हैं वे २ निष्प्रयोजन नहीं किंतु एक २ वस्तु अनेक २ प्रयोजन के लिये रचा है, इस लिये उन से वेही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है, देखिये जिस लिये यह नेत्र बनाया है इस से वही कार्य्य लेना सब को उचित होता है, नकि उस से पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीचही में वह नष्ट कर दिया जावे ! क्या जिन २ प्रयोजनों के लिये परमात्मा ने जो २ पदार्थ बनाए हैं उन २ से वे २ प्रयोजन न लेकर उन को प्रथमही विनष्ट करदेना सत् पुरुषों के विचार में बुरा कर्म्म नहीं है ? पक्षपात छोड़ कर देखिये गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्म्मों से सब संसार को असंख्य सुख होते हैं वा नहीं ? जैसे दो और दो चार, वैसेही सत्य विद्या से जो २ विषय जाने जाते हैं वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते ॥

जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कुछ भी शंका नहीं इस हिसाब से एक मास मे ८।ऽ सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम छः महीने और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में बारह महीने होते हैं इस हिसाब से बारहों महीनों का दूध ९९ऽ निन्नाणवे मन

होता है, इतने दूध को औटाकर और प्रति सेर में एक छंटांक चावल और डेढ़ छंटांक चीनी डालकर खीर बना खावें तो प्रत्येक पुरुष के लिये दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है क्योंकि यह भी एक मध्य भाग की गिनती है अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खायगा और कोई न्यून, इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से १६८० एक हजार नवसौ अस्सी मनुष्य एक वार तृप्त होते हैं, गाय न्यून से न्यून आठ और अधिक से अधिक अट्ठारह वार व्याती है इसका मध्यभाग तेरह वार आया। २३६४० तेईस हजार नवसौ चालीस मनुष्य एक गाय के दूध मात्र से एक वार तृप्त होसकते हैं, इस गाय की एक पीढ़ी में छः वछियां और सात वछड़े हुए इन में से एक का मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है तो भी वारह रहे, उन छः वछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार १४३६४० एक लाख तेतालीस हजार छःसौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता है, अब रहे छः बैल उन में एक जोड़ी से दोनों साख में २००५ दोसौ मन अन्न उत्पन्न होसकता है इस प्रकार तीन जोड़ी ६००५ छः सौ मन अन्न उत्पन्न करसकती हैं और उन के कार्य्य का मध्यभाग आठ वर्ष है इस हिसाब से ४८००५ चार हजार आठसौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म मे तीनों जोड़ी की है ४८०० इतने मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिनें तो २०८००० दो लाख अस्सी हजार मनुष्य का एक वार भोजन होता है, दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि ३५१६४० तीन लाख इक्कावन हजार छःसौ चालीस मनुष्यों का पालन एक वार के भोजन से होता है, अब छः गायकी पीढ़ी पर पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है, और इस के मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक वार तृप्त होसकते हैं, देखो तुच्छ लाभ के लिये

लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं ?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध कुछ अधिक और दैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुंचाता है, तदपि जितना गाय के दूध और दैलों के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है उतना भैंसियों के दूध और भैंसों से नहीं, क्योंकि जितने आरोग्य कारक और बुद्धि वर्द्धक आदि गुण गाय के दूध और वैलों में होते हैं उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि में नहीं होसकते इसी लिये आर्य्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है, ॥

और ऊंटनी का दूध गाय और भैंस के दूध से भी अधिक होता है तो भी इन के दूध के सदृश नहीं, ऊंट और ऊंटनी के गुण भार उठाकर शीघ्र पहुंचाने के लिये प्रशंसनीय हैं, ॥

अब एक बकरी न्यून से न्यून एक और अधिक से अधिक पांच सेर दूध देती है इस का मध्य भाग प्रत्येक बकरी से तीन सेर दूध होता है और वह न्यून से न्यून तीन महीने और अधिक से अधिक पांच महीने तक दूध देती है तो मध्य भाग चार सेर दूध प्रत्येक बकरी से प्रतिदिन पड़ा वह एक मास में तीन ३५ मन और चारमास में बारह १२५ मन होता है पूर्वोक्त प्रकारानुसार इस दूध से २४० दोसौ चालीस मनुष्यों की तृप्ति होती है और एक बकरी एक वर्ष में दोबार व्याती है इस हिसाब से एक वर्ष में ४८० चारसौ अस्सी मनुष्यों की दूध के एक वार भोजन से तृप्ति होती है, कोई बकरी न्यून से न्यून चारवर्ष और कोई अधिक से अधिक ८ आठ वर्ष तक व्याती है इस का मध्यभाग ६ छःवर्ष हुआ तो जन्मभर के दूध से २८८० दोहजार आठसौ अस्सी मनुष्यों का एक वार के भोजन से पालन होता है, अब उसी के बच्चा बच्ची मध्यभाग से २४ चौबीस हुए क्योंकि कोई न्यून से न्यून एक और कोई अधिक से अधिक तीन-

इन्हीं से व्याती है उन में से दो का अल्प मृत्यु समझो रहे २२ बाईस उन में से १२ बारह बकरियों के दूध से ३१६८० इकतीस हजार छःसौ अस्सी मनुष्यों का एकदिन पालन होता है उस की पीढ़ी पर पीढ़ी के हिसाब लगाने से असंख्य मनुष्यों का पालन होसकता है और बकरे भी बोझ उठाने आदि प्रयोजनों में आते हैं और बकरा बकरी मेंढा भेड़ी के रोम और उन के वस्त्रों से मनुष्यों को बड़े २ सुख लाभ होते हैं ? यद्यपि भेड़ी का दूध बकरी के दूध से कुछ कम होता है तदपि बकरी के दूध से उस के दूध में बल और घृत अधिक होता है ॥ इसी प्रकार अन्य दूध देने वाले पशुओं के दूध से भी अनेक प्रकार के सुख लाभ होते हैं जैसे ऊंट ऊंटनी से लाभ होते हैं वैसे ही घोड़े घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य्यसिद्ध होते हैं, इसी प्रकार सुअर कुत्ता मुर्गा मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी अनेक उपकार होते हैं जो मनुष्य हरिण और सिंह आदि पशु और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो लेसकते हैं परन्तु सब की रक्षा उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगी वर्त्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य्य है ॥ दोही प्रकार से मनुष्य आदि की प्राण रक्षा, जीवन, सुख, विद्या, बल, और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है एक अन्नपान दूसरा आच्छादन इन में से प्रथम के विना मनुष्यादि का सर्वथा प्रलय और दूसरे के विना अनेक प्रकार की पीड़ा होती है देखिये जो पशु निःसार घास तृण पत्ते फल फूल आदि खावें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें हल गाड़ी आदि में चलके, अनेक विध अन्न आदि उत्पन्नकर, सब के बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ा के नीरोगता करें, पुत्र पुत्री और मित्र आदि के समान मनुष्यों के साथ विश्वास और प्रेम करें जहां बांधें वहां बधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हटजावें, देखने और बु-

लाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें अपनी रक्षा के लिये पालन करने वाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा, ॥

जिन, की मरे पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षाकरे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिये दूध देने को नियत स्थानपर च-लेआवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिये तन, मन, लगावें जिन का सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिये है, इत्यादि शुभगुण युक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काट कर जो मनुष्य अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं क्या संसार में उन से भी अधिक कोई बिश्वास घाती अनुपकारक दुःख देने वाले और पापी मनुष्य हों गे? इसी लिये यजुर्वेद के प्रथम ही मंत्र में परमात्मा की आज्ञा है कि (अघ्न्याः + यजमानस्य पशून् पाहि) हे मनुष्य तूं इन को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले मनुष्यों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षाकर जिन से तेरी भी पूरी रक्षा होवे, और इसी लिये ब्रह्मा से लेके आजपर्य्यंत आर्य्यलोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं, और इन की रक्षा से अन्न भी महंगा नहीं होता क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है, और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है, मल के न्यून होने से दुर्गंध भी न्यून होता है, दुर्गंध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की अशुद्धि भी न्यून होती है, उस से रोगों की न्यूनता होने से सब को सुख बढ़ाता है ॥

इस से यह ठीक है कि गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश होजाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कर्म्मों की भी घटती होती है, देखो

इनों से, जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु ७०० सातसौ वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी, और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य से भी नहीं मिल सकते, क्योंकि ७०० सातसौ वर्ष के पीछे इस देश में गौ आदि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं, वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़ मांस तक भी नहीं छोड़ते तो (मूले नष्टे नैव पुष्पं फलं न) जब कारण का नाश करदें तो कार्य्य नष्ट क्यों न होजावे ? हे मांसाहारियो तुम लोग, जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ? हे परमेश्वर तू क्यों इन पशुओं पर जो कि विना अपराध मारे जाते हैं दया नहीं करता ? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या उन के लिये तेरी न्याय सभा बंद होगई है ? क्यों उन की पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता ? और उन की पुकार नहीं सुनता ? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन, और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता ? जिस से ये इन बुरेकामों से बचें ॥

हिंसक– ईश्वर ने सब पशु आदि सृष्टि मनुष्यों के लिये रची है, और मनुष्य अपनी भक्ति के लिये, इस लिये मांस खाने में दोष नहीं होसकता, ॥

रक्षक–भाई सुनो तुम्हारे शरीर को जिस ईश्वर ने बनाया है, क्या उसी ने पशु आदि के शरीर नहीं बनाये हैं ? जो तुम कहो कि पशु आदि हमारे खाने को बनाये हैं, तो हम कह सकते हैं कि हिंसक पशुओं के लिये तुम को उसने रचा है क्योंकि जैसे तुम्हारा चित्त उन के मांस पर चलता है वैसे ही सिंह गृध्र आदि का चित्त भी तुम्हारे मांस खाने पर चलता है, तो उन के लिये तुम क्यों नहीं ?

हिं०– देखो ईश्वर ने मनुष्यों के दांत पैंने मांसाहारी पशुओं के

समान बनाये हैं इस से हम जानते हैं कि मनुष्यों को मांसखाना उचित है ।

र०- जिन व्याघ्रादि पशुओं के दांत के दृष्टान्त से अपना पक्ष सिद्ध किया चाहते हो, क्या तुम भी उन के तुल्य ही हो ? देखो तुह्मारी मनुष्यजाति, उन की पशुजाति, तुह्मारे दो पग, और उन के चार, तुम विद्या पढ़कर सत्यासत्य का विवेक कर सकते हो वे नहीं, और यह तुह्मारा दृष्टांत भी युक्त नहीं क्योंकि जो दांत का दृष्टांत लेते हो तो बंदर के दांतों का दृष्टांत क्यों नहीं लेते देखो बंदरों के दांत सिंह और बिल्ली आदि के समान हैं और वे मांस कभी नही खाते, मनुष्य और बंदर की आकृति भी बहुत सी मिलती है जैसे मनुष्यों के हाथ पग और नख आदि होते हैं वैसे ही बंदरों के भी हैं, इसी लिये परमेश्वर ने मनुष्यों को दृष्टांत से उपदेश किया है कि जैसे बंदर मांस कभी नहीं खाते और फलादि खाकर निर्वाह करते हैं, वैसे तुम भी किया करो, जैसा बंदरों का दृष्टांत सांगो पांग मनुष्यों के साथ घटता है वैसा अन्य किसी का नहीं, इस लिये मनुष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड देवें ॥

हि०-देखो जो मांसाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान्, और जो मांस नहीं खाते वे निर्बल होते हैं इस से मांस खाना चाहिये ॥

र०-क्यों अल्प समझ की बातें मान कर कुछ भी विचार नहीं करते देखो सिंह मांस खाता, और सुअर वा अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता परंतु जो सिंह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गिरे तो एक वा दो को मारता और एक दो गोली वा तलवार के प्रहार से मर जाता है, और जब बराहो सुअर वा अरणा भैंसा जिस प्राणि समुदाय में गिरता है तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता, और अनेक गोली, बरछी, तथा तलवार आदि के प्रहारों से भी शीघ्र नहीं गिरता,

और सिंह उन से डर के अलग सटक जाता है, और वह सिंह से नहीं डरता ॥ और जो प्रत्यक्ष दृष्टान्त देखना चाहो, तो एक मांसाहारी का एक दूध घी और अन्नाहारी मथुरा के मल्ल चौबे से बाहु युद्ध हो तो अनुमान है कि चौबा मांसाहारी को पटक उस की छाती पर चढ़ ही बैठेगा, पुनः परीक्षा होगी कि किस २ के खाने से बल न्यून और अधिक होता है, भला तनिक विचार तो करो कि छिलकों के खाने से अधिक बल होता है अथवा रस और जो सार है उस के खान से? मांस छिलके के समान और दूध घी और रस सार के तुल्य है इस को जो युक्ति पूर्वक खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है फिर मांस का खाना व्यर्थ और हानि कारक, अन्याय, अधर्म्म, और दुष्ट कर्म्म क्यों नहीं ?

हिं०-जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता वहां वा आपत् काल में अथवा रोग निवृत्ति के लिये मांस खाने मे दोष नहींहोता ॥

र०-यह आप का कहना व्यर्थ है क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं वहां पृथिवी अवश्य होती है जहां पृथिवी है वहां खेती वा फल फूलआदि होते ही हैं, और जहां कुछ भी नहीं होता वहां मनुष्य भी नहीं रह-सकते और जहां ऊपर भूमि है वहां मिष्ट जल और फलाहारादि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है, और आपत् काल में भी अन्य उपायों से निर्वाह कर सकते हैं जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं, और विना मांस के रोगों का निवारण भी ओषधियों से यथावत् होता है इसी लिये मांस खाना अच्छा नहीं ॥

हि०-जो कोई भी मांस न खावे तो पशु इतने बढ़ जांय कि पृथ्वी पर भी न समावें और इसी लिये ईश्वर ने उन की उत्पत्ति भी अधिक की है तो मांस क्यों न खाना चाहिये ॥

र०–वाहः वाहः: वाहः:: यह बुद्धि का विपर्य्यास आप को मांसाहार ही से हुआ होगा, देखो मनुष्य का मांस कोई नहीं खाता पुनः क्यों न बढ़ गये; और इन की अधिक उत्पत्ति इस लिये है कि एक मनुष्य के पालन व्यवहार में अनेक पशुओं की अपेक्षा है इस लिये ईश्वर ने उन को अधिक उत्पन्न किया है ॥

हिं०–ये जितने उत्तर किये वे सब व्यवहार संबन्धी हैं परंतु पशुओं को मार के मांस खाने में अधर्म्म तो नहीं होता, और जो होता है तो तुम को होता होगा क्योंकि तुम्हारे मत में निषेध है इस लिये तुम मत खाओ और हम खावें क्योंकि हमारे मत में मांस खाना अधर्म्म नहीं है ॥

र०– हम तुम से पूछते हैं कि धर्म्म और अधर्म्म व्यवहार ही में होते हैं वा अन्यत्र ? तुम कभी सिद्ध न करसको गे कि व्यवहार से भिन्न धर्म्माधर्म्म होते हैं, जिस जिस व्यवहार से दूसरों को हानि हो वह २ अधर्म्म, और जिस २ व्यवहार से उपकार हो वह २ धर्म्म कहाता है, तो लाखों के सुख लाभ कारक पशुओं का नाश करना अधर्म्म और उनकी रक्षा से लाखों को सुख पहुंचाना धर्म्म क्यों नहीं मानते ? देखो चोरी जारी आदि कर्म्म इसी लिये अधर्म्म हैं कि इन से दूसरे की हानि होती है, नहीं तो जो २ प्रयोजन धनादि से उनके स्वामी सिद्ध करते हैं, वेही प्रयोजन उन चोरादि के भी सिद्ध होते हैं, इस लिये यह निश्चित है कि जो २ कर्म्म जगत् में हानिकारक हैं वे २ अधर्म्म और जो २ परोपकारक हैं वे २ धर्म्म कहाते हैं, जब एक आ- दि की हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप में गिनते हो तो गो आदि पशुओं को मार के बहुतों की हानि करना महा पाप क्यों नहीं होगा मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं किंतु स्वार्थ वश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करनेही में म-

हा रहते हैं, जब मांसाहारी किसी पुष्ट पशु को देखता है तभी उस की इच्छा होती है कि इस में मांस अधिक है मारकर खाऊं तो अच्छा हो, और जब मांस का न खाने वाला उस को देखता है तो प्रसन्न होता है कि यह पशु आनन्द मे है, जैसे सिंह आदि मांसाहारी पशु किसी का उपकार तो नहीं करते किंतु अपने स्वार्थ के लिये दूसरे का प्राण भी ले मांस खाकर अति प्रसन्न होते हैं, वैसेही मांसाहारी मनुष्य भी होते हैं इस लिये मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं, ॥

हिं०- अच्छा जो यही बात है तो जब तक पशु काम में आवें तब तक उनका मांस न खाना चाहिये, जब बूढ़े हो जावें वा मरजावें तब खाने में कुछ भी दोष नहीं ॥

र०- जैसे दोष उपकार करने वाले माता पिता आदि के वृद्धावस्था मे मारने और उनके मांस खाने में हैं, वैसे उन पशुओं की सेवा न कर मार के मांस खाने में हैं और जो मरे पश्चात् उनका मांस खावे तो उस का स्वभाव मांसाहारी होने से अवश्य हिंसक होके हिंसा रूपी पाप से कभी न बच सकेगा इस वास्ते किसी अवस्था में मांस न खाना चाहिये, ॥

हिं०- जिन पशुओं और पक्षियों अर्थात् जंगल में रहने वालों से उपकार किसी का नहीं होता और हानि होती है उन का मांस खाना चाहिये वा नहीं ? ॥

र०- न खाना चाहिये, क्योंकि वे भी उपकार में आसकते हैं देखो सौ १०० भंगी जितनी शुद्धि करते हैं उन से अधिक एक सुअर वा मुर्गा अथवा मोर आदि पक्षी सर्प्प आदि की निवृत्ति करने से पवित्रता और अनेक उपकार करते हैं और जैसे मनुष्यों का खान पान दूसरे के खाने पीने से उन का जितना अनुपकार होता है वैसे जंगली

मांसाहारी का अन्न जंगली पशु और पक्षी हैं, और जो विद्या वा विचार से सिंह आदि वनस्थ पशु और पक्षियों से उपकार लेवें तो अनेक प्रकार का लाभ उन से भी हो सकता है इस कारण मांसाहार का सर्वथा निषेध होना चाहिये। भला जिन के दूध आदि खाने पीने में आते हैं वे माता पिता के समान माननीय क्यों न होने चाहिये? ईश्वर की सृष्टि से भी विदित होता है कि मनुष्यों से पशु और पक्षी आदि अधिक रहने मे कल्याण है क्योंकि ईश्वर ने मनुष्यों के खाने पीने के पदार्थों से भी पशु और पक्षियों के खाने पीने के पदार्थ घास वृक्ष फूल फलादि अधिक रचे हैं और वे विना जोते बोए सींचे पृथिवी पर स्वयं उत्पन्न होते हैं, और वहां वृष्टि भी करता है इस लिये समझ लीजिये कि ईश्वर का अभिप्राय उन के मारने मे नहीं किंतु रक्षा ही करने में है॥

हिं०— जो मनुष्य पशु को मार के मांस खावें उन को पाप होता है और जो बिकता मांस मूल्य से ले वा भैरव, चामुंडा, दुर्गा, जखैया, वाममार्ग, अथवा यज्ञ आदि की रीति से चढ़ा समर्पण कर खावें तो उन को पाप नहीं होना चाहिये क्योंकि वे विधि कर के खाते हैं॥

र०—जो कोई मांस न खावे न उपदेश और न अनुमति आदि देवे तो पशु आदि कभी न मारे जावें, क्योंकि इस व्यवहार में वहकावट लाभ और विक्री न हो तो प्राणियों का मारना बंद हो होजावे इस में प्रमाण भी है॥

अनुमंता विशसिता निहंता क्रयविक्रयी।
संस्कर्त्ताचोपहर्त्ता च खादकश्चेतिघातकाः॥ १॥

अर्थ॥ अनुमति मारने की आज्ञा देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उन को मारने के लिये लेने और बेचने, मांस के पकाने, परसने, और खाने वाले ८ आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पाप-

काते हैं, और भैरव आदि के निमित्त से भी मांस खाना मारना वा मर-वाना महापाप कर्म्म है, इसी लिये दयालु परमेश्वर ने वेदों मेंमांस खाने वा पशु आदि के मारने की विधि नहीं लिखी, मद्य भी मांस खाने का ही कारण है इस से यहां संक्षेप से थोड़ासा लिखा है ॥

प्रमत्त—कहो जी मांस छूटा सो छूटा परंतु मद्य में तो कोई भी दोष नहीं है ॥

शांत—मद्य पीने में भी वैसे ही दोष हैं जैसे कि मांस खाने में मनुष्य मद्य पीने से नशे के कारण नष्ट बुद्धि होकर अकर्तव्य कर लेता और कर्तव्य को छोड़ देता है, न्याय का अन्याय और अन्याय का न्याय आदि विपरीत कर्म्म करता है और मद्य की उत्पत्ति विकृत पदार्थों से होती है, और वह मांसाहारी अवश्य होजाता है, इस लिये इस के पीने से आत्मा में विकार उत्पन्न होते हैं, और जो मद्य पीता है वह विद्यादि गुणों से रहित होकर उन दोषों में फसकर अपने धर्म्म, अर्थ, काम, और मोक्ष फल को छोड़ पशुवत् आहार निद्रा भय मैथुन आदि कर्म्मों में प्रवृत्त होकर अपने मनुष्य जन्म को व्यर्थ कर देता है इस लिये नशा अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन भी न करना चाहिये जैसा मद्य है वैसे भांग आदि पदार्थ भी मादक हैं इस लिये इन का सेवन कभी न करें, क्योंकि किये भी बुद्धि का नाश कर के प्रमाद, आलस्य और हिंसा आदि में मनुष्य को लगा देते हैं इस लिये मद्य पान का भी सर्वथा निषेध ही है ॥

इस वास्ते हे धार्म्मिक सज्जन लोगो आप इन पशुओं की रक्षा तन, मन, और धन, से क्यों नहीं करते? हाय :: बड़े शोक की बात है जब हिंसक गाय बकरे आदि पशु और मोर आदि पक्षियों को मारने के लिये लेजाते हैं तब वे अनाथ तुम हम को देख के राजा और प्रजा

पर बड़े शोक प्रकाशित करते हैं कि देखो हम को विना अपराध बुरे हाल से मारते हैं, और हम रक्षा करने तथा मारने वालों को भी दूध आदि अमृत पदार्थ देने के लिये उपस्थित रहना चाहते हैं और मारे जाना नहीं चाहते, देखो हम लोगों का सर्वस्व परोपकार के लिये है और हम इसी लिये पुकारते हैं कि हम को आप लोग बचावें, हम तुम्हारी भाषा में अपना दुःख नहीं समझा सकते, और आप लोग हमारी भाषा नहीं जानते, नहीं तो, क्या हम में से किसी को कोई मारता तो हम भी आप लोगों के सदृश अपने मारने वालों को न्याय व्यवस्था से फांसी पर न चढ़वा देते ? हम इस समय अतीव कष्ट में हैं, क्योंकि कोई भी हम को बचाने में उद्यत नहीं होता, और जो कोई होता है तो उस से मांसाहारी द्वेष करते हैं (अस्तु) वे स्वार्थ के लिये द्वेष करें तो करो क्योंकि (स्वार्थी दोषन्न पश्यति) जो स्वार्थ साधने में तत्पर है वह अपने दोषों पर ध्यान नहीं देता किंतु दूसरों की हानि हो तो मुझ को सुख होना चाहिये, परंतु जो उपकारी हैं वे इन के बचाने में अत्यंत पुरुषार्थ करें जैसा कि आर्य्य लोग सृष्टि के आरम्भ से आज तक वेदोक्त रीति से प्रशंसनीय कर्म्म करते आये हैं वैसे ही सब भूगोलस्थ सज्जन मनुष्यों को करना उचित है ॥

धन्य है आर्य्यावर्त्तदेशवासी आर्य्यलोगों को कि जिन्हों ने ईश्वर की सृष्टि क्रम के अनुसार परोपकार ही में अपना तन, मन, धन लगाया, और लगाते हैं, इसी लिये आर्य्यावर्तीय, राजा, महाराजा, प्रधान, और धनाढ्य लोग आधी पृथ्वी में जंगल रखते थे कि जिस से पशु और पक्षियों की रक्षा होकर ओषधियों का सार दूध आदि पवित्र पदार्थ उत्पन्न हों जिन के खाने पीने से, आरोग्य, बुद्धिबल, पराक्रम आदि सद्गुण बढ़ें; और वृक्षों के अधिक होने से वर्षा जल और वायु में आर्द्रता, और शुद्धि अधिक

होती है पशु और पक्षी आदि के अधिक होने से खात भी अधिक होता है, परंतु इस समय के मनुष्यों का इस से विपरीत व्यवहार है कि जंगलों को काट, और कटवा डालना, पशुओं को मार, और मरवा खाना, और विष्ठा आदि का खात खेतों में डाल अथवा डलवा कर रोगों की वृद्धि कर के संसार का अहित करना स्वप्रयोजन साधना, और परप्रयोजन पर ध्यान न देना, इत्यादि काम उलटे हैं (विषादप्यमृतङ्ग्राह्यम्) सत्पुरुषों का यही सिद्धांत है कि विष से भी अमृत लेना, इसी प्रकार गाय आदि का मांस विषवत् महारोगकारी को छोड़ कर और उन से उत्पन्न हुए दूध आदि अमृत रोग नाशक हैं उन को लेना, अतएव इन की रक्षा कर के विषत्यागी, और अमृत भोजी सब को होना चाहिये, सुनो बंधु वर्गो तुम्हारा तन, मन, धन, गाय आदि की रक्षा रूप परोपकार में न लगे तो किस काम का है, देखो परमात्मा का स्वभाव कि जिस ने सब विश्व और सब पदार्थ परोपकार ही के लिये रच रक्खे हैं, वैसे तुम भी अपना तन, मन, धन, परोपकार ही के लिये अर्पण करो, बड़े आश्चर्य की बात हैं कि पशुओं को पीड़ा न होने के लिये न्याय पुस्तक में व्यवस्था भी लिखी है कि जो पशु दुर्बल और रोगी हो उस को कष्ट न दिया जावे और जितना बोझ सुख पूर्वक उठा सकें उतना ही उन पर धरा जावे,

श्रीमती राजराजेश्वरी श्रीविक्टोरिया महाराणी का विज्ञापन भी प्रसिद्ध है कि इन अव्यक्त वाणी पशुओं को जो २ दुःख दिया जाता है वह २ न दिया जावे, जो यही बात है कि पशुओं को दुःख न दिया जावे, तो क्या भला मारडालने से भी अधिक कोई दुःख होता है? क्या फांसी से अधिक दुःख बंदीगृह में होता है? जिस किसी अपराधी से पूछा जाय कि तू फांसी चढ़ने में प्रसन्न है वा बंधी घर पर रहने में? तो

वह स्पष्ट कहेगा कि फांसी में नहीं किंतु बंधी घर के रहने में और जो कोई मनुष्य भोजन करने को उपस्थित हो उस के आगे से भोजन के पदार्थ उठा लिये जावें और उस को वहां से दूर किया जावे तो क्या वह सुख मानेगा? ऐसे ही आज कल के समय में कोई गाय आदि पशु सरकारी जंगल में जाकर घास और पत्ता जो कि उन्ही के भोजनार्थ हैं बिना महसूल दिये खावें वा खाने को जावें तो बेचारे उन पशुओं और उन के स्वामियों की दुर्दशा होती है, जंगल मे आग लग जल जावे तो कुछ चिंता नहीं किंतु वे पशु न खाने पावें, हम कहते हैं कि किसी अति क्षुधातुर राजा वा राजपुरुष के सामने चावल आदि वा डबल रोटी आदि छीन कर न खाने देवे, और उन की दुर्दशा कीजावे तो जैसा दुःख इन को विदित होगा क्या वैसा ही उन पशु पक्षियों और उन के स्वामियों को न होता होगा? ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दुःख सुख अपने को होता है वैसा ही औरों को भी समझा कीजिये, और यह भी ध्यान में रखिये कि वे पशु आदि और उन के स्वामी तथा खेती आदि कर्म्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है इसी लिये राजा प्रजा से कर लेता है कि उन की रक्षा यथावत् करे, न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उन का नाश किया जावे, इस लिये आजतक जो हुआ सो हुआ; आगे आंखें खोल कर सब के हानिकारक कर्म्मों को न कीजिये, और न करने दीजिये॥ हां हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों को जतादेवें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सब की रक्षा और बढती करने मे तत्पर रहें. सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आप पर पूर्णकृपा करे कि जिस से हम और आप लोग वि-

के हानिकारक कर्म्मों को छोड़ सर्वोपकारक कामों को कर के सब लोग आनंद में रहैं ॥ इन सब बातों को मत सुन डालना, किंतु सुन रखना, इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना ॥

हे महाराजाधिराजाधिराजजगदीश्वर जो इन को कोई न बचावे तो आप इन की रक्षा करने और हम से कराने में शीघ्र उद्यत हूजिये ॥

इति समीक्षा ॥

इस सभा के नियम ॥

१ सब विश्व को विविध सुख पहुंचाना इस सभा का मुख्य उद्देश है किसी की हानि करना प्रयोजन नहीं ॥

२ जो जो पदार्थ सृष्टिक्रमाऽनुकूल जिस २ प्रकार से अधिक उपकार में आवे उस २ से आप्ताऽभिप्रायाऽनुसार यथायोग्य सर्वहित सिद्ध करना इस सभा का परम पुरुषार्थ है ॥

३ जिस २ कर्म्म से बहुत हानि और थोड़ा लाभ हो उस २ को सभा कर्त्तव्य नहीं समझती ॥

४ जो २ मनुष्य इस परमहितकारी कार्य्य में तन, मन, धन, से प्रयत्न और सहायता करे वह २ इस सभा का प्रतिष्ठा योग्य होवे ॥

५ जो कि यह कार्य्य सर्वहितकारी है इस लिये यह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है ॥

६ जो जो सभा देश देशांतर और द्वीप द्वीपांतर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है वह २ इस सभा की सहायकारिणी समझी जाती है ॥

७ जो २ जन राजनीति वा प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध, स्वार्थी, क्रोधी, और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राजा और प्रजा के लिये अनिष्ट कार्य्य करे वह २ इस सभा का सम्बन्धी न समझा जावे ॥

उपनियम ॥

१ इस सभा का नाम "गोकृष्यादिरक्षिणी" है ॥

उद्देश

२ इस सभा के उद्देश वेही हैं जो कि इस के नियमों में वर्णन किये गये हैं ॥

३ जो लोग इस सभा* में नाम लिखाना चाहें और इसके उद्देशाऽनुकूल आचरण करना चाहें वे इस सभा मे प्रविष्ट होसकते हैं परंतु उन की आयु १८ वर्ष से न्यून न हो जो लोग इस सभा में प्रविष्ट हों वे गोरक्षक सभासद कहलावेंगे ॥

४ जिन का नाम इस सभा में सदाचार से एक वर्ष रहा हो और वे अपने आय का शतांश वा अधिक मासिक वा वार्षिक इस सभा को दें वे गोरक्षक सभासद हो सकते हैं और सम्मति देने का अधिकार केवल गोरक्षक सभासदोंही को होगा ॥

अ+ गोरक्षक सभासद बनने के लिये गोकृष्यादिरक्षिणी सभा में वर्ष भर नाम रहने का नियम किसी युक्ति के लिये अंतरंग सभा शिथिल भी कर सकती है इस सभा में वर्षभर रहकर गोरक्षक सभासद बनने का नियम गोकृष्यादिरक्षिणी सभा के दूसरे वर्ष से काम आवेगा ॥

ब+ राजा सर्दार वा बडे २ साहूकार आदि को इस सभा के सभासद बनने के लिये शतांशही देना आवश्यक नहीं वे एक वार वा मासिक वा वार्षिक अपने उत्साहाऽनुसार दे सकते हैं ॥

---

* इस सभा में नाम लिखाने के लिये सभी के पास इस प्रकार [illegible] पूर्वक इस सभा के उद्देशानुकूल जोकि नियमों में वर्णन किये [illegible] भा में लिख लीजिये परन्तु अंतरङ्ग सभा को अधिकार रहेगा कि बिना [illegible] में लिखना स्वीकार न करे, ॥

ज+ अंतरंग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न देने वाले पुरुष को भी गोरक्षक सभासद बना सकती है ॥

द+ नीचे लिखी हुई विशेष दशाओं में उन सभासदों की भी जो गोरक्षक सभासद नहीं बने सम्मति ली जा सकती है ॥

१ जब नियमों में न्यूनाधिक शोधन करना हो ॥

२ जब कि विशेष अवस्था में अंतरंग सभा उन की सम्मति लेनी योग्य और आवश्यक समझे ॥

३ जो इस सभा के उद्देश के विरुद्ध कर्म्म करेगा वह न तो गोरक्षक और न गोरक्षकसभासद गिना जावेगा ॥

४ गोरक्षक सभासद दो प्रकार के होंगे एक साधारण और दूसरे माननीय। माननीय गोरक्षक सभासद वे होंगे जो शतांश १०) मासिक वा इस से अधिक देवें अथवा एक बार २५०) रुपया दें, वा जिन को अन्तरंग सभाविद्याआदिश्रेष्ठगुणों से माननीय समझे ॥

५ यह सभा दो प्रकार की होगी एक साधारण दूसरी अंतरंग ॥

६ साधारण सभा तीनप्रकार की होवे १ मासिक २ पारामासिक और ३ नैमित्तिक ॥

७ (मासिक सभा) प्रतिमास एक वार हुआ करे उस में महीने भर का आय व्यय और सभा के कार्य्य कर्त्ताओं की क्रियाओं का वर्णन किया जावे जोकि कथन योग्य हो ॥

८ (पारामासिक सभा) कार्त्तिक और वैशाख के अंत में हुआ करे उस में शास्त्रोक्त विचार मासिक सभा का कार्य्य प्रत्येक प्रकार का आय व्यय समझना और समझाना होवे ॥

९ (नैमित्तिकसभा) जब कभी मंत्री प्रधान और अंतरंग सभा आवश्यक कार्य्य जाने उसी समय यह सभा हो और उस में विशेष कार्य्यों

का प्रबंध होवे ॥

१० (अंतरंग सभा) सभा के सब कार्य्य प्रबंध के लिये एक अंतरंग सभा नियत की जावे और इस में तीन प्रकार के सभासद हों एक प्रतिनिधि दूसरे प्रतिष्ठित और तीसरे अधिकारी ॥

११. प्रतिनिधि सभासद अपने २ समुदायों के प्रतिनिधि होंगे और उन्हें उनके समुदाय नियत करेंगे, कोई समुदाय जब चाहे अपने प्रतिनिधि को बदल सकता है ॥

१२ प्रतिनिधि सभासदों के विशेष कार्य्य ये होंगे ॥

अ+ अपने २ समुदायों की सम्मति से अपने को विज्ञ रखना ।

ब+ अपने २ समुदायों को अंतरङ्ग सभा के कार्य्य जो कि प्रकट करने के योग्य हों बतलाना ॥

ज+ अपने २ समुदायों से चंदा इकट्ठा करके कोषाध्यक्ष को देना ॥

१३ प्रतिष्ठित सभासद विशेष गुणों के कारण प्रायः वार्षिक, नैमित्तिक, और साधारण सभा में नियत किये जावें प्रतिष्ठित सभासद अंतरंग सभा में एक तिहाई से अधिक न हों ॥

१४ प्रति वैशाख की सभा में अंतरंग सभा के प्रतिष्ठित सभासद और अधिकारी वार्षिक साधारण सभा में फिर से नियत किये जावें और कोई पुराना प्रतिष्ठित सभासद और अधिकारी पुनर्वार नियुक्त हो सकता है ॥

१५ जब वर्ष के पहिले किसी प्रतिष्ठित सभासद और अधिकारी का स्थान रिक्त हो तो अंतरंग सभा आपही उस के स्थान पर किसी और योग्य पुरुष को नियत कर सकती है ।

१६ अंतरंग सभा कार्य्य के प्रबंध निमित्त उचित व्यवस्था बना सकती है, परंतु वह नियमों और उपनियमों से विरुद्ध न हो ॥

१७ अंतरंग सभा किसी विशेष कार्य्य के करने और सोचने के लिये अपने में से सभासदों और विशेष गुण रखने वाले सभासदों को मिलाकर उपसभा नियत कर सकती है, ॥

१८ अंतरंग सभा का कोई सभासद मंत्री को एक सप्ताह के पहिले विज्ञापन दे सकता है कि कोई विषय सभा में निवेदन किया जाय और वह विषय प्रधान की आज्ञानुसार निवेदन किया जावे परंतु जिस विषय के निवेदन करने में अंतरंग सभा के पांच सभासद सम्मति दें वह अवश्य निवेदन करनाही पड़े ॥

१९ दो सप्ताह के पीछे अंतरङ्ग सभा अवश्य हुआ करे, और मंत्री और प्रधान की आज्ञा सेवा जब अंतरंग सभा के पांच सभासद मंत्री को पत्र लिखें तो भी हो सकती है ॥

२० अधिकारी छः प्रकार के होंगे, १ प्रधान २ उपप्रधान ३ मंत्री ४ उपमंत्री ५ कोषाध्यक्ष ६ पुस्तकाध्यक्ष ॥

(मंत्री) (कोषाध्यक्ष) (पुस्तकाध्यक्ष) इन के अधिकारों पर आवश्यकता होने से एक से अधिक पुरुष भी नियत हो सकते हैं और जब किसी अधिकार पर एक से अधिक पुरुष नियत हों तो अंतरङ्ग सभा उन्हें कार्य्य बाट देवें ॥

प्रधान ॥

२१ प्रधान के निम्न लिखित अधिकार और काम होवे।

१ (प्रधान) अंतरङ्ग सभा आदि सब सभाओं का सभापति समझाजावे।

२ सदा सभा के सब कार्य्यों के यथावत् प्रबंध करने और सर्वथा सभा की उन्नति और रक्षा में तत्पर रहे सभा के प्रत्येक कार्य्य को देखे कि वे नियमानुसार किये जाते हैं वा नहीं और स्वयं नियमानुसार चले ॥

३ यदि कोई विषय कठिन और आवश्यक प्रतीत हो तो उस का यथोचित प्रबंध उसी समय करे और उस के बिगड़ने मे उत्तर दाता वही होवे ॥

४ प्रधान अपने प्रधानत्व के कारण सब उपसभाओं का जिन्हे अंतरंग सभा संस्थापन करे सभासद हो सकता है॥

उपप्रधान ॥

२२ इस के ये कार्य्य कर्त्तव्य हैं प्रधान के अनुपस्थ होने पर उस का प्रतिनिधि होवे, यदि दो वा अधिक उपप्रधान हो तो सभा की सम्मति के अनुसार उन में से कोई एक प्रतिनिधि किया जावे परंतु सभा के सब कार्य्यों में प्रधान को सहायता देनी उस का मुख्य कार्य्य है ॥

मंत्री ॥

२३ (मंत्री) के निम्न लिखित अधिकार और कार्य्य हैं ॥

१ अंतरंग सभा की आज्ञानुसार सभा की ओर से सब के साथ पत्र व्यवहार रखना ॥

२ सभाओं का वृत्तांत लिखना और दूसरी सभा होने से पहिले ही पूर्व वृत्तांत पुस्तक में लिखना वा लिखवा देना ॥

३ मासिक अंतरंग सभाओं मे इन गोरक्षको वा गोरक्षक सभासदों के नाम सुनाना जो कि पिछली मासिक सभा के पीछे सभा मे प्रविष्ट वा उस से पृथक् हुए हों ॥

४ सामान्य प्रकार से भृत्यों के कार्य्य पर दृष्टि रखना और सभा के नियम, उपनियम, और व्यवस्थाओं के पालन पर ध्यान रखना ॥

५ इस बात का भी ध्यान रखना कि प्रत्येक गोरक्षक सभासद कि-

को न किसी समुदाय में हों और इसका भी कि प्रत्येक समुदाय ने अपनी ओर से अंतरङ्ग सभा में प्रतिनिधि किया होवे ॥

६ पहिले विज्ञापन दिये जाने पर मान्य पुरुषों को सत्कार पूर्वक बिठलाना ॥

७ प्रत्येक सभा में नियत काल आना और बराबर ठहरना ॥

कोषाध्यक्ष ॥

२४ (कोषाध्यक्ष) के नीचे लिखे अधिकार और कार्य्य हैं ॥

१ सभा के सब आयधन का लेना, उस की रसीद देना और उस को यथोचित रखना ॥

२ किसी को अंतरंग सभा की आज्ञा के विना रुपया न देना किंतु मंत्री और प्रधान को भी उस प्रमाण से देवे कि जितना अंतरंग सभा ने उन के लिये नियत किया हो, अधिक न देना और उस धन के उचित व्यय के लिये वही अधिकारी जिस के द्वारा वह व्यय हुआ हो उत्तर दाता होवे ॥

३ सब धन के व्यय का रीति पूर्वक वही खाता रखना और प्रतिमास अंतरंग सभा में हिसाब को वही खाते समेत परताल और स्वीकार के लिये निवेदन करना ॥

पुस्तकाध्यक्ष ॥

२५ (पुस्तकाध्यक्ष) के अधिकार और कार्य्य ये होवें जो पुस्तकालय में सभा की स्थिर और विक्रय की पुस्तक हों उन सब की रक्षा करे और पुस्तकालय सम्बंधी हिसाब भी रक्खे और पुस्तकों के लेने देने का कार्य्य भी करे ॥

मिश्रितनियम ॥

२६ सब गोरक्षक सभासदों की सम्मति निम्नलिखित दशाओं में लेवे ये। अंतरंग सभा का यह निश्चय हो कि किसी साधारण सभा के सिद्धांत पर निर्भर न करना चाहिये किंतु गोरक्षक सभासदों की सम्मति जाननी चाहिये ॥

२ सब गोरक्षक सभासदों का बीसवां वा अधिक अंश इस निमित्त मंत्री के पास पत्र लिख भेजे ॥

३ जब बहुत से व्ययसम्बंधी वा प्रबंधसम्बंधी वा नियम अथवा व्यवस्थासम्बंधी कोई मुख्यविचारादि करना हो अथवा जब अंतरंग सभा सब गोरक्षक सभासदों की सम्मति जाननी चाहे ॥

२७ जब किसी सभा में थोड़े से समय के लिये कोई अधिकारी उपस्थित न हो तो उस के स्थान में उस समय के लिये किसी योग्य पुरुष को अंतरंग सभा नियत कर सकती है ॥

२८ यदि किसी अधिकारी के स्थान पर वार्षिक साधारण सभा ने कोई पुरुष नियत न किया जावे तो जब तक उस के स्थानापन्न नियत न किया जाय वही अधिकारी अपना काम करता रहे ॥

२९ सब सभा और उपसभाओं का वृत्तान्त लिखा जाया करे और उस को सब गोरक्षक सभासद देख सकते हैं ॥

३० सब सभाओं का कार्य्य तब आरम्भ हो जब एक तिहाई सभासद उपस्थित हों ॥

३१ सब सभाओं और उपसभाओं के सारे काम बहुसम्मत्यनुसार निश्चित हों ॥

३२ आय का दशांश समुदाय धन में रक्खा जावे ॥

३३ सब गोरक्षक और गोरक्षकसभासदों को इस सभा की उपयोगी वेदादि विद्या जाननी और जनानी चाहिये ॥

३४ सब गोरक्षक और गोरक्षक सभासदों को उचित है कि लाभ और आनन्द समय मे सभा की उन्नति के लिये उदारता और पूर्ण प्रेमदृष्टि रक्खें ॥

३५ सब गोरक्षक और गोरक्षक सभासदों को उचित है कि शोक और दुःख के समय में परस्पर सहायता करें और आनन्दोत्सव में निर्मत्सर पर सहायक हों छोटाई बड़ाई न गिनें ॥

३६ कोई गोरक्षक भाई किसी हेतु से अनाथ वा किसी की स्त्री विधवा अथवा संतान अनाथ हो जावें अर्थात् उन का जीवन न हो सकता हो और यदि गोकृष्यादि रक्षिणी सभा उनको निश्चित जान ले तो यह सभा उनकी रक्षा में यथाशक्ति यथोचित प्रबंध करे ॥

३७ यदि गोरक्षक सभासदों में किन्हीं का परस्पर झगड़ा हो तो उन को उचित है कि वे आपस में समझ लेवें वा गोरक्षक सभासदों की न्यायउपसभा द्वारा उसका न्याय करा लें, परंतु अशक्या वस्था में राजनीति द्वारा भी न्याय करा लेवें ॥

३८ इस गोकृष्यादि रक्षिणी सभा के व्यवहार में जितना २ लाभ होगा वह २ सर्वहित कारी काम में लगाया जावे किंतु यह महाधन तुच्छ कार्य्य में व्यय न किया जावे और जो कोई इस गोकृष्यादि की रक्षा के लिये धन है इस को चोरी से अपहरण करेगा वह गोहत्या के पाप लगने से इस लोक और परलोक में महा दुःखभागी अवश्य होगा ॥

३९ संप्रति इस सभा के धन का व्यय गोआदि पशु लेने, उनका पालन करने जंगल और घास के क्रय करने उन की रक्षा के लिये भृत्य

वा अधिकारी रखने तलाव कूप बावड़ी अथवा बाड़ा के लिये व्यय किया जावे पुनः अत्युन्नत होने पर सर्वहित कार्यों में भी व्यय किया जावे ॥

४० सब सज्जनों को उचित है कि इस गोरक्षक धन आदि समुदाय पर स्वार्थदृष्टि से हानि करना कभी मन से भी न विचारें किंतु यथाशक्ति इस व्यवहार की उन्नति में तन, मन, धन, से सदा परम प्रयत्न किया ही करें ॥

४१ इस सभा के सब सभासदों को यह बात अवश्य जाननी चाहिये कि जब गोआदि पशु रक्षित हो के बहुत बढेंगे तब कृष्य आदि कर्म्म और दुग्ध घृत आदि की वृद्धि होकर सब मनुष्यादि को विविध सुख लाभ अवश्य होगा इस के विना सब का हित सिद्ध होना संभव नहीं ॥

४२ देखिये पूर्वोक्त रीत्यनुसार एक गौ की रक्षा से लाखों मनुष्य आदि को लाभ पहुंचाना और जिस के मारने से उतने ही को हानि होती है ऐसे निकृष्ट कर्म्म के करने को आप्त विद्वान् कभी अच्छा न समझेगा ॥

४३ इस सभा के जो जो पशु प्रसूत होंगे उस उस का दूध एक मास तक उस के बछड़े को पिलाना और अधिक उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिये, और दूसरे मास मे तीन स्तनों का दूध बछड़े को देना और एक भाग लेना चाहिये, तीसरे मास के प्रारम्भ में आधा दूह लेना और आधा बछड़े को तब तक दिया करें कि जब तक गौ दूध देवे, ॥

४४ सभासदों को उचित है कि जब २ किसी को स्वरक्षित पशु देवें तब तब न्याय नियम पूर्वक व्यवस्था पत्र ले और देकर उन पर

पशु असमर्थ होजाय उस को काम का न रहे और उस के पालन करने में सामर्थ्य न हो तो अन्य किसी को न देसके किंतु पुनरपि सभा के आधान करे ॥

४५ इस सभा की अंतरंग सभा को उचित है किंतु अत्यावश्यक है कि उक्तप्रकार से अप्राप्त पशुओं की प्राप्ति, प्राप्तों की रक्षा, रक्षितों की वृद्धि, और बढे हुए पशुओं से नियमाऽनुसार और सृष्टि क्रमाऽनुकूल उपकार लेना अपने अधिकार में सदा रखना, अन्य किसी को इस में स्वाधीनता कभी न देवे ॥

४६ जोकि यह बहुत उपकारी कार्य्य है इस लिये इस का करने वाला इस लोक और परलोक में स्वर्ग अर्थात् पूर्ण सुखों को अवश्य प्राप्त होता है ॥

४७ कोई भी मनुष्य इस सभा के पूर्वोक्त उद्देशों को किये विना सुखों की सिद्धि नहीं कर सकता ॥

४८ क्या ऐसा कोई भी मनुष्य सृष्टि में होगा कि जो अपने सुख दुःख वत् दूसरे प्राणियों का सुख दुःख अपने आत्मा में न समझता हो ॥

४९ ये नियम और उपनियम उचित समय पर वा प्रति वर्ष में यथोचित विज्ञापन देने पर शोधे वा घटाये बढ़ाये जा सकते हैं ॥

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ओं शांतिः शांतिः शांतिः ॥

धेनुः परा दया पूर्वायस्यानन्दाद्विराजते ।
आर्य्यायां निर्म्मितस्तेन ग्रंथो गोकरुणानिधिः ॥ १ ॥
मुनिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे तपस्यस्यासिते दले ।
दशम्यां गुरुवारेऽलंकृतोऽयं कामधेनुपः ॥ २ ॥

॥ इति गोकरुणानिधिः ॥

विज्ञापन ।

———0———

विदित हो कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी वैसे तो वेदों का अत्युत्तम प्राचीन ऋषि मुनियों के प्रमाण सहित संस्कृत और आर्य्यभाषा में भाष्य कर रहे हैं परन्तु अब उन्हों ने आर्य्यसमाजों के कहने से व्याकरण आदि वेदों के अङ्ग और उपाङ्ग आदि को भी अति सुलभ आर्य्य भाषा में प्रकाश करने का प्रारम्भ किया है कि जिन से मनुष्य शीघ्र संस्कृत विद्या को पढ़कर मनुष्य जन्म के समग्र आनन्द को भोगें ॥

अभी तक निम्न लिखित पुस्तक पठन पाठन विषयक सुगम आर्य्यभाषा में प्राचीन रीति से बनाये गये हैं और क्रम से इस वैदिक यन्त्रालय में छपते जाते हैं।

१—वर्णोच्चारण शिक्षा । २—संस्कृत वाक्य प्रबोध । ३—व्यवहार भानु छप गये हैं । नीचे के संधिविषय आदि ग्यारह ११ पुस्तक अष्टाध्यायी के एक १ विषय पर भाषा में व्याख्या सहित छप रहे हैं। उन में से ४—संधि विषय छप गया है और ५—नामिक छपता है । ६—तद्धितः । ७—सामासिकः । ८—अव्ययार्थः । ९—आख्यातिक । १०—कारकीय । ११—सौवर । १२—पारिभाषिकः १३—उणादिगणः । १४—गणपाठः ।
१५—अष्टाध्यायी—यह पुस्तक अलग भी संस्कृत वृत्ति सहित छपेगा । १६—निघण्टु अर्थात् यास्क मुनि कृत वैदिक कोश ॥

निम्न लिखित पुस्तक इस वैदिक यंत्रालय में उपस्थित हैं ॥

पुस्तक	मूल्य	डाक महसूल
१—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित ऋग् और यजुर्वेद भाष्य ४ वर्ष तक का	२५)	॥)
२—केवल ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	५)	।)
३—संस्कार विधि.	१॥=)	=)
४—सन्ध्योपासन संस्कृत और भाषा	।)	)॥
५—सन्ध्योपासन संस्कृत	=)	)॥
६—आर्य्योद्देश्य रत्नमाला	/)॥	)॥
७—संधि विषय	॥)	)॥
८—गोकरुणानिधि	/)॥	)॥
९—सत्यधर्म विचार	=)	)॥
१०—गौतम अहल्या और इन्द्र वृत्रासुर की सत्यकथा	)॥	)॥
११—वर्णोच्चारण शिक्षा	=)	)॥
१२—संस्कृतवाक्यप्रबोध	।/)	)॥
१३—व्यवहार भानु	।)	)॥
१४—शास्त्रार्थ काशी संस्कृत व भाषा	=)	)॥
१५—शास्त्रार्थ काशी भाषा व उर्दू	=)	)॥
१६—स्वामी नारायण मत खण्डन संस्कृत व गुजराती	=)	)॥
१७—स्वामी नारायण मत खण्डन गुजराती	/)	)॥
१८—आर्[illegible]	/)	)॥

१—सत्यार्थ प्रकाश । २—आर्य्याभि विनय । ३—वेदविरुद्ध मतखण्डन । ४—वेदान्तिध्वान्तनिवारण ॥ यह पुस्तक दूसरी बार छपेंगे ॥

परमात्माजयति

सत्यासत्य निर्णय:

———✤———

भुजंगप्रयात्छंद:

निराकार निरवयव हे निर्विकारी, परब्रह्म रचा करो तुम हमारी ॥ १ ॥
तुम्हें सच्चिदानंद अखिलेश स्वामी, नमामी नमामी नमामी नमामी
कहूं पोप लीलाकी क्या मैं कहानी, हुई धर्मकी सर्वथा जिससे हानी
खलोंने असत्कर्म ऐसे चलाये, सकल धर्म वैदिक जगत से उठाये
ऋषिव्यासने ग्रंथ भारत बनाया, उसे पोपने कर चतुर्गुण दिखाया ॥ ५ ॥
मनु में बहुत वाक्य झूंठे मिलाये, बहुत ग्रंथ निज अर्थ मिथ्या बनाये
रचे भागवत आदि जो २ पुराणा, लिखी उन में गाथा असत् भांति नाना
परस्पर विरुद्ध और असंभव कहानी, लिखीं देव निंदा महा पाप मानी
लिखीं संहिता गर्ग में जो कथा हैं, वह निंदा में श्री कृष्णकी सर्वथा हैं
गई पोप लोगोंकी क्या बुद्धिमारी, कहें अपने शिष्टों को दुष्कर्मचारी ॥ १० ॥
कहें अज हुए अपनी पुत्री पै मोहित, हुई सर्वथा बुद्धि जिनकी तिरोहित
कथा विष्णु वृंदाकी जो मूर्खगावें, कहो ऐसे पापी नरक क्यों न जावें
लिखी शिवकी निंदा पुराणोंमें जैसी, हमें मुखसे कहनी नहीं योग्य ऐसी
कहें इन्द्रगौतमकी जोकुछ कहानी, नक्यों बुद्धिमानों को हो उससे ग्लानी
कहें कृष्णको चोर और जारकर्मी, रहे वेदरत जो सदा पूर्णधर्मी ॥ १५ ॥
बृहस्पतिको दोष मिथ्या लगाया, यह क्या पोपजी के हृदय में समाया
किया ब्याह गंधर्व ऋषिवर पराशर, लगावें उन्हें दोष व्यभचारपानर

हुए वेदविपरीत जो कर्मचारी, सुनो सज्जनो सत् असत् लो विचारी
प्रगट मूर्ति पूजन हुआ धर्म जबसे, हुआ ध्यान जगदीशका नष्ट तबसे
कोई गण्डकी की शिलाको पुजावें, उसे विष्णु कह शीस दुर्जन निवावें ॥ २० ॥
कोई नर्वदा नदके पत्थर मंगावें, उन्हें जान शिव फूल अक्षत चढ़ावें
कहें रामने लिंग शिवका पधारा, नहीं वाल्मीकी जिन्होंने विचारा
जो श्रीरामको मूर्ति पूजक बतावें, लिखा वाल्मीकी में हमको दिखावें
कोई नाम देवी पे बकरे कटावें, महापाप के कर्मको पुण्य गावें
चमत्कार ज्वालाकी मिथ्या कहानी, बहुत शैल हैं जिन में है आगपानी ॥ २५ ॥
दिशा पूर्व में एक मूर्ति बतावें, जगन्नाथ के नामसे जो पुजावें
वहां जाके सब वर्ण एक साथखावें, चमत्कार मिथ्या वहां के बतावें
जिसे काशी में विश्व ईश्वर पुकारा, वो भय म्लेच्छ से कूप में जापधारा
ये यह बात भी पोपजी की बनाई, कहां शक्ति चलनेकी पाषाण पाई
कोई प्रेम बद्री में उत्तर कोजावें, कठिन मार्ग के दुःख बहु भांतिपावें ॥ ३० ॥
फिरें कोई कांवरको कांधे पै धारे, ये हैं पोपमायाही के खेलसारे
लगे पूजने हनुअश्वत्थ कोई, विना शास्त्र देखे कहां ज्ञान होई
कहें रामकृष्णादिको सृष्टि कर्ता, बतावें उन्हें मूर्ख संसार भर्ता
अजन्मा है जो सर्वथा निर्विकारी, उसे जन्म वाला बतावे अनारी
दुगा शूल और योगिनी को मनावें, कुपथ में पड़े सो नवग्रह पुजावें ॥ ३५ ॥
करें व्रत रवि सोम मंगल का कोई, नहीं वेदमत जो चले मूर्ख सोई
रहें कोई एकादशी कुछ न खावें, दिवस दूसरे पोप जीको जिमावें
कोई चौथ चौदश अमावसको धावें, पड़े पोपमाया में धनको लुटावें
कोई काशी मरने ही से मुक्ति जानें, येही फल कोई स्नान गंगा से मानें
करें श्राद्ध मुर्दों का अज्ञान छाया, मरोंको भला किसने भोजन जिमाया ॥ ४० ॥
गया करके पित्रों को मुक्ति बताई, कमाने की विद्या भली यह बनाई
बने द्विज सभी वेदमत के विरोधी, हुए हीन विद्या रही कुछ न सोधी
कोई वैष्णव और कोई शैवमानी, अहं ब्रह्म कहकर बने कोई ज्ञानी
कोई गणपतिका उपासक कहावे, कोई देवीको इष्ट अपना बतावे
पढ़े वेद अति भिन्न मत जो अपारा, इन्होंने किया लोप सद्धर्म सारा ॥ ४५ ॥
नया बुद्ध और जैनने मतचलाया, नहीं सृष्टि कर्ता कोई यह बताया
कबीर और दादू की ले राह कोई, कहै कोई नानक कहा धर्मसोई

कोई द्वार मुक्तिका ईसाको गावे, मुहम्मद पै कोई भरोसा बतावे
हुए वाममार्गी महानीच कर्मी, न होगा अधिक उन से कोई अधर्मी
नहीं धर्म उनका कथन योग्य कोई, कहां वाम में सत्यकी गंध कोई ॥ ५० ॥
कहें पोप है विप्र वेदाधिकारी, पढ़े क्षत्रियादि तो हो पाप भारी
वृथा जन्म से वर्णका भेद जानें, लिखा शास्त्र में कर्म से सो न मानें
कहे उपनिषत् कोई सौ कोई बावन, लिखीं उनमें गाथा बहुत ही अपावन
किया विप्रका पाक सब वर्ण खावें, परस्पर स्ववर्णों में झगड़ा मचावें
जो है शूद्रका कर्म सेवा सनातन, उसे पोपजीने लिया जान निज धन ॥ ५५ ॥
नया जन्मपत्री का जाल एक बिछाया, बहुतसा इसी बात में धन कमाया
किसीको शनि राहु खोटा बतावें, कहीं दान बुध शुक्रहीका करावें
विवाह हेतु जब जन्मपत्री मिलावें, तो फिर रांड करके सुता क्यों बिठावें
सहस्रों मनुज जन्म यकसाथ पावें । दशाग्रह उन्हें साथही साथ आवें
भला फिर ना क्यों फलउन्हें एक होवें, कोई नृप बने रंकबन कोई रोवें ॥ ६० ॥
जो दो भ्रात काल एक में जन्म लेवें, नहीं दुःख सुख वह सदा एकसे वें
रही लग्नकी बात फिर कौन सच्ची, हुई जन्मपत्री सभी भांति कच्ची
बढ़े हा बहुत धर्म हर्ता कुकर्मी, डरें ना नरक से टके के हैं मर्मी
जगत् में कठिन जाल ऐसा बिछाया, जो फंदे में आया निकलने न पाया
बनावें कोई राम और कृष्ण लीला, बतावें उसे धर्मका मूल पीला ॥ ६५ ॥
मनु में लिखा वेष कर्ता है पापी, विरुद्ध उसके किसने कथा यह अलापी
लिखी शिष्ट पुरुषोंने जिसकी बुराई, कहां कर्म ऐसा हो धर्मानुयायी
हुए भूत प्रेतों के विश्वास कैसे, डरें रज्जुको जानकर सर्प जैसे
लगे स्याने दीवानों को घर बुलाने, लगे शीस निज हर किसीको झुकाने
हुए आर्य हा शेख़ सद्दोके यात्री, छुपा धर्मका भानु छाई कुरात्री ॥ ७० ॥
लगे पूजने पीरगूगा अनारी, हुई धर्मकी नष्ट मर्यादकारी
असत् धर्म बहुभांति वृद्धि निहारी, हुआ सज्जनों के हृदय दुःख भारी
लखी धर्मकी जब सभी भांति हानी, किया धर्म रक्षाको उन्नत ध्यानी
सुसद्धर्म भानु यथावत् प्रकाशे, दयानंद स्वामी सकल दुःख नाशे
यथा योग्यकी सत् असत्की परीक्षा, हुई जिनकी पाताल पर्यन्त दीक्षा ॥ ७५ ॥
किया काशी आदि में शास्त्रार्थ भारी, हुए शांत सठ पोप दुर्जन पाखंडी
दया और आनंद है मूल जिनके, करो धर्म जिज्ञासु पद ग्रहण जिनके

गुरु मेरे हैं इन्द्रमुनि धर्मचारी, मलिन बुद्धि मेरी जिन्होंने संवारी
वो निजनाम से ख्यात हैं धर्मपालक, हुए मत मुहम्मद के जो पूर्णपालक
जगन्नाथ के अंत में दास जानो, मेरे नामका येही विन्यास मानो ॥ ८० ।
करूं सत्य उपदेश शिष्टानुकूला, सुनो सज्जनो है येही धर्ममूला
जो हैं वेद चारों परब्रह्म वाणी, वही मुख्य मंतव्य हैं सर्वप्राणी
जो अनुकूल इनके है वह ग्राह्य सब है, विरुद्ध इनके शिष्टोंको स्वीकार कब है
जो ब्रह्मादिने वेद व्याख्या बनाई, सो ऐतरेय आदि हैं वेदानुजाई
जो हैं वेदके अंगषट् सत्य सोहैं, पढ़ें जो उन्हें सो महा प्रज्ञ होहैं ॥ ८५ ।
जो हैं उपनिषत् ईश केनादि दशदो, सोई आर्य्य लोगों में स्वीकार सबको
लिखे जैमिनि आदिने शास्त्र षट् जो, समस्त आर्य्योंकोही मंतव्य हैं सो
वही धर्मजानो जिसे वेद गावे, महा भ्रष्ट है जो श्रुति में न पावे
नहीं मूर्त्ति पूजन लिखा शास्त्र सत् में, न अवतारकी है कथा वेद मत में
लिखा सर्व व्यापक निराकार जिसको, कहो एकदेशी न साकार किसको ॥ ९० ।
हुए राम और कृष्णसो शिष्टमानो, कोई पापका कर्म उन में न जानो
वो थे दास जगदीशके पूर्ण प्यारे, किये धर्म रक्षाही के कार्य सारे
परशुराम जी भी हुए शूर भारी, करी दुष्ट राजों से भू शून्य सारी
कथा बुद्धने वेद विपरीत गाई, कहैं शिष्ट उसे कौनसा शिष्टआई
थे ब्रह्मादि सब देवता धर्म शाली, पुराणों में निंदा लिखीं उनकी जाली ॥ ९५ ।
कहो आर्य अपने को जो वेदगाया, वृथा नाम हिन्दू कहांका चलाया
करो अग्निहोत्र और संध्या द्विकाला, रहो वेदरत जो हृदय हो उजाला
अतिथिकाल भोजन में जो कोई पाओ, उसे सत्य श्रद्धा से भोजन जिमाओ
बनो एक ईश्वर के तुम दास भाई, सके ना कोई और कर कुछ सहाई
लिखे यज्ञ और दान तप हेतु जिसके, बनो तुम उपासक भला क्यों न विसके ॥ १००
करे अन्य देवोंकी जो सेवकाई, नहीं उसकी परलोक में कुछ भलाई
कहैं देव विद्वानको शास्त्र मांहीं, मरण जन्मसे ते रहैं शून्य नांहीं
बिना ज्ञान ईश्वर के मुक्ति न होवे, कोई जन्म शत क्यों न काशी में खोवे
लिखी जल से केवल शरीरोंकी शुद्धि, कहैं भिन्न फल जो वह हैं मंद बुद्धि
करो जीते माता पितादिक की सेवा, ये है लोक परलोक में सुखकी देवा ॥ १०५ ।
नहीं कोई परलोक में हो सहाई, पिता पुत्र माता सकें क्या छुड़ाई
करे कर्म जो सोई सुख दुःख पावे, नहीं और का और के हाथ आवे

लिखा वेद में वेद सबके लिये है, दशा वर्ण की कर्मही के किये है
मनु और गीता में भी यह कहा है, वही शूद्र है वेद जो ना पढ़ा है
लखो कर्महीकी महा प्रभुताई, बड़ा नीच हो नीचको दे बड़ाई ॥ ११० ॥
करे उच्चके कर्म जो उच्च सोहै, करे नीचके कर्म सो नीच हो है
हैं जावालि और ऋषिमातंग जैसे, हुए नीच कुल में भये शिष्ट कैसे
ऋषभ देव नृपके भये पुत्र शत जो, हुए तिन में एकाशी द्विजवर महत सो
श्रीवैष्णवों में भी शठ कोप नामी, हुए कर्मकर नीच से ऊर्द्धगामी
निवें वैष्णव योगी वाहन को माथा, कहें जन्मकी उसके अति नीचगाथा ॥ ११५ ॥
येही शंकराचार्य भी सत्य जानें, दशा वर्णकी कर्म ही से बखानें
गिरे कर्म ही से नरक में कोई है, लहे मुक्तिको कर्मका फल सोई है
गले बांध कंठी जो चेले बनावें, कहो धर्म क्या शिष्यको वह सिखावें
येही मूल उपदेश गुरुजी सुनावें, हमें द्रव्य दो स्वर्ग तुमको पठावें
न संध्या उपासन कभी आप करते, सदा पूरी बूराही के ग्रांस भरते ॥ १२० ॥
किसी शास्त्र में कंठी बंधन नहीं है, दिखावे हमें जो कहे ये कहीं है
करो यज्ञउपवीत जो द्विज कहाओ, नहीं नाम निज शूद्र कुल में लिखाओ
जो विद्वान हों और सद्धर्म चारी, उन्हे दान दो हो सदा जय तुम्हारी
नहीं मूर्ख और दुष्ट दानाधिकारी, नहीं चौर को है अभय न्यायकारी
मिले मूर्खको धन असत् वृद्धि पावे, यथा सर्पको दुग्ध विषही बढ़ावे ॥ १२५ ॥
नहीं मांस और मद्य खाना कदापि, किसी जीवको ना सताना कदापि
तुम्हें कर्म जो दुःख सुखका हो दाता, वही अन्य जीवों में लो जान भ्राता
जो परमांस से मांस अपना बढ़ावें, वह परजन्म में दुःख अत्यंत पावें
न हिंसा बिना मांस हो प्राप्त भाई, नहीं प्राणि वध से सके स्वर्ग जाई
समझ धर्मको मांस कोई न खाओ, न मल मूत्र के हेतु जिह्वा चलाओ ॥ १३० ॥
नहीं मद्यके पान में लाभ कोई, जो है हानि इसमें सुनो मित्र सोई
मिटा बुद्धिको फल ये अपना दिखावे, नहीं कर्म कर्तव्य जो सो करावे
विषय वासना ही में निश दिन लगावे, ये जगदीशका ध्यान मन से हटावे
करावे ये साधन नरक ही के सारे, नहीं दोषभी इसके कथनीय प्यारे
महा विष कहें तो कहें बस इसीको, नहीं मद्य पीना उचित है किसीको ॥ १३५ ॥
न हास्यार्थ भी द्यूतके पास जाओ, समाहृय इसी भांति मन में न लाओ
सदा सत्यके व्रत में आरूढ़ रहना, कभी वाक्में वाक्य मिथ्या न कहना

जो दृढ़ चित्त से सत्य व्रत नित्य धारें, वही लोक परलोक अपना संवारें
जो काम और क्रोध से दूर भाई, बनो लोभ और मोह के मत सहाई
ये चारों बड़े बंधके हेतु जानो, महा शत्रु हैं मित्र इनको न मानो ॥ १४०॥
किसी से कभी द्वेष बुद्धि न कीजे, किसी के हृदयको न संताप दीजे
पर ऐश्वर्यको देखकर दुख न पाओ, परस्त्रीओ परधनमें मन मत चलाओ
दशहरा दिवालीओ होलीको छोड़ो, जोहैं कर्म मिथ्या उन्हें मनसे तोड़ो
तिलक छापमें है नहीं कुछ भलाई, यह मत वादियोंकी है युक्ति चलाई
न रुद्राक्ष तुलसी के माहात्म्य सत हैं, कहें वेद श्रुति रिक्त सो धूर्त हत हैं ॥१४५॥
कहें जीव उत्पत्ति सो झूठ जानो, प्रकृति ईश और जीवको नित्यमानो
अनादि हैं सब जीव और कर्म उनके, हैं दुख: औरसुखफलसभी पापपुनके
कहें जो कोई गाय भादों में ब्यावे, उसे शीघ्र ही पोपके घर पठावे
हुई जो बुरी गाय भादोंको ब्याई, करे क्यों नहीं पोप के घर बुराई
जो ब्यावे भला माघ में भैंस कोई, कहो पोपजी उससे क्या हानि होई ॥१५०॥
जो सावन में घोड़ी कोई हो प्रसूती, बताओ उसे स्वामीको क्यों अछूती
अजो पोप जी जालक्यार बिछाये, कहो ब्याह तुलसी के कैसे रचाये
कहीं लक्षवत्ती उद्यापन कराया, कभी भार्या अपनी कोभी बताया
विवाह कूप और बागके भी कराये, नहीं ऐसी बातों सेभी तुम लजाये
विवाह अष्ट वर्षोंने सब खोज खोया, जो हैं सुख जगतके सभीको डबोया ॥ १५५॥
भला कोईभी दिन बने ब्रम्हचारी, दिया आदि आश्रमही को हा बिगारी
कहां काल अध्यनका कौन माना, गृहस्थी बना पुत्र से बैर ठाना
किया कालअध्यनका नष्ट सारा, गृहस्थी बना सो करे क्या विचारा
विग्रह ग्रस्त हो बालही जो अनारी, महा दु:ख भोगे निज आयु वो सारी
जरा वाक्य श्रुतका तो कान कीजे, लिखा जो ऋषिने उसे मान लीजे ॥ १६०॥
चतुर्विंशति आयुगत ब्रह्मचारी, वरे षोडश आयुकी हो जो कुमारी
कहो गाय वैतरणि के पार तारे, मृतक हेतु जो विप्रको दान सारे
भला गाय तो आपने घर बंधाई, वहां तारने कौन नवका पठाई
है दूकान वैतरणी पे क्या तुम्हारी, लिखी कोई पत्री जो देंगे उतारी
जो रथ चक्र से सिंधु प्रकटे बतावें, असम्भव कहानी सेभी ना लजावें ॥ १६५॥
लिखी जो सगरके सुतोंकी कहानी, प्रगट पोप जीकी हुई बुद्धिमानी
कथा नृगके गोदानकी क्या बनाई, हंसी बाल वृद्धोंको जिसने दिलाई

हुआ शीस दशका कहो जो मुरारी, रही शेष बुद्धि कहां फिर तुम्हारी
लिखे कुंभकरणादिके अंग जैसे, कहां सत्य होवें कहो वाक्य ऐसे
जो बाहु सहस्र एक नृपकी बखानी, तो फिर चार और आठकी क्या कहानी ॥१७०॥
कहें ग्रहण में सूर्य शशि दुःखपावें, उन्हें राहु और केतु बहुता सतावें
पढो क्यों न भूगोल विद्याको प्यारे, है भूलोकवत लोक शशि सूर्यतारे
उठा पृथ्वीको दैत्य किस राहभागा, सभी भांति से बुद्धि संबंधत्यागा
कहो वेद असुरने कहां से चुराया, सहस्रों ऋषि के हृदय में समाया
सुता रीछसे कृष्णका व्याहगावें, उरग पुत्री अर्जुनकी व्याही बतावें ॥१७५॥
मनुज और पशुके कहीं व्याहहोवें, कहें बात ऐसी बड़े मूर्ख सोहैं
हुई मत्स्यसे मत्स्य गंधा बतावें, कहानी असम्भव ये कैसी सुनावें
सुता शैल और भूसे उत्पन्नहोवें, न क्यों ऐसी बातोंपै व्युत्पन्न रोवें
कहै सृष्टिक्रम से जो विपरीत वाणी, उसे कबसुने बुद्धियुत कोई प्राणी
थंभी शेषया शृंग गोपर मही है, कही जिसने यह बात मिथ्या कही है ॥१८०॥
खड़े ईशकी शक्ति से लोकसारे, प्रकाशित उसीने किये चन्द्रतारे
वही ईशहै उसकी है सृष्टि सारी, नहीं उस बिना दूसरा दुःखहारी
कहै नाम सब उसके है शक्ति किसकी, रही छाय महिमा दशो दिक् में उसकी
कहें हैं जिसे अग्नि और ओम् वायु, करे वोही विष्णु हमें दीर्घ आयु
जिसे इन्द्र और मित्रभी वेद गावे, वही विश्व और देव सविता कहावे ॥१८५॥
कहें चन्द्रमा शुक्र आदित्य जिसको, कहें धर्म निर्भय परब्रह्म उसको
पुरुष ईश लक्ष्मी उसीको कहें हैं, सकल शिष्ट आज्ञामें उसके रहें हैं
प्रजापति और केतुभी वह कहावे, वही रुद्रहै जो खलोंको रुलावे
समझ नाम उसका अदिति और दिति है, सृजा उसने अपतेज वायु क्षिति है
उसीको कहे अर्यमा और उरुक्रम, शरण होके उसकी तजो पोप कृत भ्रम ॥१९०॥
वही शुद्ध और बुद्ध है न्यायकारी, करे वोही कूटस्थ रक्षा हमारी
वही द्वैत अद्वैत निर्गुण सगुण है, वही प्राज्ञ जो सर्व विद्या निपुण है
वही सत् है और चित् है आनंद शक्ति, रहें दास उसके सदा हम न भक्ति
उसीको कहें श्रोत्र मन प्राण वाणी, नहीं श्रोत्र जिसके नहीं पादपाणी
कहें उसको जल चित्त अज चक्षु बुद्धि, हमारे हृदयकी करो वोही शुद्धि ॥१९५॥
उसे ज्ञान विज्ञान वसु जीव कहिये, उसी देवके ध्यान में मग्न रहिये
दया न्याय भगवान अच्युत दयालु, करे कीर्तन उसका सुख जीभ तालु

मनु ध्रुव अनादि प्रिय अप्रमेय, उसी आत्माके हैं सब नाम धेय
कहैं उसको बन्धु पिता और माता, हमारा वही है सकल भांति नाता
कहै नित्य और मुक्त आकाश उसको, भलाउससिवा हमनिवें औसकिसको ॥ २००
महत एक सर्वज्ञ शिव होम अचर, वही भूत ज्ञात सर्वद्दक् काल ईश्वर
कहैं साक्षी और उसको निरञ्जन, वही पूर्ण अव्यक्त है दुःख भञ्जन
उसी सूक्ष्मका नाम है सत्य स्वच्छ, अनघ आप तैजस वरुण वीर दक्ष
जो है अन्न अन्नाद अव्यय जनार्दन, उसे पुण्य विभु तत्व कहिये सनातन
वोही ईश्वर वोही पुरुषोत्तम है, वोही सोम विश्वेश्वर सिद्ध यम है ॥ २०५
कहै उसको परमात्मा अद्वितीय, वोही सबको है सर्वदा पूजनीय
कहै नाम अष्टोत्तर शत मनोहर, हुए ऊर्द्ध गामी जिन्हें जपके सुरनर
उठो आर्य पुरुषो जपो येही नाम, परब्रह्महीको करो तुम प्रणाम
उसी ईश जगदीशको इष्ट जानो, समान उसको मित्रो किसीको न मानो
धरोध्यान उसीका जो है निर्विकारी, सुनो हो मुमुक्षु ये विनती हमारी ॥ २१०
उस अव्यक्त मे चित्त जिसने लगाया, मरण जन्मका फन्द अपना छुड़ाया
अनेको अधम जीव जिसने उवारे, वोही दुःख नाशेगा सारेहमारे
वही जीवका जीव है न्यायकर्ता, हमारा तुम्हारा सभोंका है भर्ता
समझले अभी कुछ नबिगड़ा है तेरा, मना अपने ईश्वरको जिसका है चेरा
जो दृढ़ दाम से मनको बांधोगे प्यारे, तो परमात्मा फन्दकाटेगा सारे ॥ २१५
उसी ईशके जब समीपी बनोगे, मरण जन्मके दुःखको तब हनोगे ॥ २१६
जगन्नाथ जगदीश को शिर झुकाओ, उसी पूर्ण से चित्त निशदिन लगाओ ॥ २१७

दोहा ।

सुरनर मुनिगण गौणवर भजें जिसे निष्काम ।
प्रणव वाच्य सो मम हृदय करो सदा विश्राम ॥